सिद्धार्थनगर जनपद का पुरातात्विक अन्वेषण

दुर्गेश कुमार श्रीवास्तव

सिद्धार्थनगर जनपद का
पुरातात्विक अन्वेषण

दुर्गेश कुमार श्रीवास्तव

सिद्धार्थनगर जनपद का
पुरातात्विक अन्वेषण

दुर्गेश कुमार श्रीवास्तव

2023

सिद्धार्थनगर जनपद का पुरातात्विक अन्वेषण

© लेखक

प्रथम प्रकाशित: 2023

सभी अधिकार सुरक्षित। लेखक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भी भाग को पुन: प्रस्तुत, पुनर्प्राप्ति प्रणाली में संग्रहीत, या किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग, या अन्यथा प्रेषित नहीं किया जा सकता है।

प्रस्तावना

जनपद सिद्धार्थनगर का वर्तमान क्षेत्र प्राचीन काल में कोसल क्षेत्र का एक हिस्सा था। छठी शताब्दी ईसा पूर्व में कोसल एक महत्वपूर्ण *महाजनपद* था । लेकिन एक समय में सिद्धार्थनगर जनपद के इस क्षेत्र पर कपिलवस्तु के शाक्यों का नियंत्रण था।

राप्ती नदी घाटी का यह जलोढ़ मैदान कुछ काम आद्र है और इस क्षेत्र की मिट्टी कृषि कार्य के लिए अनुकूल है। इस क्षेत्र में अतीत में घने वन, वनस्पतियां और विभिन्न प्रकार के जीव-जन्तु शामिल थे।

बुद्ध काल के अवशेषों और अन्य पुरातात्विक अवशेषों के संदर्भ में इस क्षेत्र में बहुत संभावनाएं हैं, लेकिन प्राचीन आवासीय साक्ष्य का पता लगाने के लिए पूरे क्षेत्र का विस्तृत रूप से अन्वेषण नहीं किया गया था। इस जनपद के आसपास के क्षेत्र में कुछ ज्ञात स्थल बहुत महत्वपूर्ण हैं, उदाहरण के लिए पूर्व में नरहन, और दक्षिण में सोहगौरा। लहुरादेवा, जिसे वर्तमान से 7000 वर्ष से 5000 वर्ष पूर्व होने का दावा किया जाता है, वह भी इस क्षेत्र के बहुत करीब है। इस

अध्ययन का क्षेत्र हिमालय के फोरलैंड बेसिन में फैला हुआ है और उत्तर में शिवालिक पहाड़ियों से घिरा हुआ है, जहां से प्राइमेट्स और प्रागैतिहासिक कारखाने स्थलों (factory sites) के जीवाश्मों की सूचना मिली है। इस अन्वेषण कार्य की मुख्य समस्या आद्य-ऐतिहासिक अवधि से पूर्व-उत्तर कृष्ण मार्जित मृदभांड काल के दौरान सांस्कृतिक निरंतरता के लुप्त होने का पता लगाना था।

उपर्युक्त समस्याओं के समाधान के लिए, फील्ड सीजन 2013-14 और 2014-15 के दौरान अन्वेषण कार्य आयोजित किया गया था। अन्वेषण के दौरान पुरातात्विक महत्व के कुल 45 स्थल प्रकाश में आए थे।

मैं भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग का आभारी हूं जिसने मुझे अध्ययन के तहत क्षेत्र में अन्वेषण कार्य करने के लिए अनुमति दी। मैं लखनऊ विश्वविद्यालय का भी आभारी हूं कि उन्होंने मुझे अध्ययन क्षेत्र में अन्वेषण कार्य के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की। मैं इस कार्य के दौरान विभिन्न प्रकार की मदद के लिए अपनी पत्नी निकिता को भी धन्यवाद देना चाहता हूं। डॉ. संदीप कुमार चौधरी ने क्षेत्रीय कार्य में सहायता की और इस अन्वेषण कार्य में सम्मिलित मानचित्र और

मृदभांडों के चित्र तैयार किए, जिसके लिए मैं उनका अत्यंत आभारी हूँ।

मैं अपने विभाग के पूर्व प्रोफेसर एस एन कपूर, प्रोफेसर प्रशांत श्रीवास्तव, प्रोफेसर पीयूष भार्गव का हृदय से आभारी हूं जो हमेशा सलाह और प्रोत्साहन के शब्दों के साथ उपलब्ध रहते हैं।

11.07.2023 दुर्गेश कुमार श्रीवास्तव

सारणी

1. परिचय
2. जनपद का संक्षिप्त इतिहास
3. जनपद में पूर्व में किए गए पुरातात्विक कार्य
4. जनपद में पुरातात्विक अन्वेषण
5. अन्वेषण में प्राप्त पुरस्थलों का विवरण
6. निष्कर्ष

चित्रों की सूची

1. सिद्धार्थनगर जनपद का मानचित्र
2. क्षेत्र का भू-आकृतिक मानचित्र
3. अन्वेषण में प्राप्त पुरास्थलों का मानचित्र
4. मृदभांडों का चित्र (बौड़िहार)
5. मृदभांडों का चित्र (बौड़िहार)
6. मृदभांडों का चित्र (बौड़िहार और दनियापार)
7. मृदभांडों का चित्र (दनियापार)
8. मृदभांडों का चित्र (दसिया)
9. मृदभांडों का चित्र (जोगिया-I)
10. मृदभांडों का चित्र (खजुरिया शरकी)
11. मृदभांडों का चित्र (पेडारी)
12. मृदभांडों का चित्र (पेडारी)

प्लेटों की सूची

1. प्लेट-I : बौड़िहार, चंद्रगद्दी, भरथना और दनियापार से प्राप्त मृदभांड और पुरावशेष
2. प्लेट-**II** : जोगिया, केशवारे और लटेरा से प्राप्त पुरावशेष
3. प्लेट-**III** : निहठा, टीरी, सेखुयी और उसका से प्राप्त पुरावशेष
4. प्लेट-**IV** : बहादुरपुर से प्राप्त संरचनायें
5. प्लेट-V : बूढ़ी खास -2 का टीला और मृणमूर्तियाँ
6. प्लेट-VI : गनवरिया से प्राप्त संरचनायें
7. प्लेट-VII : गनवरिया से प्राप्त संरचनायें
8. प्लेट-VIII : पिपरहवा का स्तूप
9. प्लेट-IX : पिपरहवा का स्तूप
10. प्लेट-**X** : पिपरहवा का पूर्वी विहार
11. प्लेट-**XI** : पिपरहवा का ईंटों से निर्मित हाल और उत्तरी विहार
12. प्लेट-**XII** : पिपरहवा का दक्षिणी विहार, पश्चिमी विहार
13. प्लेट-**XIII** : पिपरी का ईंटों से निर्मित मंदिर
14. प्लेट-**XIV** : सालारगढ़ से प्राप्त संरचनायें

अध्याय -1
परिचय

जनपद सिद्धार्थनगर 27^0 से $27^028'$ N और $82^030'$ से $83^010'$ भू-निर्देशांक के बीच स्थित है। इस जिले की उत्तरी सीमा हिमालय (नेपाल) की शिवालिक रेंज से आच्छादित है और इसकी पूर्व सीमा जनपद महाराजगंज द्वारा घिरा हुआ है। जनपद बस्ती इसकी दक्षिणी सीमा को निर्धारित करता है, जनपद संत कबीर नगर दक्षिण-पूर्वी दिशा में है और जनपद बलरामपुर इस जिले के पश्चिम में स्थित है। इसकी पूर्व से पश्चिम अधिकतम लंबाई लगभग 50 किमी और उत्तर से दक्षिण 57.9 किमी है। जनपद सिद्धार्थनगर का कुल क्षेत्रफल 2895 किमी है। राप्ती, बूढ़ी राप्ती और आमी प्रमुख नदियां हैं जो इस अध्ययन क्षेत्र में प्रवाहित होती हैं।

प्रशासनिक इकाइयाँ - जिले को पांच तहसीलों में विभाजित किया गया है अर्थात बांसी, डुमरियागंज, इटवा, नौगढ़ और शोहरतगढ़। जिले में तेरह ब्लॉक यानी बांसी, बढ़नी बाजार, भनवापुर, बर्डपुर, डुमरियागंज, इटवा, जोगिया खास, खेसरहा,

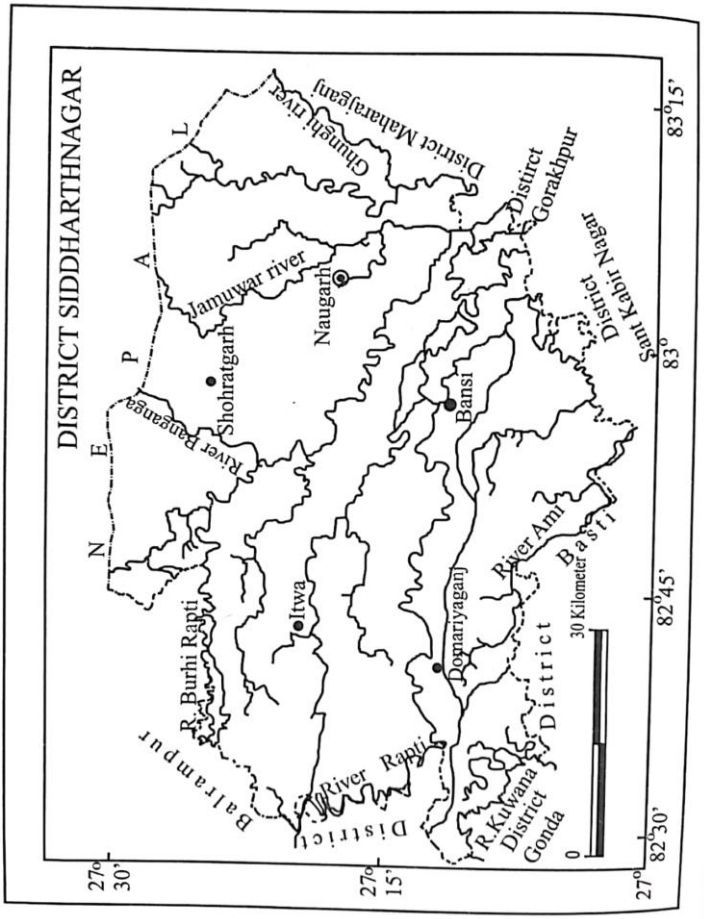

DISTRICT SIDDHARTHNAGAR
N E P A L
District Maharajganj
Ghunghi river
District Gorakhpur
Jamuwar river
Naugarh
Shohratgarh
River Banganga
District Sant Kabir Nagar
Bansi
R. Burhi Rapti
Itwa
Domariyaganj
River Ami
Basti
District
Balrampur
District
River Rapti
R. Kuwana
District Gonda
30 Kilometer
0
27° 30'
27° 15'
27°
82°30'
82°45'
83°
83°15'

Figure-1

खुनियांव, मिठवल, नौगढ़, शोहरतगढ़ और उस्का बाजार हैं। इन इकाइयों के अलावा, इस जिले में 2505 गांव हैं।[1].

भू-आकृति विज्ञान - यह क्षेत्र उत्तर में पहाड़ी जलधारों द्वारा नीचे लाए गए पत्थरों और मलबे के अपवाद के साथ विभिन्न युगों और प्रकृति के जलोढ़ को प्रदर्शित करता है। इस क्षेत्र में सतह पर रेत, गाद और मिट्टी और उप-सतह में बजरी, रेत, गाद और मिट्टी होती है। यह भूजल-पोषित और वर्षा आधारित नदियों द्वारा सींचा जाता है। इस क्षेत्र का परिदृश्य नदी के उतार-चढ़ाव वाले निर्वहन के कारण अलग-अलग ऊर्जा के फ्लुवियल वातावरण के तहत विकसित हुआ है, जिसे जलवायु द्वारा नियंत्रित किया जाता है। इस क्षेत्र को मुख्यतः दो भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है - चैनल क्षेत्र और अंतर-चैनल क्षेत्र (*दोआब* या इंटरफ्लुव)। चैनल क्षेत्र में उच्च निर्वहन वाली नदियों द्वारा जमा रेत और गाद होती है और इसलिए उच्च ऊर्जा होती है, जबकि गाद और मिट्टी कम ऊर्जा वाले जलीय वातावरण द्वारा जमा किए गए इंटरफ्लुव क्षेत्रों में प्रमुख संरचना होती है। इसलिए हम कह सकते हैं कि तलछट जलवायु के प्रत्यक्ष नियंत्रण के तहत उच्च और निम्न ऊर्जा वातावरण द्वारा जमा किए गए थे। नदियाँ उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व की ओर बहती हैं। उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व तक

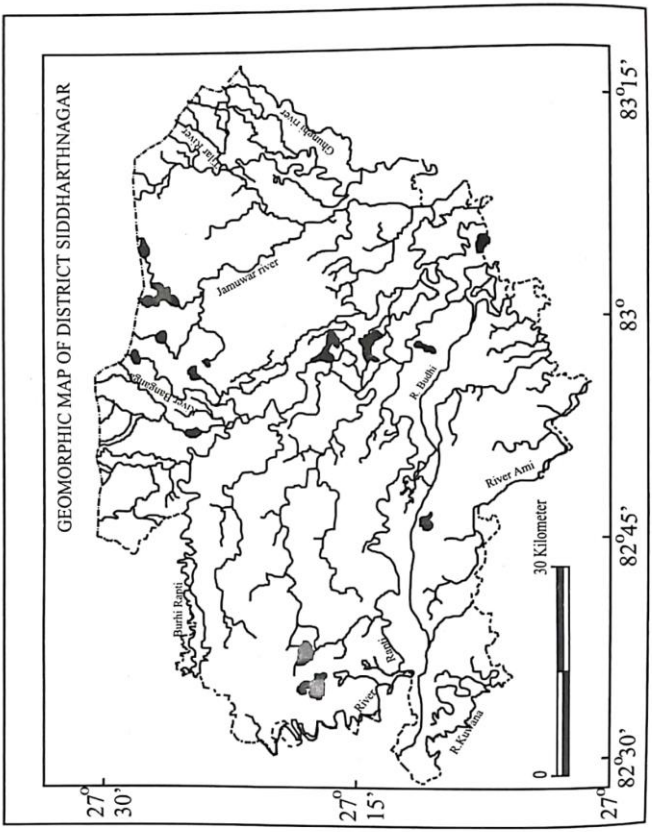

GEOMORPHIC MAP OF DISTRICT SIDDHARTHNAGAR
Jamuwar river
Burhi Rapti
River Banganga
R. Budhi
River Ami
River Rapti
R.Kuwana
30 Kilometer
0
27° 30'
27° 15'
27°
82°30'
82°45'
83°
83°15'

Figure-2

के क्षेत्र का औसत ढलान लगभग 0.9 मीटर है। समुद्र तल से उत्तर-पश्चिम में ऊंचाई 100 मीटर और दक्षिण-पूर्व में 85 मीटर है।[2&3].

क्षेत्रीय रूप से क्षेत्र को पांच भौगोलिक इकाइयों में विभाजित किया जा सकता है।[4]:

1. मेगा फैन की सतह
2. पीडमोंट फैन की सतह।
3. क्षेत्रीय अपलैंड छत की सतह ($टी_2$ सतह)
4. नदी घाटी छत की सतह ($टी_1$ सतह)
5. सक्रिय बाढ़ मैदान ($टी_0$ सतह)

मेगा फैन की सतह गंगा के मैदान के सबसे उत्तरी भाग में स्थित है। यह हिमालय की निचली पहाड़ियों से शुरू होता है और घाघरा नदी तक फैला हुआ है। पीडमोंट फैन शिवालिक पहाड़ियों के दक्षिण में विकसित कॉलेसींग फैन सतह की 40-45 किमी चौड़ी बेल्ट हैं। फैन सतह को कई अल्पकालिक और छिछलेचैनलों की उपस्थिति से बताया जा सकता है। क्षेत्रीय अपलैंड टैरेस की सतह ($टी_2$), पीडमोंट फैन की सतह से आच्छादित है और इसलिए $टी_2$ और $टी_1$ निर्माण बाद में होता है। सबसे पुरानी भू-आकृतिक सतह $टी_2$ घाघरा और राप्ती नदियों के बीच विकसित हुआ है। यह सतह नदी घाटी

की टैरेस की सतह ($टी_1$) से लगभग 10-12 किमी ऊपर है। $टी_1$ सतह सक्रिय बाढ़ मैदान से लगभग 4-5 मीटर ऊपर स्थित है। इस सतह को कई परित्यक्त चैनलों, घुमावदार निशान की विशेषता है जो सक्रिय धाराओं की पूर्व स्थिति का प्रतिनिधित्व करते हैं। T_0 सतह वह सतह है जिसके साथ वर्तमान नदियाँ बह रही हैं। इसमें संकीर्ण बाढ़ मैदान भी हो सकता है।

इसके साथ ही भू-आकृति विज्ञान, स्थलाकृति, नदी प्रणाली, भूविज्ञान, वनस्पति और जीव-जन्तु किसी भी अधिवास के लिए अन्य महत्वपूर्ण कारक हैं। इन कारकों के आधार पर, क्षेत्र के निवासी आजीविका के लिए अपनी आवश्यकता को पूरा करते हैं।[5].

स्थलाकृति - सिद्धार्थनगर जिले को स्थलाकृतिक रूप से कई विविध क्षेत्रों में विभाजित किया गया है यानी राप्ती घाटी, उत्तरी कछार , पश्चिमी तराई, और पूर्वी तराई।

राप्ती घाटी में मिट्टी असाधारण चरित्र की है और इसे भट रूप में जाना जाता है। भट शब्द का प्रयोग इस क्षेत्र में नदी द्वारा जमा गाद के लिए स्थानीय रूप से प्रयोग किया जाता है। यह जलोढ़ अत्यधिक उर्वरता का है और गन्ना, खसखस, गेहूं, भांग जैसी फसलों की बहुत विविधता के लिए उपयुक्त

है। यह क्षेत्र राप्ती के किनारे एक पतली पट्टी है लेकिन यह बांसी के पूर्व में चौड़ा है। बांसी के पश्चिम में, किसके बीच *भट* और ऊपर सतह के मध्य की पट्टी को रेहार कहा जाता है। बांसी के दक्षिण और दक्षिण-पूर्व में, यह क्षेत्र धान की फसल के लिए उपयुक्त है।

राप्ती के उत्तर में, भूमि का एक खंड है जो धान की फसल के लिए उपयुक्त है। इस क्षेत्र को स्थानीय रूप से कछार नाम से जाना जाता है। कछार के निचले क्षेत्र द्वारा यह क्षेत्र दो भागों में विभाजित किया गया है, जो बाणगंगा और बूढ़ी राप्ती नदियों के मार्ग का अनुसरण करता है। लेकिन यह क्षेत्र उतना उपजाऊ नहीं है जितना कि *भट* क्षेत्र। हालांकि, यह क्षेत्र रबी के फसल के पैदावार के लिए अनुकूल है।

बांसी के पश्चिम में, डुमरियागंज में, एक अलग मिट्टी का जमाव पाया जाता है, जिसे **पश्चिमी तराई** कहा जाता है। इस क्षेत्र का एक निचला हिस्सा रेहार कहलाता है। यह क्षेत्र रबी और खरीफ दोनों फसलों के लिए अच्छा है। । जिले के अन्य हिस्सों की तरह यह हिस्सा भी बाढ़ प्रभावित है। लेकिन यह बाढ़ की घटना हर साल देखने को नहीं मिलती।

निचले कछार के पूर्व में स्थित क्षेत्र को इस जिले का **पूर्वी तराई** कहा जाता है। यहाँ की मिट्टी धान की फसल के लिए उपयुक्त है लेकिन रबी फसलें अधिक बड़े पैमाने पर उगाई जाती हैं। दक्षिणी भाग में, एक उपजाऊ दोमट मिट्टी की उचित मात्रा प्राप्त होती है।

कुल मिलाकर, जनपद एक बड़ा भाग उपजाऊ मैदान है, जो घनी आबादी वाला है और वहाँ अच्छी तरह से खेती की जाती है।

नदी प्रणाली-जिले में एक प्रमुख नदी है यानी राप्ती नदी। इसके अलावा, बूढ़ी राप्ती, आमी, बाणगंगा, बूधी, परासी, सीकरी और कुन्हरा अन्य नदियाँ हैं, जो इस जिले से होकर प्रवाहित होती हैं।

राप्ती नदी बहराइच जिले के उत्तर में नेपाल में शिवालिक रेंज की निचली पहाड़ियों से निकलती है। 130 किमी की दूरी तय करने के बाद, यह सिद्धार्थनगर जिले में प्रवेश करती है। जिले में इसकी लंबाई लगभग 134 किमी है, लेकिन एक सीधी रेखा में दूरी लगभग 77 किमी है। बरसात के मौसम में इस नदी द्वारा भारी मात्रा में पानी लाया जाता है, जो बाढ़ के माध्यम से आपदा पैदा करता है। बूढ़ी राप्ती और आमी, इसकी

सहायक नदियां हैं। राप्ती नदी का पौराणिक नाम अचिरावती है।

आमी यह एक छोटी नदी है जो डुमरियागंज के पूर्व से निकलती है। इसमें रेरुवा नाला और राप्ती का एक और पुराना प्रवाह यानी बरार भी शामिल हो गया है। इन चैनलों के शामिल होने के बाद, आमी का प्रवाह व्यापक हो जाता है। गोरखपुर जिले में कुछ किलोमीटर की दूरी तय करने के बाद, यह राप्ती नदी में मिल जाती है।

बूढ़ी राप्ती यह नेपाल की निचली पहाड़ियों में पहाड़ी धार के रूप में निकलती है। यह जनपद बलरामपुर और सिद्धार्थनगर की सीमाओं पर प्रवेश करती है। यह बांसी के पूर्व में 12 किमी की दूरी पर राप्ती नदी में मिलती है। बारिश के मौसम में इसके द्वारा बड़ी मात्रा में पानी भी लाया जाता है।

परासी बांसी के पश्चिम में प्रवाहित होती है। कुछ किलोमीटर के बाद, यह राप्ती में शामिल हो जाती है।

सीकरी बूधी के पास बांसी के पश्चिम में उत्पन्न होती है और यह राप्ती नदी में मिल जाती है।

बूधी नदी बांसी के पश्चिम से निकलती है और बांसी के दक्षिण से गुजरते हुए यह आमी नदी में मिल जाती है।

इन नदियों और चैनलों के अलावा, कुछ पहाड़ी धाराएं भी हैं जो नेपाल की तराई या शिवालिक रेंज की निचली पहाड़ियों से निकलती हैं। ये निम्नानुसार हैं-

आरा नेपाल की तराई में निकलती है और बलरामपुर और सिद्धार्थनगर जिलों के बीच सीमा बनाती है। जिले में 12 किलोमीटर की यात्रा करने के बाद, यह बूढ़ी राप्ती में शामिल हो जाती है।

बाणगंगा नदी नेपाल की तराई में निकलती है। यह ककराही के पास बूढ़ी राप्ती में मिलती है। इस नदी का प्रवाह अक्सर इसके द्वारा लाई गई भारी बाढ़ से परिवर्तित हो जाता है।

जमुवार यह बाणगंगा के पूर्व के भाग को सिंचित करती है। यह भी नेपाल की तराई से उत्पन्न होता है। नौगढ़ से कुछ किलोमीटर के बाद यह कुन्हरा में गिरती है।

कुन्हरा यह गहरा है और नेपाली शहर बुटवल के पास डुंडवा रेंज के माध्यम से बहता है। बूढ़ी राप्ती नदी में शामिल होने से पहले अन्य छोटे चैनल कुन्हरा से जुड़ जाते हैं।

घोंघी कुन्हरा नदी की एक सहायक नदी है। यह सिद्धार्थनगर और महाराजगंज जिलों के बीच की सीमा बनाता है। यह नेपाल की तराई के ऊपर पहाड़ियों की निचली श्रेणी से निकलती है।

इन नदियों और पहाड़ी धाराओं के अतिरिक्त, सिद्धार्थनगर जिले में कई झीलें हैं। वे आमतौर पर नदी चैनलों में हुए परिवर्तन से बनते हैं, जबकि अन्य मामलों में प्राकृतिक अवसाद जिनमें सतह का पानी इकट्ठा होता है। आम तौर पर कुछ हद तक फ्लुवियल कार्यवाही के कारण होते हैं। प्रमुख झीलें पथरा ताल और चाउर ताल हैं।

भूविज्ञान-जनपद चतुर्धातुक जलोढ़ से घिरा हुआ है जिसमें विभिन्न ग्रेड, बजरी की रेत, कंकर और मिट्टी शामिल है, । इस जलोढ़ को दो समूहों में वर्गीकृत किया जा सकता है अर्थात् पुराना जलोढ़ और नया जलोढ़।

पुराना जलोढ़-यह प्राति नूतन युग के मध्य का है और आम तौर पर उच्च भूमि पर रहता है जो बारिश के मौसम में भी बाढ़ से प्रभावित नहीं होता है।

नया जलोढ़-यह कम ऊंचाई पर रहता है, मुख्य रूप से नदी चैनलों के साथ बाढ़ के मैदानों तक ही सीमित है और हाल के समय में ऊपरी प्राति नूतन युग से संबंधित है।

कंकर और रेह जिले के खनिज हैं।

वनस्पति- प्राचीन काल के दौरान, जनपद सिद्धार्थनगर साल वृक्ष और अन्य वृक्षों के जंगल से आच्छादित था। लेकिन धीरे-धीरे जंगल साफ हो गया है और जमीन का प्रयोग खेती के लिए किया जाने लगा। लेकिन फिर भी जिले में आम (*Mangitera Indica*) जैसी कुछ किस्में हैं, *महुआ* (*Madhuca longifoia*), *साल* (*Sorea robusta*), बांस (*Bambusa arundinacea*), *यूकेलिप्टस* (*Eucalyptus teritrornis*) और *शीशम* (*Dalbergia sissoo*).

पशु- जंगली जानवरों की विविधता बेहतर थी, जब जनपद वनों से आच्छादित था। पहले सिद्धार्थनगर जिले में बाघ (*Panthera tigris*), तेंदुए (*Panthera pardus*), भालू (*Melursus ursinus*), जंगली भैंस (*Bubalis bubalis*), धब्बेदार हिरण (*Axis maculatus*), और हाइना (*Hyaena hyaena*) रहते थे। लेकिन धीरे-धीरे जंगलों को साफ कर दिया

गया और जिले में जंगली जानवरों की विविधता और संख्या में कमी आई है।

वर्तमान में, **जंगली जानवर**, जो अभी भी सिद्धार्थनगर जिले में पाए जाते हैं, उनमें नीली गाय या *नीलगाय* (*Boselaphus tragocamelus*), मृग (*Antelope cervicapra*), सुअर (*Sus scrofa cristatus*), भेड़िया (*Canis lupus*), सियार (*Canis aureus*), लोमड़ी (*Vulpes bengalensis*), खरगोश (*Lepus ruficandatus*), बंदर (*Macaca mulatta*), जंगली बिल्ली (*Felisv bengalensis*) और साही (*Hystric leucura*) हैं। लेकिन इन जानवरों की संख्या में भी कमी आई है।

इसके अलावा, विभिन्न प्रकार के पक्षी और सरीसृप भी पाए जाते हैं। इन **पक्षियों** में मोर (*Pavo cristatus*), काला तीतर (*Francolinus francolinus*), भूरा तीतर (*Francolinus pondicervanus*), चाहा पक्षी (*Capella gallinago*), जल पक्षी, हंस (*Anser anser*), सामान्य टील (*Anas crecca*), लाल-शिखा वाली पोचार्ड बतख (*Netta rufina*), सफेद आंखों वाला पोचार्ड (*Aythya rufa*), और जंगली बत्तख *(Mareca penelope)* हैं।

सरीसृप वर्ग में, कोबरा जैसे सांप (*Naja naja*), करैत (*Bungarus caeruleus*), और चूहा-सांप (*Ptyas mucosus*) पाए जाते हैं। भारतीय मगरमच्छ या नाका (*Crocodilus palustris*), और घड़ियाल (*Gavialis gangeticus*) राप्ती नदी में भी पाए जाते हैं।

जिले में लगभग सभी किस्मों की मछलियां पाई जाती हैं। सामान्य प्रजातियां *कोना* (*Lebeo rohita*), *भाकुर* (*Catla catla*), *बौना* (*Cirrhina mrigala*), *पाढ़िन* (*Wallagonia attu*), *टेंगन* (*Mystus seenghala*), *बेलगगरा* (*Rita rita*), *चिलवा* (*Chela bacaila*), *महशीर* (*Barbus spp*), और *बाम* (*Rhynchobdelida spp*) हैं।

जलवायु- जिले की जलवायु विशेष रूप से उत्तरी भाग में पहाड़ियों की निकटता से प्रभावित है। औसत वार्षिक **वर्षा** जिले में लगभग 113.4 सेमी से 126.4 सेमी है। मध्य नवंबर के बाद तापमान में तेजी से गिरावट होती है। जनवरी में लगभग 23^0 c औसत दैनिक तापमान रहता है जबकि 9^0 c न्यूनतम तापमान के साथ यह क्षेत्र ठंडा रहता है। मई में 38^0c के साथ अत्यधिक गर्मी पड़ती है, जबकि इस जनपद का उत्तरी भाग 25^0 c के साथ हल्का गर्म रहता है,

लेकिन कभी-कभी अधिकतम तापमान 45^0C तक पहुंच जाता है।

दक्षिण-पश्चिम मानसून और मानसून के बाद के मौसम में 70% से ऊपर आद्रता होने के कारण **नमी** उच्च रहती है। इसके बाद आर्द्रता कम हो जाती है और गर्मियों में वातावरण बहुत शुष्क होता है।

संदर्भ:

1. www.siddharthnagar.nic.in
2. Singh, D S, A Awasthi and V Bhardwaj: *Control of Tectonics and Climate on Chhoti Gandak River Basin, East Ganga Plain, India*. *Himalayan Geology*, Vol. 30 (2) 2009, pp. 147-154.
3. Singh, D S: *Rivers of Ganga Plain*, Book/Bane. E-Journal, Earth Science, India, October 2009, pp. 1-10.
4. Singh, I B: *Geological Evolution of Ganga Plain – An Overview*. *Journal of Palaeontological Society of India*, 41, 1996, pp. 99-137.
5. Uttar Pradesh District Gazetteers of Basti, Government of Uttar Pradesh, Lucnkow, 1988.

अध्याय -2

जिले का संक्षिप्त इतिहास

जनपद सिद्धार्थनगर का वर्तमान क्षेत्र प्राचीन काल के दौरान कोसल क्षेत्र का एक हिस्सा था। राजा राम के पुत्र लव ने श्रावस्ती में उत्तरी कोसल को अपनी राजधानी बनाई, जिसने छठी शताब्दी ई पू, महाजनपद काल और बाद में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई[1]। *महाभारत* काल में, अयोध्या और श्रावस्ती कोसल के अलग-अलग राज्य थे।[2] उत्तर कोशल नाम का उल्लेख कालिदास के रघुवंश में किया गया है[3]। समुद्रगुप्त के इलाहाबाद स्तंभ शिलालेख में कोसल का उल्लेख दक्षिणापथ के एक राज्य के रूप में किया गया है[4]। प्राचीन भारत में कोसल छठी शताब्दी ई पू के सोलह महाजनपदों में एक महत्वपूर्ण महाजनपद था[5]। भागवत पुराण में इसका उल्लेख एक राज्य के रूप में किया गया है[6]।

लेकिन सिद्धार्थनगर जिले की सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि, यहां पिपरहवा और गनवरिया नाम के प्राचीन स्थल हैं

जिनकी पहचान उत्खनन के माध्यम से प्राचीन कपिलवस्तु के रूप में की जाती है।

इक्ष्वाकु का उत्तराधिकारी विकुक्षी साकेत का राजा था। उनकी पहली रानी से उनके चार बेटे और पांच बेटियां थीं। पहली रानी की मृत्यु के बाद, वह फिर से शादी करता है। दूसरी रानी ने एक बेटे को जन्म दिया और फिर उसने इच्छा व्यक्त की कि उसका बेटा राज्य का अगला प्रमुख होगा। इसलिए, पहली रानी से बच्चों को राज्य छोड़ने का आदेश दिया गया था। निष्कासन के बाद वे एक ऐसी जगह पर पहुंचे जहां *ऋषि* कपिला एक झोपड़ी में रह रहे थे। यह स्थान एक तालाब के किनारे और हिमालय पर्वतमाला की तलहटी में स्थित था। बच्चों के अनुरोध पर, *ऋषि* कपिला ने उन्हें वहां रहने की अनुमति दे दी। *ऋषि* के निधन के बाद इस स्थान का नाम कपिलवस्तु रखा गया। लेकिन शाक्य नाम के बारे में दो सिद्धांत हैं। एक के अनुसार, *ऋषि* कपिला सक (साल) वृक्ष के एक उपवन में रह रहे थे जिसे सकसंडा या सकवनसंद कहा भी गया। शाक्य नाम पेड़ों के उपवन से लिया गया था। दूसरा सिद्धांत अधिक रुचिकर है। चारों बेटों ने अपने रक्त की शुद्धता बनाए रखने के लिए चार छोटी बेटियों की शादी कर दी। सबसे बड़ी को रानी माँ के रूप में नियुक्त किया गया था। जब राजा (निर्वासित

बच्चों के पिता) को यह पता चला, तो उसने खुशी से व्यक्त किया "*शाक्य वात भो कुमार परम-शाक्य वात भो कुमार*"। इसका मतलब है कि 'आह! वास्तव में, शाक्य वास्तव में राजकुमार हैं; बहुत चतुर मानव'[7]।

कपिलवस्तु को कपिलवत्थु, कपिलानगर और कपिलपुरा के नाम से भी जाना जाता है, बौद्ध ग्रंथों में इसे एक नियमित रूप से एक शानदार शहर के रूप में उल्लेख किया गया है। इस शहर का विवरण अश्वघोष[8] के *सौंदरानंद* में दिया गया है।

छठी शताब्दी ईसा पूर्व में कपिलवस्तु, प्रसिद्ध बौद्ध स्थल, शाक्यों की राजधानी थी । कपिलवस्तु और शाक्य गणराज्य हिमालय की तलहटी और राप्ती नदी के मध्य विस्तृत था[9]। भगवान बुद्ध का जन्म यहीं हुआ था। उनके पिता का नाम शुद्धोधन था जो शाक्य समुदाय के प्रमुख थे। कपिलवस्तु के अलावा, कैटुमा, लमागामा, खोमादुसा, सिलावती, मेदलिम्पा, नागरक, उलुम्पा, देवदह और सक्कारा जैसे अन्य शहर थे।[10] छठी शताब्दी ईसा पूर्व और उसके बाद में कपिलवस्तु, तक्षशिला से वैशाली के व्यापार मार्ग पर स्थित था। इसके बीच में अहिच्छत्र, श्रावस्ती, कपिलवस्तु, कुसीनगर और सारनाथ नगर आते थे[11]।

कपिलवस्तु गणराज्य तब तक स्वतंत्र था जब तक कि कोसल महाजनपद के राजा विदूदभ और प्रसेनजित के पुत्र ने उन पर आक्रमण नहीं किया था। शाक्य गणराज्य के कुछ लोग विदुदभ के भय से कपिलवस्तु से भाग गए थे।[12].

दुर्घटनावश अचिरावती (राप्ती) नदी की बाढ़ में विदुदभ की मृत्यु हो गई। इसलिए मगध के राजा, अजातशत्रु ने कोसल पर अधिकार कर लिया। इसके बाद कोसल *महाजनपद* भी कपिलवस्तु सहित अजातशत्रु के अधीन हो गया था।

नंदों के शासनकाल के दौरान, चौथी शताब्दी ईसा पूर्व में कोसल को मगध में मिला दिया गया था, इसलिए यह काफी संभव है कि कपिलवस्तु और उसके आसपास का क्षेत्र भी मगध के अधीन हो गया होगा।[वां]

लुम्बिनी (रुमिनदेई) में मौर्य सम्राट अशोक द्वारा एक पाषाण स्तंभ की स्थापना की गई थी, जिसमें उन्होंने आदेश दिया था कि इस स्थान से कर 1/6 के स्थान पर 1/8 की दर से एकत्र किया जाएगा, क्योंकि यह स्थान शाक्यमुनि (गौतम बुद्ध) के जन्म से संबंधित है। इसलिए अशोक के शासनकाल के दौरान, कपिलवस्तु और जनपद सिद्धार्थनगर का वर्तमान क्षेत्र मौर्य साम्राज्य के अधीन था।[13].

पतंजलि जो पुष्यमित्र शुंग के समकालीन थे, ने कोसल के बजाय इक्ष्वाकु शब्द का इस्तेमाल किया।[14] पुष्यमित्र शुंग के शासनकाल के दौरान, साकेत और कुसुमध्वज (पाटलिपुत्र) सहित गंगा घाटी पर हिन्द-यवन शासकों डेमेट्रियस और मेनेंडर द्वारा आक्रमण किया गया था।[15] लेकिन पुष्यमित्र शुंग ने उन्हें पराजित कर निष्कासित कर दिया। शुंग शासक धनदेव का एक पाषाण स्तंभ शिलालेख अयोध्या से राजा फलगुदेव के नाम का प्राप्त किया गया था।[16]. इसका तात्पर्य है कि शुंगों के शासनकाल के दौरान, जनपद सिद्धार्थनगर के क्षेत्र सहित कोसल शुंग वंश के अधीन था। इसके बाद इस क्षेत्र पर कुषाण राजाओं का शासन था।[17].

कुषाणों के बाद, उत्तर भारत ने राजनीतिक अराजकता का अनुभव किया। परिणामस्वरूप उत्तर भारत कई भागों में विभाजित हो गया और कुछ छोटे राजवंशों का उदय हुआ। अध्ययन क्षेत्र भारशिव नागाओं के प्रत्यक्ष शासनकाल के अधीन था। उन्होंने लगभग 140 वर्षों तक इस क्षेत्र पर शासन किया।[18].

इन शासकों के बाद, यह क्षेत्र महान गुप्त वंश के शासन में था। गुप्त शासकों ने छठवीं शताब्दी ईस्वी के मध्य तक इस क्षेत्र

पर शासन किया। इसके बाद जनपद सिद्धार्थनगर का क्षेत्र संभवतः वर्धन वंश के मौखरियों और हर्ष के अधीन था। इसके बाद लगभग आधी सदी तक अंधकार और अराजकता का वातावरण था, जो कन्नौज के यशोवर्मन के उद्भव से दूर हो गई। इसके बाद गुर्जर-प्रतिहार शासकों ने नौवीं शताब्दी ईस्वी के प्रारंभ से लेकर 11वीं शताब्दी ईस्वी तक इस क्षेत्र पर अधिकार बनाए रखा। तत्पश्चात गहड़वाल राजाओं ने कन्नौज और सिद्धार्थनगर जिले सहित उत्तर प्रदेश के अधिकांश हिस्से पर कब्जा कर लिया। गहड़वाल वंश का अंत तब हुआ जब इसके शासक जयचंद्र को 1994 में चंदावर की लड़ाई में मुहम्मद गोरी ने मार डाला था।[19] जयचंद्र की मृत्यु के बाद, दिल्ली सल्तनत का युग शुरू हुआ और कन्नौज पर तुर्कों का अधिकार हो गया।[20]

परंपरा के अनुसार, सिद्धार्थनगर और बस्ती के जिलों और अवध के अधिकतम क्षेत्रों पर भरों का अधिकार था। लेकिन बाद में कनिंघम ने उनकी पहचान बघेल राजाओं के रूप में की[21]।

कुछ ऐसे व्यक्ति हैं जिन्होंने दिल्ली सल्तनत की ओर से अवध के गवर्नर के रूप में क्षेत्र पर शासन किया या इस क्षेत्र पर सीधे

सुल्तानों द्वारा शासन किया गया था। वे नासिर-उद-दीन महमूद, बलबन, बुघरा खान, मलिक तिगिन, ऐन-उल-मुल्क, गयास-उद-दीन तुगलक, फिरोज शाह, शमसुद-दीन-फिरोज, फिरोज तुगलक और उनके उत्तराधिकारी, कुछ राजपूत परिवार आदि थे। इसके बाद न केवल उत्तरी भारत बल्कि भारत के लगभग सभी हिस्सों पर मुगलों का अधिकार हो गया था। इसके बाद इस जनपद पर अवध के *नवाबों* का प्रभुत्व था और बाद में इस पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया[22]। जनपद सिद्धार्थनगर को जनपद बस्ती से अलग कर 29 दिसंबर 1988 को एक स्वतंत्र जिले के रूप में स्थापित किया गया था।[23]

संदर्भ:

1. Valmiki *Ramayana*:*Uttara Kanda*, 107/7, 107/16-18, 107/20, 108/5-6.
2. *Mahabharata*: 2/3/1-2, Chitrashala Press, Poona, 1929; Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona.
3. *Raghuvamsa*: 6. 69; 9. 1. Nirnaysagar Press, Bombay, 1932.

4. Sircar, D C: *Select Inscriptions Bearing on Indian History and Civilization*, Vol 1, Calcutta, 1965, p. 264, line 19.

5. *Anguttaranikaya*: 1/253, P T S, London, 1885-1900.

6. *Bhagavata purana*: 9/11/22, 10/58/52, 10/86/20; Geeta Press, Gorakhpur, 1952.

7. Watters, T.: Kapilavastu in the Buddhist Book, *Journal of the Royal Asiatic Society of Great Britain and Ireland*, 1898, (7) p. 534 (8) p. 536 (9) p. 534; Srivastava, K M: *Excavations at Piprahwa and Ganwaria*, Archaeological Survey of India, Janpath, New Delhi, 1996, pp. 7-8.

8. Srivastava, K M: *Excavations at Piprahwa and Ganwaria*, Archaeological Survey of India, Janpath, New Delhi, 1996, p. 8.

9. Oldenberg, Harmann: *Buddha: His Life, His Doctrine, His Order*, translated by William Hoey, Edinburgh, 1882, p. 416.

10. Pande, G C: *Studies in the Origins of Buddhism*, Ancient History Research Series I, Allahabad University, 1957, p. 372.

11. Motichanda: *Sarthavaha – Prachina Bharata Ki Patha Paddhati*, Bihar Rastrabhasa Parishad, Patna.

12. Pande, G C: *Studies in the Origins of Buddhism*, Ancient History Research Series I, Allahabad University, 1957, p. 372.

13. Raychaudhuri, H C: *Political History of Ancient India*, Calcutta, 1953.

14. *Mahabhashya*: 4/2/104 (Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona.)

15. *Malavikagnimitra*: Panduranga Parv, Bombay, 1918, p. 222.

16. Pathak, V N*: History of Kosala up-to the Rise of the Mauryas*, Varanasi, 1963.

17. Raychaudhuri, H C: *Political History of Ancient India*, Calcutta, 1953.

18. Jaiswal, Kashi Prasad: *Andhkara Yugina Bharata*, Nagari Pracharini, Varanasi.

19. Tripathi, R S: *History of Kanauj*, Motilala Banarsidas, Banaras, 1951, pp. 220-240 *ad passim*.

20. Srivastava, A L: *Delhi Sultanate*, Agra, 1953.

21. Cunningham, A: *Archaeological Survey of India*, Vol. XXI, (Calcutta, 1885), p. 105; Cooke, W: *The Tribes and Castes of the North Western Provinces and Oudh*, Vol. II, (Calcutta, 1896), p. 3.

22. Elliot, H M and Dowson, J: *History of India as told by its own Historians*, Vol. I, Allahabad, 1961, p. 329 *ad passim*; Nevill, H R: *Basti: A Gazetteer*, Allahabad, 1907, p. 107 *ad passim*.

23. www.siddharthnagar.nic.in

अध्याय -3

जनपद में पूर्व में किए गए पुरातात्विक कार्य

इस क्षेत्र में विभिन्न संस्थाओं द्वारा पुरातात्विक उत्खनन और अन्वेषण कार्य किया गया है, जिससे क्षेत्र की प्राचीनता का पता चला। जनरल ए कनिंघम ने मध्य *दोआब* और 1874-75 के दौरान गोरखपुर क्षेत्र का दौरा किया । उन्होंने शाक्यों की राजधानी कपिलवस्तु के बारे में बताया।[1]. ए सी एल कार्लले[2] जो कनिंघम के सहायक थे, ने 1875-76 में गोरखपुर और बस्ती जिलों में अपनी यात्रा के दौरान कपिलवस्तु का भी उल्लेख किया। उन्होंने नगर खास का उल्लेख कपिलवस्तु के रूप में किया जो बस्ती के जनपद मुख्यालय के दक्षिण में लगभग बारह किलोमीटर की दूरी पर स्थित था। लेकिन इन दोनों से पहले लासेन ने 1858 में प्राचीन कपिलवस्तु के अवशेषों को गोरखपुर के उत्तर-पश्चिम में थोड़ी दूरी पर रोहिन नदी के तट पर स्थित माना।[3]

अन्वेषण और उत्खनन के कार्यों में नेपाली सरकार को सलाह देने के लिए 1896 में एलोइस एंटोन फ्यूहरर को नियुक्त किया गया था। उन्होंने लुंबिनी में एक अंकित अशोक स्तंभ की मदद

से भगवान बुद्ध के जन्म स्थान के रूप में लुंबिनी उद्यान को स्थापित किया। फ्यूहरर ने नेपाल *तराई* में स्थित तिलौराकोट का उल्लेख प्राचीन कपिलवस्तु के रूप में किया, जो शाक्यों की राजधानी थी। वह कपिलवस्तु को नेपाल में बताने वाले पहले व्यक्ति थे। तिलौराकोट के अलावा, फ्यूहरर ने अमौली, बैदौली, हरनामपुर, बिकुली, रामघाट, रामापुरा, अहिरौली और श्रीनगर गांवों के बारे में भी बताया, जो तिलौराकोट के नजदीक थे। उन्होंने फाहियान और ह्वेनसांग के यात्रा विवरणों और भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की वार्षिक रिपोर्ट में ए कनिंघम और ए सी कार्लले के अन्वेषण कार्य का अध्ययन किया। इसके बाद वे इस नतीजे पर पहुंचे कि तिलौराकोट शाक्यों की राजधानी थी।[4]

प्राचीन स्थल पिपरहवा ने 1898 में पहली बार पुरातत्वविदों का ध्यान आकर्षित किया जब डब्ल्यू सी पेप्पे ने स्तूप में कुछ खोजें कीं। प्रथम चरण में पेप्पे ने 1897 ईस्वी में *स्तूप* एक शाफ्ट डाला। अक्टूबर 1897 ईस्वी में, वी ए स्मिथ ने इस स्तूप को बहुत प्राचीन घोषित किया[5]। जनवरी 1898 ईस्वी में, पेप्पे ने पिपरहवा में फिर से उत्खनन कार्य को प्रारंभ किया और उन्हें सोपस्टोन के अस्थि कलश (कास्कट) में मोती, क्रिस्टल, सोने के गहने और साँचे से निर्मित ईंटों से

बना एक मिट्टी का पाइप प्राप्त हुआ। लेकिन इतिहासकारों और पुरातत्वविदों का ध्यान आकर्षित करने के बाद भी, पिपरहवा को शाक्यों की प्राचीन राजधानी कपिलवस्तु के रूप में उत्खनन करने और स्थापित करने में लगभग एक सदी लग गई।[6] टी वाटर्स ने प्राचीन कपिलवस्तु की पहचान स्थापित करने का भी प्रयास किया।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के पी सी मुखर्जी ने 1899 में नेपाल की *तराई* में अन्वेषण और उत्खनन का काम किया । एक सर्वेक्षण के बाद, उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि तिलौराकोट प्राचीन कपिलवस्तु था।[7]

पी सी मुखर्जी के बाद, वी ए स्मिथ ने फिर से निष्कर्ष निकाला कि पिपरहवा फाहियान द्वारा उल्लिखित कपिलवस्तु है और तिलौराकोट ह्वेनसांग द्वारा उल्लिखित कपिलवस्तु है।[8] लेकिन पिपरहवा से प्राप्त कास्कट का पता चलने के बाद स्मिथ सहमत हो गए थे कि पिपरहवा ही कपिलवस्तु है।[9].

टी डब्ल्यू रिस डेविड्स ने तिलपुरा (तिलौराकोट) को पुराने कपिलवस्तु और पिपरहवा को नए कपिलवस्तु के रूप में उल्लेख किया, जिसे कोसल *महाजनपद* के तत्कालीन राजा

विदुद्भ के आक्रमण के बाद स्थापित किया गया था[10]। जे एफ फ्लीट का मन्तव्य भी राइस डेविड्स की तरह था।[11].

इन विद्वानों के बाद, इस विषय पर काम करने वाले शोधकर्ताओं की एक सूची है। इन नामों में एम. सिल्वेन लेवी, ए बार्थ, डब्ल्यू होए, डब्ल्यू वोस्ट, एएस गेडेन और देबाला मित्रा शामिल थे। 1962 ईस्वी में देबाला मित्रा को भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण और भारत सरकार द्वारा नेपाल की *तराई* के लुंबिनी-तिलौराकोट क्षेत्र में अन्वेषण और उत्खनन करने के लिए प्रतिनियुक्त किया गया था। अपने काम के बाद, उन्होंने एक मजबूत धारणा बनाई कि पिपरहवा और उसके पास के गांव गनवरिया कपिलवस्तु का स्थल हो सकते हैं।[12] लेकिन यह निष्कर्ष 1971 में पिपरहवा में के एम श्रीवास्तव द्वारा उत्खनन का काम शुरू किए जाने के बाद 1972 में देबला मित्रा ने निकाला।

प्राचीन कपिलवस्तु की खोज के अलावा, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के के एम श्रीवास्तव ने पिपरहवा और गनवरिया के पुरातात्विक स्थलों पर उत्खनन की। उन्होंने 1971 से 1976 तक दोनों स्थलों पर उत्खनन किया। उत्खनन से पता चलता है कि पिपरहवा *स्तूप* और विहार (विहार) स्थल है जबकि

गनवरिया एक आवासीय स्थल है।[13&14] जब के एम श्रीवास्तव प्राचीन कपिलवस्तु की परियोजना पर काम कर रहे थे, तो उन्होंने पिपरहवा के आसपास के क्षेत्र सलारगढ़[15] और बर्डपुर[16] में छोटे पैमाने पर उत्खनन या परीक्षण उत्खनन कार्य किया। पिपरहवा और गनवरिया में उत्खनन करने के बाद के एम श्रीवास्तव ने निष्कर्ष निकाला कि ये दोनों स्थल कपिलवस्तु हैं।

उपरोक्त कार्यों के अलावा, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति और पुरातत्व विभाग, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी[17] और दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर[18] की टीम ने इस जिले में पुरातात्विक अन्वेषण कार्य किया और कई संस्कृतियों से सम्बन्धित कुछ पुरातात्विक स्थलों का पता लगाया।

इन शोधों के बाद कुछ अन्य विद्वानों ने इस क्षेत्र की प्राचीनता को स्थापित करने का प्रयास किया। उत्तर प्रदेश राज्य पुरातत्व विभाग, लखनऊ के राकेश तिवारी, राकेश कुमार श्रीवास्तव और के के सिंह ने भी इस क्षेत्र में पुरातात्विक अन्वेषण कार्य किया है। उन्होंने इस क्षेत्र में, सिद्धार्थनगर जिले की दक्षिणी सीमा, जो आमी नदी के साथ लगा है, कुछ

पुरातात्विक स्थलों का पता लगाया था।[19] बी आर मणि के निर्देशन में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, नई दिल्ली की उत्खनन शाखा-II की टीम ने बूढ़ी राप्ती और आमी नदी घाटी में कुछ स्थलों का पता लगाया।[20]

पिपरहवा और गनवरिया में उत्खनन कार्य 1971 से 1976 के सत्र के दौरान भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के उत्खनन शाखा - III, पटना के, के एम श्रीवास्तव द्वारा किया गया था। उपर्युक्त उत्खननों की एक संक्षिप्त रिपोर्ट निम्नानुसार है-

पिपरहवा में उत्खनन[21]

पिपरहवा का प्राचीन स्थल सिद्धार्थनगर के जनपद मुख्यालय नौगढ़ से 22 किलोमीटर की दूरी पर $27^0 26' 30''$ N और $83^0 07' 50''$ के भू-निर्देशांक के बीच स्थित है। पिपरहवा 1898 में सुर्खियों में आया जब डब्ल्यू सी पेप्पे ने 1897 में *स्तूप* में एक शाफ्ट में डाला। 8 फीट की गहराई तक उत्खनन करने के बाद उन्होंने इसे छोड़ दिया। अक्टूबर 1897 में, वी ए स्मिथ ने *स्तूप* की जांच की और इसकी प्राचीनता को बताया। जनवरी 1898 में, पेप्पे ने दस फीट की गहराई तक दस फीट वर्ग क्षेत्र में उत्खनन की और एक छोटा टूटा हुआ सोपस्टोन अस्थि कलश/अस्थि मंजूषा प्राप्त किया। इस टूटे हुए

अस्थि कलश में मोती, क्रिस्टल, सोने के गहने, कटे हुए सितारे आदि के साथ मिट्टी शामिल थी। पेप्पे ने अठारह फीट नीचे एक विशाल बलुआ पत्थर का भंडार प्राप्त किया गया जिसकी माप 4'4"x2'8.25"x2'2.25" थी। इस कोष में एक स्टीटाइट अस्थि कलश, एक लिपि द्वारा अंकित अस्थि कलश शामिल था। *लोटा*-आकार का स्टीटाइट अस्थि कलश, एक छोटा गोल स्टीटाइट अस्थि कलश और एक क्रिस्टल अस्थि कलश थे। सभी निष्कर्षों में, सबसे महत्वपूर्ण स्टीटाइट अस्थि कलश के ढक्कन पर लेख था। यह लेख *"सुकिती भतिनम सा-भगिनीकनं सा-पूता डालानं इयं सलिला निधाने बुधस भगवते साकियानाम।"*

इस लेख को ब्राह्मी लिपि में सबसे पुराना साक्ष्य माना जाता है। यह भारत में बौद्ध धर्म के प्रारंभिक इतिहास का भी वर्णन करता है।

लंबे अंतराल के बाद पिपरहवा के प्राचीन स्थल पर के एम श्रीवास्तव ने उत्खनन किया। पुरस्थल पर हुए उत्खनन से पता चला कि दो अवशेष अस्थि कलश, जो के एम श्रीवास्तव द्वारा 6 मीटर की गहराई पर प्राप्त किए गए थे, उत्तरी कृष्ण मार्जित मृदभांड के शुरुआती काल के समकालीन थे और 5$^{वीं}$

-4थे शताब्दी ईसा पूर्व तक तिथित हो सकते हैं। दोनों सोपस्टोन अस्थि कलश में जली हुई अस्थियाँ थीं। ये अस्थि कलश पेप्पे द्वारा पाए गए लिपि अंकित अवशेष अस्थि कलश की तुलना में पहले के थे।

इस पुरास्थल पर चौथे शताब्दी ईस्वी में अथवा तीसरे शताब्दी ईस्वी में अधिवास के प्रमाण नहीं मिले हैं। पूर्वी विहार के पूर्वी बरामदे में प्रयोग किए गए जले हुए लकड़ी के खंभे और दव्वार शाखाओं से संकेत मिलता है कि आगजनी के कारण पिपरहवा का प्राचीन स्थल समाप्त हो गया था। पिपरहवा से तीन C^{14} तिथियां उपलब्ध हैं, जो 410 ईसा पूर्व, 370 ईसा पूर्व और 280 ईसा पूर्व की हैं। उत्खनन के समय बड़ी संख्या में पकी मिट्टी की मुहर और एक मृदभाण्डका ढक्कन जिस पर *कपिलवस्तु* लेख अंकित था, प्राप्त किए गए। उत्खनन से बड़ी संख्या में संरचनाओं का भी पता चला-

यह *स्तूप* भारत में सबसे शुरुआती स्तूपों में से एक है। उत्खनन से निर्माण के तीन चरणों का पता चला।

निर्माण के **पहले चरण** में आसपास के क्षेत्र से प्राकृतिक मिट्टी का उपयोग किया गया था। टुमुलस/टीले का अधिकतम व्यास 38.90 मीटर था और ऊंचाई 0.75 मीटर थी।

टीले के शीर्ष के केंद्र में पवित्र अवशेषों को रखने के लिए पके हुए ईंटों से दो कक्षों का निर्माण किया गया था। इस संरचना की ऊंचाई 0.90 मीटर थी और इसमें ईंटों के बारह रद्दे शामिल थे। इस संरचना में उपयोग की जाने वाली ईंटों का परिमाप 42x27x7 सेमी और 40x27x7 सेमी था।

दूसरे चरण में पहले चरण की संरचना से जोड़ते हुए ठोस/कठोर पीले रंग की मिट्टी को ईंटों के दो रद्दों के ऊपर भरा गया था। मिट्टी के जमाव के ऊपर 35 सेमी ईंट के टुकड़े और मलबे का जमाव मिल था। आगे यह देखा गया कि इस जमाव के ऊपर, कंकड़ और चूने के साथ मिश्रित काली मिट्टी का जमाव था। *स्तूप* के निर्माण का दूसरा चरण इस स्तर से शुरू किया गया था। वहाँ दो *प्रदक्षिणापाठ* थे और दूसरे चरण में इसके दो स्तर थे। इस चरण में पकी हुई ईंटों के पैंतालीस रद्दों का प्रयोग किया गया था। इस चरण में प्रयोग की जाने वाली ईंटों का परिमाप 40x27x7 सेमी मापा गया।

तीसरे चरण के दौरान *स्तूप* के आधार को गोलाकार से एक वर्ग में परिवर्तित किया गया था। इस वर्ग की प्रत्येक भुजा 23.50 मीटर थी। गोलाकार संरचना और नई संरचना के बीच के रिक्त स्थान को ईंटों और ईंटों के टुकड़ों से भरा गया

था। गुंबद का अधिकतम व्यास 23 मीटर था। इस चरण में, केवल एक अस्थि कलश रखा गया था, जो पेपे को प्राप्त हुआ था।

पूर्वी विहार - दूसरा महत्वपूर्ण स्मारक पूर्वी विहार था जो *स्तूप* के पूर्व में स्थित था। *कपिलवस्तु* लेखयुक्त मुहर यहीं से मिला था। इस विहार में चार संरचनात्मक चरण थे। यह आकार में वर्गाकार था जिसमें प्रत्येक भुजा 32.30 मीटर थी। केंद्रीय आंगन भी आकार में वर्गाकार था, जिसमें प्रत्येक भुज 21.80 मीटर थी। आंगन के चारों ओर इक्कीस कोठरियां थीं। लगभग सभी कोठरियां 3.20x2.90 मीटर परिमाप की थीं, केवल वही कोठरियां जो कोनों पर थीं उनका परिमाप 5.40x2.90 मीटर मापा गया था।

इस विहार के ध्वंसात्मक अवशेषों से एक चांदी की आहत मुद्रा भी प्राप्त हुई थी।

पूर्वी विहार का प्रवेश द्वार- पूर्वी विहार का प्रवेश द्वार पश्चिम की ओर, स्तूप के निकट था और यहाँ पर सीढ़ियों का निर्माण भी किया गया था। इस प्रवेश द्वार की चौड़ाई 5.70 मीटर थी। सीढ़ियों के दोनों किनारों पर दो लघु कमरे थे, जिनका निर्माण संभवतः प्रहरियों के लिए किया गया था।

उत्तरी विहार - यह *स्तूप* के उत्तर-पूर्वी भाग में, पूर्वी विहार के उत्तर-पश्चिमी कोने के पास स्थित था। यह लगभग पूर्वी विहार के समान था। इस विहार में सोलह कोठरियाँ पाई गईं जो 3.20x2.35 मीटर से 2.10x1.80 मीटर तक मापी गईं। पश्चिम की ओर की कोठरियाँ बहुत छोटी थीं, जिनका निर्माण भंडारण या ध्यान उद्देश्यों के लिए किया गया था। पूर्व-पश्चिम में इस विहार का आंतरिक माप 19.30 मीटर था।

ईंटों से निर्मित हॉल- टीले की उत्तर-पश्चिमी परिधि पर एक ईंटों से निर्मित एक वृहद हॉल था। हॉल आकार में चौकोर था, जिसमें प्रत्येक भुज 10.60 मीटर थी। हॉल में प्रयुक्त ईंटों की परिमाप 40x27x6 मीटर थी। तीन कमरे थे जो 5.92x2.92 मीटर से 3.30x2.92 मीटर मापा गया था।

विशाल पोर्टिको- एक विशाल पोर्टिको जैसा हॉल उत्खनन में प्राप्त हुआ था। यह ईंटों से निर्मित हॉल के पूर्वी हिस्से के निकट था। इसका निर्माण तीसरे संरचनात्मक चरण में किया गया था और इसका आकार आयताकार था। उत्तर-दक्षिण में पोर्टिको की लंबाई 12.15 मीटर और पूर्व-पश्चिम में इसकी चौड़ाई 9.30 मीटर थी।

प्लेटफार्म- *स्तूप* के पूर्वी दिशा में केंद्र में पकी हुई ईंट से बना एक प्लेटफार्म पटापट हुआ था। यह दूसरे चरण में निर्मित *प्रदक्षिणापथ* के निकट था। यह आकार में वर्गाकार था और इसकी प्रत्येक भुज 1.20 मीटर था। इसमें प्रयोग की गई ईंटों की माप 38x25x6 सेमी से 38x24x5 सेमी थी।

एक बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हॉल-पूर्वी विहार के दक्षिण-पश्चिमी कोने से दक्षिण की ओर एक जीर्ण-शीर्ण दीवार देखी गई। इस दीवार में ईंटों के कुल नौ रद्दे थे।

एक प्लेटफार्म पर मंदिर-पूर्वी विहार के दक्षिण-पश्चिमी कोने के पास एक मंदिर जैसी संरचना मिली थी। यह *स्तूप* के पूर्वी भाग के बहुत करीब था। मंदिर का आंतरिक भाग उत्तर-दक्षिण में 3.15 मीटर और पूर्व-पश्चिम में 4.75 मीटर मापा गया। इसका निर्माण एक विशाल पके हुए ईंटों के मंच पर किया गया था। मंच आकार में वर्गाकार था और यह प्रत्येक तरफ 15.10 मीटर मापा गया था। मंदिर और प्लेटफार्म विहार के चौथे संरचनात्मक चरण से संबंधित थे।

संलग्न दीवार के साथ कक्ष - प्लेटफॉर्म के दक्षिण में अंदर एक कमरे के साथ एक दीवार थी। यह प्लेटफार्म से 3.25 मीटर की दूरी पर था। ये संरचनाएं चौथे चरण से संबंधित थीं। पूर्व-

पश्चिम में दीवार की लंबाई 8.30 मीटर थी। दीवार की मोटाई 1.10 मीटर थी। दीवार से उत्तरी तरफ की ओर प्रोजेक्ट करने वाली संरचनाओं जैसे दो मंच भी थे। एक प्लेटफार्म पूर्व-पश्चिम में 1.75 मीटर और उत्तर-दक्षिण दिशा में 1.30 मीटर मापा गया और दूसरा प्लेटफार्म पूर्व-पश्चिम में 1.90 मीटर और उत्तर-दक्षिण दिशा में 0.85 मापा गया।

दीवार के भीतर का कमरा उत्तर-दक्षिण में 5.05 मीटर और पूर्व-पश्चिम दिशा में 3.60 मीटर मापा गया। कमरे की दीवारें 0.96 मीटर मोटी थीं।

दक्षिणी विहार - यह *स्तूप* से छह मीटर की दूरी पर दक्षिण की ओर था। इसका प्रवेश द्वार *स्तूप* की तरफ उत्तरी दिशा की ओर था। इसकी योजना लगभग अन्य विहारों के समान ही थी। इस विहार में कक्षों में केवल दो वीथिकाओं का एक जोड़ था। यह अटेन्ट जीर्ण-शीर्ण स्थिति में था और प्रत्येक तरफ 24 मीटर भुजा के साथ इसका आकार एक वर्ग का था। इसका निर्माण दो चरणों में किया गया था और दोनों चरणों में इक्कीस कोठरियाँ थीं। कोठरियाँ का आकार 4.80x2.20 मीटर से 2.10x2.05 मीटर था। एक केंद्रीय आंगन और एक बरामदा था। बरामदे की चौड़ाई 2.40 मीटर थी। प्रथम चरण में

उपयोग की गई ईंटों की परिमाप 40x27x6.5 सेमी थी जबकि द्वितीय चरण में यह 38x24x6-5 सेमी थी। प्रवेश द्वार के ठीक बाहर एक ईंट का प्लेटफार्म था जो विहार को *स्तूप* से जोड़ रहा था।

पश्चिमी विहार -यह विहार स्तूप से पश्चिम में लगभग सौ मीटर की दूरी पर था। इस विहार में तीन संरचनात्मक चरण देखे गए थे। पहले संरचनात्मक चरण में पकी हुई ईंटों के पांच रद्दे और दूसरे संरचनात्मक चरण में ग्यारह रद्दे थे। पहले चरण में प्रयोग की गई ईंटों की परिमाप 33x25x7.5 सेमी और दूसरे चरण में 38x25-24x7.5 सेमी थी। तीसरे संरचनात्मक चरण में पकी हुई ईंटों के आठ रद्दे शामिल थे। प्रयोग की गई ईंटों की परिमाप 37x24-23x7.5 सेमी थी।

इस विहार की योजना दूसरों विहारों के समान ही थी। कुल मिलाकर, पहले चरण में सोलह कोठरियाँ पाई गईं, जिनका आकार 4.20-3.70x3.20 मीटर के बीच था। लेकिन दूसरे संरचनात्मक चरण में, यह 5.90x3.30 मीटर से 3.30x3.10 मीटर था। विहार आकार में वर्गाकार था जिसमें प्रत्येक भुजा 25 मीटर थी। बाहरी दीवार की मोटाई 1.00 मीटर और आंतरिक दीवार की मोटाई केवल 0.75 मीटर थी।

गनवरिया में उत्खनन[22]

गनवरिया पिपरहवा से लगभग एक किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। यह प्राचीन कपिलवस्तु का आवासीय स्थल था। *स्तूप* और विहार आवासीय क्षेत्रों के बाहरी इलाके में स्थित थे क्योंकि *स्तूप* धार्मिक उद्देश्यों के लिए निर्मित किया गया था। गनवरिया उत्तर-दक्षिण में 330 मीटर और पूर्व-पश्चिम में 270 मीटर के क्षेत्र में विस्तृत था। इसकी ऊंचाई आसपास की सतह से लगभग 7 मीटर थी। इस पुरस्थल के दो प्रमुख टीले ध्यान देने योग्य थे। गनवरिया में उत्खनन 1974-77 के सत्र के दौरान की गई थी। इस स्थल पर उत्खनन से चार सांस्कृतिक कालों का पता चला-

अवधि I - यह अवधि 800-600 ईसा पूर्व से संबंधित थी। मृदभांडों के मुख्य प्रकार अच्छी प्रकार के धूसर मृदभाण्ड, कृष्ण लेपित मृदभाण्ड, लाल लेपित मृदभाण्ड, चॉकलेट लेपित मृदभाण्ड और लाल मृदभाण्ड थे। उत्तरी भारत के पश्चिमी भाग में लाल रिम और भूरे रंग के तल वाले कुछ लाल मृदभाण्ड के कलश और तश्तरियाँ चित्रित धूसर मृदभाण्ड से संबंधित हैं। सादे लाल मृदभाण्ड को कटोरे और तश्तरियों द्वारा दर्शाया गया था। कभी-कभी बिन्दु और वृत्त का

चित्रण काले रंग से मृदभांडों के बाहरी सतह पर पाई जाती थी। धूसर मृदभाण्ड में मुख्य प्रकार कटोरे, तश्तरियाँ और कलश थे; कटोरे, तश्तरियाँ, कलश और चैनल युक्त टोंटीदार मृदभाण्डलाल-लेपित मृदभाण्ड में मिलते हैं। कृष्ण लेपित मृदभांडों में कटोरे, तश्तरियाँ और पनि के पात्र प्राप्त होते हैं।

इस काल के पुरावशेषों में तांबे की चूड़ियां, अंजन शलाका और दंत खोदनी (टूथ पिक) थे; लोहे के हल, तीर और भाले के सिर; कांच के मनके, उपरत्नों के मनके, हड्डी के तीर, कांच की चूड़ियाँ और मिट्टी की चूड़ियाँ आदि थे।

यहाँ के निवासियों ने अपने घरों की दीवारों को मिट्टी से बनाया था, जिनकी छत लकड़ी के स्तंभों से रोके गए थे। लकड़ी के स्तम्भ का एक हिस्सा लम्बवत स्थिति में प्राप्त किया गया था। नियमित बाढ़ की समस्या से बचने के लिए यहाँ के निवासियों ने अपने घरों को ऊंचे मिट्टी के चबूतरों पर निर्मित किए थे। कुछ घर गोलाकार आकार के थे। दीवारों की अधिकतम मोटाई 0.85-0.65 सेमी थी।

अवधि II - यह काल 600-200 ईसा पूर्व से संबंधित थी। इसका प्रतिनिधित्व उत्तरी कृष्ण मार्जित मृदभाण्ड

(एनबीपीडब्ल्यू), कृष्ण लेपित मृदभाण्ड, धूसर मृदभाण्ड और लाल मृदभाण्ड ने किया था। लाल मृदभांडों को काले रंग से क्षैतिज रेखाओं द्वारा चित्रित किया गया था। उत्तरी कृष्ण मार्जित मृदभाण्ड में मुख्य आकार कटोरा था। लाल मृदभाण्ड में कटोरे, कलश और चैनल युक्त टोंटीदार मृदभाण्ड प्रमुख थे।

पुरावशेषों में तीन रजत मुद्राएँ; तांबे की चूड़ियां, अंजन शलाका, चाकू और मनके; लोहे के हल, दरांती और भाले के अगर भाग; हड्डी के पॉइन्ट और तीर; टेराकोटा डिस्क, मनके, पेंडेंट, चूड़ियां, कुम्हार की थापी, त्वचा रबर, खिलौना गाड़ी और गाड़ी का पहिया; पुरुष, महिला और पशु मृणमूर्तियाँ; उपरत्नों के मनके और कांच की चूड़ियों आदि थे।

इस काल की पकी हुई ईंटों की संरचनाएं पाई गईं। इस पुरास्थल पर पकी हुई ईंटों की संरचनाओं के साक्ष्य छठी-पाँचवी शताब्दी ईसा पूर्व में भारत में किसी भी पुरातात्विक स्थल से रिपोर्ट किया गया सबसे पहला संरचनात्मक क्रिया-कलाप है, मुख्य रूप से उत्तरी भारत में।

यहाँ एक विशाल पकी हुई ईंटों का परिसर था जो टीले की पश्चिमी परिधि पर प्राप्त हुआ था। यह आकार में वर्गाकार था

और प्रत्येक भुजा 38 मीटर मापा गया था। कमरे एक केंद्रीय वर्गाकार आंगन के चारों ओर बनाए गए थे जो प्रत्येक तरफ 16.70 मीटर की दूरी पर था। यह संरचना पांच चरणों में पूरी हुई थी। इस परिसर में प्रयोग की गई ईंटों की माप 38-33x25-21x8-7 सेमी थी।

इसके अलावा, कई अन्य संरचनात्मक परिसर थे जो पकी हुई ईंटों से बने थे।

अवधि III- इस काल का जमाव शुंग काल से संबंधित था जो द्वितीय शताब्दी ईसा पूर्व से प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व के मध्य था। यह ठेठ शुंग कालीन मृदभांडों द्वारा दर्शाया गया था। मृदभांडों के मुख्य प्रकार लाल मृदभाण्ड, धूसर मृदभाण्ड और कृष्ण लेपित मृदभाण्ड थे। कटोरे, कलश, तश्तरियाँ, ढक्कन और बेसिन लाल मृदभाण्ड में प्रमुख आकार थे। धूसर मृदभाण्ड में तश्तरियाँ और कटोरे थे; और कृष्ण लेपित मृदभाण्ड में लघु कलश थे।

पुरावशेषों में तांबे की चूड़ियां, अंगूठियां, कान के ठप्पे, मनके, पेंडेंट, अंजन शलाका, दंत खोदनी (टूथ पिक), कटोरे, भुजबंद और पायल शामिल हैं; लोहे के हल के फाल, दरांती, तीर और भाले के अगर भाग; हड्डी के तीर; पुरुष, स्त्री और

पशु मृणमूर्तियाँ, डिस्क, मनके, चूड़ियां, कान के गहने, कुम्हार के ठप्पे और थापी, मूसल, त्वचा रबर, गोफर की गेंद, खिलौना गाड़ी और गाड़ी का पहिया; उपरत्नों के मनके, कांच की चूड़ियां और अलंकृत पत्थर के टॅबलेट्स थे।

अवधि IV- यह अवधि कुषाण काल से संबंधित थी और प्रथम शताब्दी ईस्वी से तृतीय शताब्दी ईस्वी के मध्य थी। मृदभांडों का मुख्य प्रकार लाल मृदभाण्ड था। लाल मृदभाण्ड में प्रमुख आकार कटोरे, कलश, बेसिन, नाद, जार, टोंटी और ढक्कन थे। लाल पॉलिश किए गए मृदभाण्ड में कटोरे और पात्र थे। छिड़कने वाले पात्रों ने पहली बार अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। धूसर मृदभाण्ड और कृष्ण लेपित मृदभाण्ड को कटोरे और तश्तरियों द्वारा दर्शाया गया था। इस अवधि में मृदभांडों पर सजावट बहुत लोकप्रिय हो गई। कलश के हत्थों को नालीदार और ऊर्ध्वाधर खांचों से सजाया गया था। वृत्त, तिर्यक रेखाएँ, पुष्प अलंकरण, संकेंद्रित वृत्तों के समूह, मछली के काँटों सदृश अलंकरण अन्य महत्वपूर्ण चित्रण थे।

पुरावशेषों में तांबे की चूड़ियां, अंगूठियां, कान के आभूषण, मनके, पेंडेंट, अंजन शलाका और चाकू शामिल थे; लोहे के हल के फाल, दरांती और भाले के अगर भाग; हड्डी के तीर;

अलंकृत पत्थर के टॅबलेट्स; टेराकोटा बुद्ध का सिर, पुरुष, स्त्री और पशु मृणमूर्तियाँ, डिस्क, मनके, पेंडेंट, कान के गहने, खिलौना गाड़ी और गाड़ी का पहिया, कुम्हार के ठप्पे और थापी, चूड़ियां, गोफर की गेंद, मूसल, त्वचा रबर और मिट्टी की मुहरें; उपरत्नों के मनके और कांच की चूड़ियां थीं। इस स्तर से विम कड़फिसस का एक सिक्का और हुविष्क के कई सिक्के मिले।

इस अवधि के दौरान उत्खनन से चार मंदिरों और एक अज्ञात भवन की संरचनाओं के बारे में जानकारी प्राप्त हुई। कुषाण शासक, विशेष रूप से कनिष्क बौद्ध धर्म के प्रति बहुत समर्पित थे। उनके शासनकाल के दौरान कपिलवस्तु में धार्मिक गतिविधियां फिर से जीवंत हो गई और इस तरह की संरचनाओं का निर्माण अन्य लोगों के साथ गनवरिया में भी किया गया।

कुषाण सिक्कों के अलावा, कुछ अन्य प्रकार के सिक्के, जैसे एक तांबे का शलाका मुद्रा, कई लेखविहीन ढले सिक्के, पांचाल के सिक्के, अयोध्या के सिक्के और एक इंडो-सासियन तांबे का सिक्का जो यहाँ के तृतीय अथवा चतुर्थ काल से संबंधित था, भी मिले थे । गनवरिया के प्राचीन स्थल से 64

चांदी के आहात मुद्राओं का एक भंडार और सैंतीस तांबे की मुद्राओं का एक भंडार भी पाया गया था।

इस पुरायस्थल से केवल एक C^{14} तिथि प्राप्त हुई थी जो $4740\pm210 = 2790$ ईसा पूर्व की थी यह तिथि स्तर 15 से लकड़ी के कोयला का नमूना थी जो प्रथम काल के निचले स्तर के समकालीन थी।

सालारगढ़ में उत्खनन[23]

सलारगढ़ पिपरहवा के उत्तर-पूर्व में लगभग एक किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। उत्खनन के दौरान *स्तूप* और एक निकटवर्ती विहार का साक्ष्य मिला। विहार पूर्व-पश्चिम में 31.40 मीटर और उत्तर-दक्षिण दिशाओं में 8.50 मीटर मापा गया। विहार तक पहुंचने का रास्ता सीढ़ियों की मदद से उत्तरी तरफ से था। इस विहार में कुल ग्यारह कमरे मिले थे। सबसे बड़ा कमरा 6.00x2.80 मीटर मापा गया जबकि सबसे छोटा कमरा इस विहार के परिसर में 3.35x2.25 मीटर मापा गया। विहार का निर्माण तीन चरणों में किया गया था और इसकी तिथि द्वितीय शताब्दी इस पूर्व से प्रथम शताब्दी ईस्वी के मध्य थी।

एक *स्तूप* के अवशेष, इस विहार के उत्तरी किनारे पर 30 मीटर की दूरी पर स्थित थे। यह *स्तूप,* पिपरहवा के स्तूप के समान था। यह *स्तूप* 5.50 मीटर के व्यास के साथ अपने प्रारंभिक चरणों में योजना में गोलाकार था। कुषाण काल के दौरान इसे एक चौकोर आकार में बदल दिया गया था जिसमें प्रत्येक भुजा 10.85 मीटर था। इस *स्तूप* के अवशेष बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गए थे।

के एम श्रीवास्तव द्वारा पिपरहवा, गनवरिया और सलारगढ़ के प्राचीन स्थलों पर पैंतीस साल की उत्खनन के बाद; बी आर मणि, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, नई दिल्ली के अतिरिक्त महानिदेशक और लखनऊ सर्कल के अधीक्षण पुरातत्वविद् प्रवीण कुमार मिश्रा ने पिपरहवा, गनवरिया और टोला सलारगढ़ में सत्र 2012-13 के दौरान उत्खनन किया[24] ।

पिपरहवा में उत्खनन का परिणाम बहुत निराशाजनक था। इस स्थल से कोई आवासीय जमाव नहीं पाया गया।

गनवरिया में उत्खनन से इस स्थल पर चार सांस्कृतिक कालों का पता चला। प्राक-उत्तर कृष्ण मार्जित मृदभाण्ड काल, उत्तर कृष्ण मार्जित मृदभाण्ड काल, शुंग और कुषाण काल। इन उत्खननों से कुछ भी उल्लेखनीय नहीं मिला।

सलारगढ़ में उत्खनन से कुछ ईंटों के टुकड़े, कुषाण काल का एक तांबे का सिक्का और शुंग-कुषाण मृदभाण्ड मिले।

संदर्भ:

1. Cunningham, A: *Annual Reports*, Vol. XII, Archaeological Survey of India, 1879, pp. 172-175 & 184-187.
2. Cunningham, A: *The Ancient Geography of India*, Bhartiya Publishing House, Varanasi, 1975, p. XXV (First Edition 1871)
3. Lassen, C: *Indische Altertumskunde*, Leipzig, 1859, Vol. III, p.210.
4. Führer, A: *Kapilavastu, the Capital of the Sakyas, Antiquties of the Buddha's Birth-Place in the Nepalese Tarai*, Indological Book House, Varanasi, 1972, Chapter VII, pp. 35-44
5. Smith, V A: *Journal of the Royal Asiatic Society of Great Britain and Ireland*, 1898, p.585.
6. Peppe, W C: Piprahwa, Stupa Containing Relics of Buddha, *Journal of the Royal Asiatic Society of Great Britain and Ireland*, 1898, p.573.
7. Mukherji, P C: *Antiquities of Kapilavastu, Terai of Nepal*, 1899, Archaeological Survey of India, (reprinted, Varanasi 1969), p.44.
8. *Ibid*, prefatory note by V A Smith, p.10.
9. *Ibid*, p.22.
10. Rhys Davids, T W: *Buddhist India*, London, 1903, p.18.

11. Fleet, J F: Inscription of the Piprava Vase, *Journal of the Royal Asiatic Society of Great Britain and Ireland*, 1906, p.179.
12. Mitra, Debala: *Buddhist Monuments*, Calcutta, 1972, p.253.
13. Srivastava, K M: *Excavations at Piprahwa and Ganwaria*, Archaeological Survey of India, Janpath, New Delhi, 1996, pp. 7-25 and 56-57.
14. I A R: *Indian Archaeology: A Review*, 1970-71, p. 37; 1971-72, p. 45; 1972-73, p. 33; 1973-74, pp. 27-28; 1974-75, pp. 39-41; 1976-77, pp. 50-52; Journal of Archaeological Survey of India, New Delhi.
15. I A R: *Indian Archaeology: A Review*, Journal of Archaeological Survey of India, New Delhi, 1975-76, pp.47-50.
16. I A R: *Indian Archaeology: A Review*, Journal of Archaeological Survey of India, New Delhi, 1976-77, pp. 49-50.
17. I. A. R.: *Indian Archaeology: A Review*, Journal of Archaeological Survey of India, New Delhi, 1962-63, p. 33.
18. I A R: *Indian Archaeology: A Review*, Journal of Archaeological Survey of India, New Delhi, 1963-64, p. 45; 1974-75, pp. 38-39.
19. Tewari, R and R K Srivastava: Explorations Along the Ami river and its nearby areas in District Siddharthnagar, Basti and Gorakhpur, *Pragdhara*-No. 4, Journal of U. P. State Archaeology Department, Lucknow, pp. 13-39, 1994.

20. I A R: *Indian Archaeology: A Review*, Journal of Archaeological Survey of India, New Delhi, 1995-96, p. 86; IAR 2012-13, pp 180-188.

21. Srivastava, K M: *Excavations at Piprahwa and Ganwaria*, Archaeological Survey of India, Janpath, New Delhi, 1996, pp. 1-54 *ad passim*.

22. Srivastava, K M: *Excavations at Piprahwa and Ganwaria*, Archaeological Survey of India, Janpath, New Delhi, 1996, pp. 55-79 *ad passim*.

23. Srivastava, K M: *Excavations at Piprahwa and Ganwaria*, Archaeological Survey of India, Janpath, New Delhi, 1996, p. 52.

24. Mani, B R and Praveen Kumar Mishra: Further Excavations (2012-13) at Piprahwa, Ganwaria and Tola Salargarh, District Siddharthnagar, Uttar Pradesh, *Puratattava*, Number 43, New Delhi, 2013.

अध्याय -4

जनपद में पुरातात्विक अन्वेषण

2013-14 और 2014-15 के सत्र के दौरान, सिद्धार्थनगर जिले में अन्वेषण कार्य आयोजित किया गया था। अन्वेषण के दौरान, पुरातात्विक महत्व के कुल 45 स्थल पाए गए, जिनमें से कुछ एक ही संस्कृति की उपस्थिति और अन्य, कई संस्कृति की उपस्थिति दर्शाते हैं। अन्वेषित पुरास्थलों की विस्तृत सूची निम्नानुसार है:

क्रमांक	पुरास्थल का नाम	भू-निर्देशांक	प्राप्तियाँ	संभावित काल	टिप्पणियाँ/ संदर्भ
01	अहिरौली	27º24′38″ N; 83º05′11″ E	लाल मृदभाण्ड और ईंट के टुकड़े	मध्ययुगीन	-
02	अवैनिया	27º18′12″ N; 82º32′39″ E	लाल मृदभाण्ड और ईंट के टुकड़े	कुषाण	-

03	बहादुरपुर प्राचीन-1	27º17′09″ N; 82º46′24″ E	जीर्ण-शीर्ण *लखौरी* ईंट की संरचना	मध्ययुगीन	-
04	बहादुरपुर प्राचीन-2	27º17′03″ N; 82º46′22″ E	लाल मृदभाण्ड और ईंट के टुकड़े	मध्ययुगीन	-
05	बरगदवा	27º25′27″ N; 83º04′45″ E	लाल मृदभाण्ड और ईंट के टुकड़े	कुषाण	-
06	बौंडिहार	27º01′40″ N; 82º56′30″ E	कॉर्डेड वेयर, कृष्ण-लोहित मृदभाण्ड, नारंगी-लाल लेपित मृदभाण्ड, कृष्ण	प्राक उत्तर कृष्ण मार्जित मृदभाण्ड काल से कुषाण काल	-

			लेपित मृदभाण्ड, धूसर मृदभाण्ड , उत्तरी कृष मार्जित मृदभाण्ड , लाल मृदभाण्ड और ईंट के टुकड़े; बलुआ पत्थर के टुकड़े		
07	भगवान-जब	27º22′00″ N; 83º10′20″ E	लाल मृदभाण्ड और ईंट के टुकड़े	मध्ययुगीन	-
08	भारत भारी	27º08′30″ N; 82º41′46″ E	लाल मृदभाण्ड और ईंट के	कुषाण से मध्यकाल तक	आईएआर 1996-97, पृष्ठ 126

			टुकड़े		
09	भरथना	27º07′30″ N; 82º59′ E	लाल मृदभाण्ड और ईंट के टुकड़े	पूर्व मध्यकाल से मध्यकाल के अंत तक	-
10	बर्डपुर	27^{0}23' N 83^{0}07' E	लाल मृदभाण्ड, ईंट का *स्तूप*	कुषाण, गुप्त काल	आईएआर 1976-77 पीपी 49-50; आईएआर 1996-97, पृष्ठ 129
11	बुधि खास 1	27º23′05″ N; 82º36′05″ E	लाल मृदभाण्ड और ईंट के टुकड़े	कुषाण, गुप्त और प्रारंभिक मध्यकाल	आईएआर 1995-96, पृष्ठ 86
12	बूढ़ी खास 2	27º23′18″ N; 82º36′05″ E	जानवरों की मृणमूर्तिया , ईंट के टुकड़े	कुषाण, मध्यकाल	आईएआर 1995-96, पृष्ठ 86
13	चंद्र-गद्दी	27º09′ N; 82º56′ E	लाल	मध्ययुगी	-

	(महादेव)		मृदभाण्ड और ईंट के टुकड़े	न	
14	चरथरी (मंदिर-1)	27º07′45″ N; 82º58′45″ E	शिव मंदिर	लगभग 200 साल पुराना	-
15	चरथरी (मंदिर-2)	27º07′30″ N; 82º58′50″ E	शिव मंदिर	लगभग 200 साल पुराना	-
16	चंवर डीह	27º11′45″ N; 82º55′50″ E	लाल मृदभाण्ड और ईंट के टुकड़े	मध्यकाल के अंत में	-
17	दानियापार/ दनियावार	27º03′14″ N; 82º55′53″ E	कॉर्डेड वेयर, कृष्ण-लोहित मृदभाण्ड, कृष्ण लेपित मृदभाण्ड,	प्राक उत्तर कृष्ण मार्जित मृदभाण्ड काल से उत्तर कृष्ण मार्जित	-

			धूसर मृदभाण्ड और लाल मृदभाण्ड	मृदभाण्ड काल	
18	दुर्जनपुर	27º17′44″ N; 83º07′43″ E	लाल मृदभाण्ड और ईंट के टुकड़े	मध्ययुगीन	-
19	गनवरिया	27º26′30″ N; 83º07′16″ E	कॉर्डेड वेयर, कृष्ण-लोहित मृदभाण्ड, कृष्ण लेपित मृदभाण्ड, लाल मृदभाण्ड	प्राक उत्तर कृष्ण मार्जित मृदभाण्ड काल से कुषाण काल	आईएआर 1971-72, पृष्ठ 79; आईएआर 1975-76, पृष्ठ 47-50; आईएआर 1976-77, 50-52; आईएआर 2012-13, पृष्ठ 180-188
20	इमलीडीह (दसिया)	27º14′40″ N; 82º54′53″ E	कृष्ण लेपित	कुषाण और	आईएआर 1996-97,

			मृदभाण्ड, धूसर मृदभाण्ड , लाल मृदभाण्ड और ईंट के टुकड़े	मध्यकाल	पृष्ठ 131
21	जोगिया -1	27º14′59″ N; 83º00′15″ E	कृष्ण-लोहित मृदभाण्ड, कृष्ण लेपित मृदभाण्ड, धूसर मृदभाण्ड , नारंगी-लाल लेपित मृदभाण्ड, लाल मृदभाण्ड	उत्तर कृष्ण मार्जित मृदभाण्ड काल के समकालीन, कुषाण और गुप्त काल	आईएआर 1996-97, पृष्ठ 131

			और ईंट के टुकड़े; टेराकोटा *नैग्मेश,* बेलनाकार मनके और मिट्टी की सिकड़ी		
22	जोगिया -2	27º15′24″ N; 83º00′49″E	योगमाया (*जोगमाया*) मंदिर	लगभग 200 साल पुराना	आईएआर 1996-97, पृष्ठ 131
23	काशेहारा (काशीहारा)	27º06′N; 83º00′E	लाल मृदभाण्ड और ईंट के टुकड़े	मध्ययुगीन	-
24	केरमुआ	27º06′57″ N; 82º50′55″E	लाल मृदभाण्ड और ईंट के टुकड़े	मध्ययुगीन	-
25	केशवारे	27º03′03″ N; 82º57′41″E	कृष्ण लेपित	कुषाण और	-

			मृदभाण्ड, धूसर मृदभाण्ड , लाल मृदभाण्ड और ईंट के टुकड़े	मध्यकाल	
26	केवतलिया	27º22′26″ N; 83º13′06″E	लाल मृदभाण्ड और ईंट के टुकड़े	पूर्व मध्यकाल से मध्यकाल के अंत तक	-
27	खजुरिया शर्की	27º26′41″ N; 82º47′31″E	कृष्ण-लोहित मृदभाण्ड, कृष्ण लेपित मृदभाण्ड, धूसर मृदभाण्ड	उत्तरी कृष्ण मार्जित मृदभाण्ड के समकालीन	-

			और लाल मृदभाण्ड; ईंट के टुकड़े		
28	कोपा	27º23′57″ N; 82º42′22″E	लाल मृदभाण्ड और ईंट के टुकड़े	कुषाण और मध्यकाल	-
29	लटेरा	27º14′07″ N; 82º41′17″E	लाल मृदभाण्ड और ईंट के टुकड़े; टेराकोटा त्वचा रबर, खिलौने , पशु मृणमूर्ति और एक खंडित मानव मूर्ति का हाथ	कुषाण और मध्यकाल	-
30	महादेव	27º25′53″ N;	लाल	मध्ययुगी	-

	कुर्मी	83º06′29″E	मृदभाण्ड और ईंट के टुकड़े	न	
31	मलंग बाबा का थान (भारत भारी)	27º08′51″ N; 82º41′42″E	ईंट की संरचना	मध्यकाल के अंत में	-
32	मंझरिया कलां/घोस्यारी	27º02′07″ N; 82º54′40″E	लाल मृदभाण्ड, चमकदार मृदभाण्ड और ईंट के टुकड़े	पूर्व मध्यकाल से मध्यकाल के अंत तक	आईएआर 1996-97, पृष्ठ 126
33	मीरपुर (मीरवापुर)	27º6′56″ N; 82º45′37″E	लाल मृदभाण्ड और ईंट के टुकड़े	मध्ययुगीन	-
34	निहथा	27º06′N; 83º01′E	लाल मृदभाण्ड और ईंट के टुकड़े	कुषाण से मध्यकाल तक	-

35	पलटा देवी	27º24′06″ N; 83º01′35″E	मंदिर	मध्यकाल के अंत में	-
36	पेड़ारी	27º21′38″ N; 82º36′50″E	कृष्ण लेपित मृदभाण्ड, धूसर मृदभाण्ड , लाल मृदभाण्ड और ईंट के टुकड़े	उत्तरी कृष्ण मार्जित मृदभाण्ड काल के समकालीन और कुषाण काल	-
37	पिपरी	27^{0}19'49"N; 83^{0}06'19" E	ईंटों से बना मंदिर	लगभग $8^{वां}$ -$9^{वां}$ ईस्वी	पुरातत्व एवं परंपरा : प्रो डीएन त्रिपाठी सम्मान खंड, 2016
38	पिपरहवा	27º26′30″ N; 83º07′50″E	ईंट का *स्तूप* और विहार	प्राक उत्तरी कृष्ण मार्जित मृदभाण्ड काल से	आईएआर 1970-71, पृष्ठ 37; आईएआर 1971-72, पृष्ठ 45;

				कुषाण काल तक	आईएआर 1972-73, पृष्ठ 33; आईएआर 1973-74, पृष्ठ 27-28; आईएआर 2012-13, पृष्ठ 180-188
39	सालारगढ़	27^{0}26'53" N 83^{0}08'14" E	*स्तूप* और विहार	कुषाण	आईएआर 1975-76, पृष्ठ 47-50; आईएआर 2012-13, पृष्ठ 180-188
40	सेखुयी	27º05′43″ N; 82º55′32″E	लाल मृदभाण्ड और ईंट के टुकड़े; टेराकोटा त्वचा रबर का टुकड़ा	कुषाण	-

41	सेमरियाँ	27º18′53″ N; 83º01′03″E	लाल मृदभाण्ड	मध्ययुगीन	-
42	श्रीबेनवा	27º25′04″ N; 83º07′00″E	लाल मृदभाण्ड और ईंट के टुकड़े	मध्ययुगीन	-
43	तरहर	27º15′02″ N; 82º32′37″E	लाल मृदभाण्ड और ईंट के टुकड़े	कुषाण	-
44	टीरी	27º23′40″ N; 83º05′10″E	कृष्ण लेपित मृदभाण्ड, धूसर मृदभाण्ड , लाल मृदभाण्ड; पशु मृणमूर्ति, कुम्हार का ठप्पा और	कुषाण	-

			ईंट के टुकड़े		
45	उसका	27º07′N; 82º5′E	लाल मृदभाण्ड और ईंट के टुकड़े; टेराकोटा डिस्क	कुषाण, पूर्व मध्यकाल से मध्यकाल तक	-

Figure-3

Explored Sites of the Area

जनपद सिद्धार्थनगर में जल निकायों से जुड़े स्थलों की तालिका।

क्रमांक	पुरास्थल का नाम	भू-निर्देशांक	संभावित काल	जल निकाय
01	अहिरौली	27º24′38″ N; 83º05′11″ E	मध्ययुगीन	तालाब
02	अवैनिया	27º18′12″ N; 82º32′39″ E	कुषाण	नदी
03	बहादुरपुर प्राचीन-1	27º17′09″ N; 82º46′24″ E	मध्ययुगीन	नाला
04	बहादुरपुर प्राचीन-2	27º17′03″ N; 82º46′22″ E	मध्ययुगीन	नाला
05	बरगदवा	27º25′27″ N; 83º04′45″ E	कुषाण	झील और नाला
06	बौंडिहार	27º01′40″ N; 82º56′30″ E	प्राक उत्तर कृष्ण मार्जित मृदभाण्ड काल से कुषाण	नदी

			काल	
07	भगवानपुर	27º22′00″ N; 83º10′20″ E	मध्ययुगीन	नदी
08	भारत भारी	27º08′30″ N; 82º41′46″ E	कुषाण से मध्यकाल तक	झील
09	भरथना	27º07′30″ N; 82º59′ E	पूर्व मध्यकाल से मध्यकाल के अंत तक	नदी
10	बर्डपुर	$27^0$23' N $83^0$07' E	कुषाण, गुप्त काल	तालाब
11	बुधि खास 1	27º23′05″ N; 82º36′05″ E	कुषाण, गुप्त और प्रारंभिक मध्यकालीन	नदी
12	बूढ़ी खास 2	27º23′18″ N; 82º36′05″ E	कुषाण,	नदी

			मध्यकाल	
13	चंद्र-गद्दी (महादेव)	27º09′ N; 82º56′ E	मध्ययुगीन	नदी
14	चरथरी (मंदिर-1)	27º07′45″ N; 82º58′45″ E	लगभग 200 साल पुराना	नदी
15	चरथरी (मंदिर-2)	27º07′30″ N; 82º58′50″ E	लगभग 200 साल पुराना	नदी
16	चंवर डीह	27º11′45″ N; 82º55′50″ E	मध्यकाल के अंत में	नदी
17	दनियापार/दनियावर।	27º03′14″ N; 82º55′53″ E	प्राक उत्तर कृष्ण मार्जित मृदभाण्ड काल से उत्तर कृष्ण मार्जित मृदभाण्ड काल	नदी

18	दुर्जनपुर	27º17′44″ N; 83º07′43″ E	मध्ययुगीन	नाला
19	गनवरिया	27º26′30″ N; 83º07′16″ E	प्राक उत्तर कृष्ण मार्जित मृदभाण्ड काल से कुषाण काल	झील
20	इमलीडीह (दसिया)	27º14′40″ N; 82º54′53″ E	कुषाण और मध्यकाल	नाला
21	जोगिया -1	27º14′59″ N; 83º00′15″ E	उत्तर कृष्ण मार्जित मृदभाण्ड काल के समकालीन, कुषाण और गुप्त काल	नदी

22	जोगिया -2	27º15′24″ N; 83º00′49″E	लगभग 200 साल पुराना	नदी
23	काशेहारा (काशीहारा)	27º06′N; 83º00′E	मध्ययुगीन	नाला
24	केरमुआ	27º06′57″ N; 82º50′55″E	मध्ययुगीन	तालाब
25	केशवारे	27º03′03″ N; 82º57′41″E	कुषाण और मध्यकाल	नाला/नदी
26	केवतलिया	27º22′26″ N; 83º13′06″E	पूर्व मध्यकाल से मध्यकाल के अंत तक	नदी
27	खजुरिया शर्की	27º26′41″ N; 82º47′31″E	उत्तरी कृष्ण मार्जित मृदभाण्ड के	तालाब

			समकालीन	
28	कोपा	27º23′57″ N; 82º42′22″E	कुषाण और मध्यकाल	नाला
29	लटेरा	27º14′07″ N; 82º41′17″E	कुषाण और मध्यकाल	नदी
30	महादेव कुर्मी	27º25′53″ N; 83º06′29″E	मध्ययुगीन	तालाब
31	मलंग बाबा का थान (भारत भारी)	27º08′51″ N; 82º41′42″E	मध्यकाल के अंत में	झील
32	मंझरिया कलां/घोस्यारी	27º02′07″ N; 82º54′40″E	पूर्व मध्यकाल से मध्यकाल के अंत तक	नदी
33	मीरपुर (मीरवापुर)	27º6′56″ N; 82º45′37″E	मध्ययुगीन	नाला

34	निहथा	27º06′N; 83º01′E	कुषाण से मध्यकाल तक	नाला
35	पलटा देवी	27º24′06″ N; 83º01′35″E	मध्यकाल के अंत में	नदी
36	पेड़ारी	27º21′38″ N; 82º36′50″E	उत्तरी कृष्ण मार्जित मृदभाण्ड काल के समकालीन और कुषाण काल	नाला
37	पिपरी	$27^0$19'49"N; $83^0$06'19" E	लगभग $8^{वां}$ -$9^{वां}$ ईस्वी	तालाब
38	पिपरहवा	27º26′30″ N; 83º07′50″E	प्राक उत्तरी कृष्ण मार्जित	झील

			मृदभाण्ड काल से कुषाण काल तक	
39	सालारगढ़	$27^0$26'53" N $83^0$08'14" E	कुषाण	झील
40	सेखुयी	27º05′43″ N; 82º55′32″E	कुषाण	तालाब/ नाला
41	सेमरियाँ	27º18′53″ N; 83º01′03″E	मध्ययुगीन	तालाब
42	श्रीबेनवा	27º25′04″ N; 83º07′00″E	मध्ययुगीन	झील
43	तरहर	27º15′02″ N; 82º32′37″E	कुषाण	नदी
44	टीरी	27º23′40″ N; 83º05′10″E	कुषाण	झील
45	उसका	27º07′N; 82º5E	कुषाण, पूर्व मध्यकाल से मध्यकाल तक	नदी

अध्याय-5
अन्वेषित पुरास्थलों का विवरण

अन्वेषण के दौरान, पुरातात्विक महत्व के कुल पैंतालीस स्थलों का पता लगाया गया था। इन स्थलों का विस्तृत विवरण निम्नानुसार है:

अहिरौली (27º24′38″ N; 83º05′11″ E)

अहिरौली का प्राचीन टीला सिद्धार्थनगर के जनपद मुख्यालय से 16 किमी उत्तर में स्थित है। यह अलीगढ़वा रोड पर पहले 11 किमी के लिए बर्डपुर तक, उसके बाद बर्डपुर-शोहरतगढ़ रोड पर कोहरडिहवा तक 03 किमी, फिर कोहरडिहवा-अलीगढ़वा रोड पर 02 किमी के लिए पुरायस्थल तक पहुंचने योग्य है। वर्तमान में टीले के कोई अवशेष नहीं हैं, क्योंकि नियमित खेती के कारण इसे लगभग समतल कर दिया गया है। टीले के पूर्व में एक तालाब और एक आधुनिक मंदिर है। वर्तमान गांव अहिरौली इस प्राचीन स्थल के दक्षिण में स्थित है।

टीले का क्षेत्रफल लगभग 200x200 मीटर है, जो आसपास की जमीन की सतह से 01 मीटर की अनुमानित ऊंचाई के साथ है।

यहाँ से केवल लाल मृदभाण्ड तथा कुछ ईंटों के टुकड़े ही प्राप्त हुए हैं। मृदभांडों के मुख्य आकार ऊर्ध्वाधर रिम वाले कटोरे हैं, आंतरिक रूप से मोटे रिम, बेसिन वाले कटोरे, हांडी और जार भी मिलते हैं।

पुरातात्विक अवशेषों के आधार पर, यह पुरास्थल मध्ययुगीन काल से संबंधित हो सकती है।

अवैनिया (27°18′12″ N; 82°32′39″ E)

यह स्थल सिद्धार्थनगर के जनपद मुख्यालय से 75 किमी दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। सिद्धार्थनगर-बस्ती मार्ग पर पहले 20 किमी तक रानीगंज तक, फिर रानीगंज से 30 किमी पश्चिम में इटवा तक, उसके बाद इटवा-बिस्कोहर मार्ग पर 12 किमी तक कोहदौरा *चौराहा* तक पहुंचा जा सकता है। फिर कोहदौरा *चौराहा* के दक्षिण में 13 किमी आगे राप्ती नदी इस स्थल के पश्चिम में 03 किमी की दूरी पर प्रवाहित होती है। वर्तमान में टीले का अधिकांश हिस्सा वर्तमान बसने वालों द्वारा कब्जा कर लिया गया है; टीले का केवल पश्चिमी भाग बंजर है, जो झाड़ियों (नरकट) और पेड़ों से ढका हुआ है। इस पर शिव मंदिर, दुर्गा मंदिर, *समय माई का स्थान, कालिका बाबा* (स्थानीय देवता) और टीले के शीर्ष पर एक प्राथमिक विद्यालय हैं।

पुरास्थल आसपास की जमीन की सतह से लगभग 10 मीटर की ऊंचाई के साथ लगभग 1000x1000 मीटर के क्षेत्र में विस्तृत है।

यहाँ लाल मृदभाण्ड, धूसर मृदभाण्ड और ईंटों के टुकड़े मिलते हैं। लाल मृदभाण्ड में मुख्य आकार घुमावदार रिम वाले कटोरे, कलश, हांडी और बेसिन हैं। धूसर मृदभाण्ड में कटोरे और कुछ आकारहीन टुकड़े ही मिले हैं।

मृदभांडों के आधार पर यह पता चलता है कि यह स्थल कुषाण काल के दौरान बसा हुआ था।

बहादुरपुर प्राचीन -1 (27º17′09″ N; 82º46′24″ E)

यह स्थल सिद्धार्थनगर के जनपद मुख्यालय से 44 किमी दक्षिण-पश्चिम में है। सिद्धार्थनगर-बस्ती रोड पर पहले 21 किमी रानीगंज तक, फिर इटवा रोड पर टिकुइया तक 22 किमी, उसके बाद सड़क के दाईं ओर 1 किमी तक पहुंचने योग्य है। वर्तमान में साइट पर दो कब्रें हैं। वहाँ एक *नाला* इस पुरास्थल के पूर्व में 2 किमी की दूरी पर है।

यहाँ एक *लखौरी* ईंटों से निर्मित जीर्ण-शीर्ण संरचना है। इस संरचना का क्षेत्रफल लगभग 27.43x21.33 मीटर है। इस संरचना के द्वार की ऊंचाई लगभग 12 मीटर है। संरचना में दीवारें और गुंबद शामिल थे। संभवतः यह मध्यकाल के

उत्तरार्ध के दौरान किसी शासक का एक ठहराव स्थान था। (प्लेट-IV)

बहादुरपुर प्राचीन -2 (27º17′03″ N; 82º46′22″ E)

यह स्थल सिद्धार्थनगर के जनपद मुख्यालय से 44.5 किमी दक्षिण-पश्चिम में है। सिद्धार्थनगर-बस्ती मार्ग पर पहले रानीगंज तक 21 किमी, फिर इटवा रोड पर टिकुइया तक 22 किमी, उसके बाद सड़क के दाईं ओर 1.5 किमी तक पहुंचने योग्य है। यह पुरास्थल आसपास की जमीन की सतह से 1.5 मीटर की अनुमानित ऊंचाई के साथ 200x200 मीटर के क्षेत्र में फैला हुआ है। वर्तमान में इस टीले पर एक प्राथमिक विद्यालय के साथ एक बाग है। यहाँ एक *नाला* पूर्व में 2 किमी की दूरी पर है।

यहाँ से लाल मृदभाण्ड और ईंटों के टुकड़े प्राप्त होते हैं। इनके मुख्य आकार *हांडी* और कलश हैं।

मृदभांडों के आधार पर, यह पुरास्थल मध्ययुगीन काल से संबंधित हो सकता है।

बरगदवा (27º25′27″ N; 83º04′45″ E)

यह स्थल सिद्धार्थनगर के जनपद मुख्यालय से 19 किमी उत्तर में है। यह स्थल पहले 11 किमी के लिए बर्डपुर तक, फिर बाझा रोड पर टीरी के माध्यम से 8 किमी है। यह पुरास्थल

आसपास की जमीन की सतह से 2 मीटर की अनुमानित ऊंचाई के साथ 200x200 मीटर के क्षेत्र में फ़ैला हुआ है। टीला वर्तमान में यहाँ निवास करने वालों द्वारा बसा हुआ है और अधिकांश क्षेत्र पर खेती होती है। बर्डपुर-बजहा सड़क भी इसी टीले से होकर गुजरती है। बजहा *ताल* (झील) पुरास्थल के उत्तर में 2 किमी की दूरी पर है और एक किमी की दूरी पर एक *नाला* पश्चिम में 4 किमी की दूरी पर है।

इस पुरास्थल पर केवल लाल मृदभाण्ड और ईंटों के टुकड़े ही प्राप्त होते हैं। लाल मृदभाण्ड में घुमावदार रिम वाले छिछलेकटोरे, कलश, जार और हांडी मिलते हैं।

इन मृदभांडों के विश्लेषण से पता चलता है कि यह स्थल कुषाण काल के दौरान बसा हुआ था।

बौंडिहार (27º01′40″ N; 82º56′30″E)

यह स्थल सिद्धार्थनगर के जनपद मुख्यालय के दक्षिण में 44 किमी की दूरी पर स्थित है। सिद्धार्थनगर-बस्ती मार्ग पर पहले 22 किमी बांसी तक, उसके बाद 13 किमी बांसी-गोरखपुर मार्ग से खेसरहाँ तक, फिर घोसियारी बौंडीहार मार्ग पर 07 किमी तक पुनः वर्तमान गांव के दक्षिण में 02 किमी आगे *बबूल* जंगल तक इस पुरास्थल पर पहुंचा जा सकता है।

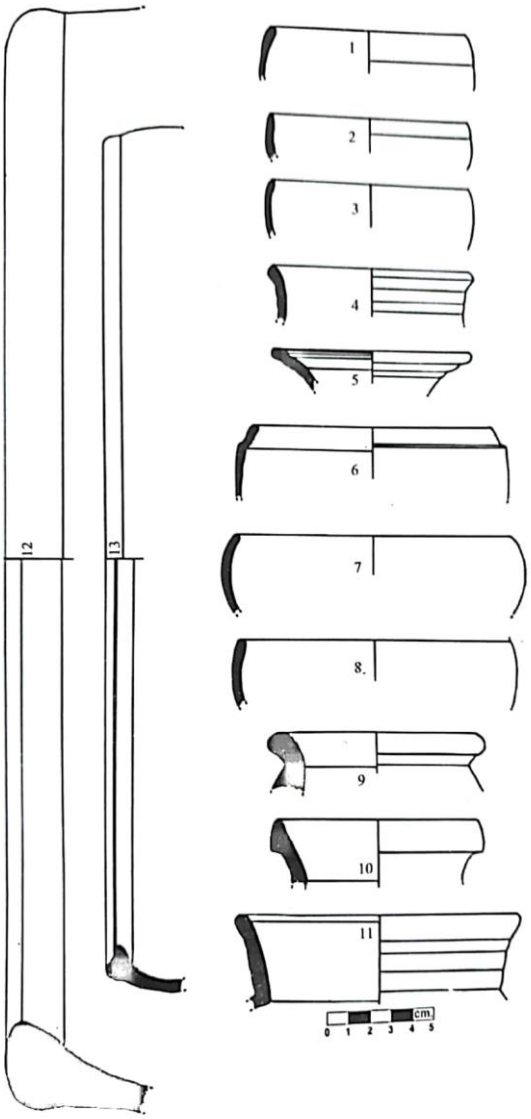

Figure-4

यह पुरास्थल आसपास की जमीन की सतह से 02 मीटर की अनुमानित ऊंचाई के साथ 1 किमी x 500 मीटर के क्षेत्र में फ़ाइल हुआ है। यह स्थल बूधी नदी के पश्चिमी तट पर स्थित है।

टीले की सतह से कॉर्ड-निशान वाले लाल मृदभाण्ड, कृष्ण-लोहित मृदभाण्ड, कृष्ण लेपित मृदभाण्ड, धूसर मृदभाण्ड, उत्तरी कृष्ण लेपित मृदभाण्ड और लाल मृदभाण्ड के अवक्षसह प्राप्त हुए हैं, यह भाग टीले का मध्य भाग है। लेकिन गांव की तरफ, केवल लाल मृदभाण्ड के अवशेष मिलते हैं। टीले की सतह से बलुए पत्थर के कुछ टुकड़े भी प्राप्त हुए हैं।

कॉर्ड-निशान वाले लाल मृदभाण्ड (प्लेट-I.1) के आकारहीन टुकड़े और कृष्ण-लोहित मृदभाण्डमें एक बेसिन मिले हैं। कृष्ण लेपित मृदभाण्ड और धूसर मृदभाण्ड में कटोरे और तश्तरियाँ जबकि उत्तरी क्रिसन मार्जित मृदभाण्ड और नारंगी-लाल लेपित मृदभाण्ड में कुछ छोटे आकारहीन टुकड़े मिले हैं। लाल मृदभाण्ड में कटोरे, तश्तरियाँ, घुमावदार रिम

वाले कटोरे, बेसिन, कलश, जार, हांडी, नाद और संग्रह जार हैं। यहाँ से एक पशु मृणमूर्ति (?) का टुकड़ा भी प्राप्त किया गया है, जिसके बाहरी हिस्से पर मुहर लगी हुई है। (प्लेट-I.2)

इन पुरातात्विक सामग्रियों के विश्लेषण के आधार पर, यह पुरास्थल प्राक उत्तर कृष्ण मार्जित मृदभाण्ड काल से कुषाण काल तक अधिवासित हो सकती है।

पुरास्थल से मृदभाण्ड के टुकड़ों के कुछ नमूने हैं जिनका विवरण निम्नानुसार दिया गया है:

चित्र-4

1. धूसर मृदभाण्ड के कटोरे का टुकड़ा, बाहर के नीचे हल्के खांचे के साथ घुमावदार गाढ़ा रिम, गोलाकार आकार, अच्छी सतह, पतले, धूसर कोर।
2. लाल-काले रंग के मृदभाण्ड के कटोरे का टुकड़ा, बाहरी रूप से काला और अनादर लाल, ऊर्ध्वाधर रिम, अच्छी सतह , पतले, धूसर कोर।
3. धूसर मृदभाण्ड के कटोरे का टुकड़ा, थोड़ा घुमावदार रिम, गोलाकार आकार, अच्छी सतह, पतले, ग्रे कोर।
4. धूसर रंग के एक कलश का टुकड़ा, जिसमें बाहर तीन खांचे हैं, अच्छी सतह, पतले, काला कोर।

5. लाल रंग के एक कलश का टुकड़ा, संकुचित गरदन, जिसमें बाहर तीन खांचे हैं और एक अंदर, अच्छी सतह , मध्यम, काला कोर।
6. कृष्ण लेपित मृदभाण्ड के एक कटोरे के टुकड़ा, ऊर्ध्वाधर रिम, बाहरी सतह पर एक कॉर्ड, गोलाकार आकार, अच्छी सतह, पतले, धूसर कोर।
7. धूसर मृदभाण्ड के कटोरे का टुकड़ा, घुमावदार रिम, गोलाकार आकार, अच्छी सतह , पतले, धूसर कोर।
8. लाल लेपित मृदभाण्ड के कटोरे का टुकड़ा, आंतरिक रूप से मोटा रिम, गोलाकार आकार, अच्छी सतह, पतला, लाल कोर।
9. लाल लेपित मृदभाण्ड के कलश का टुकड़ा, बाहरी हिस्से पर लाल लेप के निशान, बाहर की ओर मुड़े हुए सिकुड़ी हुई गर्दन, मध्यम सतह, मध्यम, लाल-भूरे रंग का कोर।
10. लाल मृदभाण्ड के कलश का टुकड़ा, सतह सादी, कली के आकार का रिम, अवतल गर्दन, मध्यम सतह, मध्यम, लाल कोर।
11. हलके लाल मृदभाण्ड के एक जार का टुकड़ा, कम पका, चार खांचे के साथ मनके के आकार का रिम, मध्यम सतह, मध्यम, काला कोर।

12. हलके लाल मृदभाण्ड का टुकड़ा, मिट्टी में छोटे ग्रिट और धान की भूसी, गदा जैसा रिम, मोटी सतह, मोटे, काले रंग के कोर।
13. लाल मृदभाण्ड के एक बेसिन का टुकड़ा, बाहरी हिस्से पर लाल लेप के निशान, शीर्ष पर गहराई के साथ घुमावदार रिम, मध्यम सतह, मध्यम, लाल-काले कोर।

चित्र-5

1. नारंगी-लाल रंग के लेपित मृदभाण्ड के तश्तरी का टुकड़ा, दोनों तरफ लाल लेप के निशान, घुमावदार रिम, उत्तल आकार, अच्छी सतह, पतले, लाल कोर।
2. धूसर मृदभाण्ड के एक तश्तरी का टुकड़ा, बाहरी हिस्से पर एक खांचे के साथ पतला रिम, उत्तल आकार, अच्छी सतह, पतले, धूसर कोर।
3. उत्तरी कृष्ण लेपित मृदभाण्ड (द्वि रंगी) के एक तश्तरी का टुकड़ा, थोड़ा घुमावदार रिम, उत्तल आकार, अच्छी सतह, पतला, धूसर कोर।
4. धूसर मृदभाण्ड के एक तश्तरी का टुकड़ा, थोड़ा मोटा रिम, उत्तल आकार, अच्छी सतह , पतला, धूसर कोर।

5. धूसर मृदभाण्ड के एक तश्तरी का टुकड़ा, थोड़ा घुमावदार और मोटा रिम, उत्तल आकार, अच्छी सतह , पतला, धूसर रंग का कोर।
6. धूसर रंग के मृदभाण्ड तश्तरी का एक टुकड़ा, दोनों किनारों पर काले रंग का धब्बा, घुमावदार और थोड़ा मोटा रिम, उत्तल आकार, अच्छी सतह, पतला, धूसर कोर।
7. धूसर मृदभाण्ड के एक तश्तरी का टुकड़ा, बाहरी हिस्से पर हल्के खांचे के साथ थोड़ा घुमावदार रिम, उत्तल आकार, अच्छी सतह , पतले, धूसर कोर।
8. लाल रंग के मृदभाण्ड के एक जार का टुकड़ा, दोनों तरफ लाल लेप के निशान, मिट्टी में छोटे ग्रिट्स होते हैं, बाहर की ओर रिम के साथ फैला मुंह, अवतल गर्दन, मध्यम सतह, मध्यम, लाल रंग की रेखाओं के साथ ग्रे कोर।
9. हलके लाल मृदभाण्ड के जार का टुकड़ा, मिट्टी में छोटे ग्रिट्स होते हैं, थोड़ा घुमावदार और मोटा रिम, मध्यम सतह, मध्यम, धूसर कोर।
10. लाल मृदभाण्ड के एक जार का टुकड़ा, मिट्टी में छोटे ग्रिट्स, बाहर की ओर फैला रिम और लंबी अवतल गर्दन, मध्यम सतह, मध्यम, लाल कोर।

11. हलके लाल मृदभाण्ड के बेसिन का टुकड़ा, अच्छी तरह पका नहीं, अंडाकार कॉलर वाला रिम, मध्यम सतह, मध्यम, काला कोर।

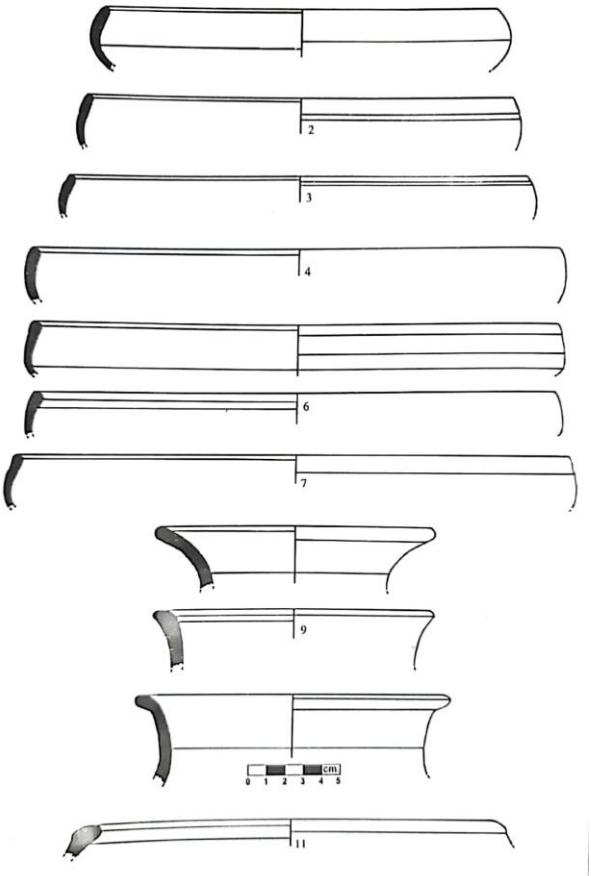

Figure-5

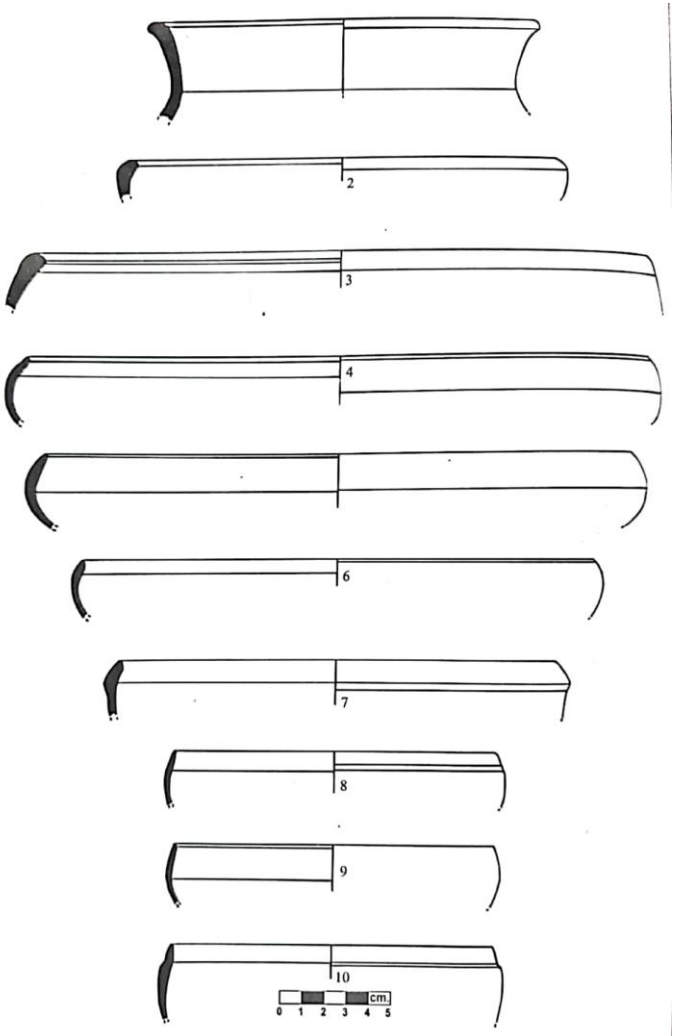

Figure-6

चित्र-6

1. लाल मृदभाण्ड के एक जार का टुकड़ा, दोनों तरफ लाल लेप के निशान, थोड़ा सा घुमावदार रिम, मिट्टी में छोटे ग्रिट्स, अवतल गर्दन, मध्यम सतह, मध्यम, लाल कोर।
2. लाल मृदभाण्ड के कटोरे का टुकड़ा, थोड़ा घुमावदार और मोटा रिम, जिसमें लाल रंग की रेखाओं के साथ घुमावदार सतह, मध्यम सतह, मध्यम, धूसर कोर।
3. लाल मृदभाण्ड के बेसिन का टुकड़ा, बाहरी रूप से मोटा रिम, बाहर हल्का गहरा और रिम के नीचे एक नाली, मध्यम सतह, मध्यम, लाल कोर।

भगवानपुर (27°22′ N; 83°10′20″ E)

यह स्थल सिद्धार्थनगर के जनपद मुख्यालय से 17 किमी उत्तर में स्थित है। यह स्थल पहले 11 किमी बर्डपुर, फिर 6 किमी बर्डपुर-ककरहवा रोड पर पहुंचने योग्य है। यह स्थल तिलार नदी के पश्चिमी तट पर स्थित है। वर्तमान में टीले पर एक ट्यूबवेल है और टीले के बाकी हिस्से में खेती की जा रही है। यह पुरास्थल 2 मीटर की अनुमानित ऊंचाई के साथ 300x200 मीटर के क्षेत्र में फ़ैला हुआ है।

यहाँ से लाल मृदभाण्ड और ईंटों के टुकड़े प्राप्त होते हैं। लाल मृदभाण्ड में आंतरिक रूप से मोटे रिम के साथ छिछलेकटोरे, बेसिन और कलश मिलते हैं।
मृदभांडों के आधार पर, यह पुरास्थल मध्ययुगीन काल से संबंधित हो सकती है।

भारत भारी (27º08′30″ N; 82º41′46″ E)

यह सिद्धार्थनगर के जनपद मुख्यालय के दक्षिण-पश्चिम में 52 किमी की दूरी पर स्थित है। पहले 22 किमी तक सिद्धार्थनगर-बस्ती मार्ग पर बांसी तक, फिर बांसी-डुमरियागंज मार्ग पर बांसी से सोनहटी तक 25 किमी और सोनहटी से भारत भारी तक 05 किमी दक्षिण-पूर्व में पहुंचने योग्य है। साइट के दक्षिण-पश्चिम में एक झील है।

भारत भारी का पुरातात्विक स्थल 800x800 मीटर के क्षेत्र में फैला हुआ है, जो आसपास की जमीन की सतह से लगभग 07 मीटर की ऊंचाई पर है। वर्तमान में लगभग पूरा टीला घनी आबादी से आच्छादित है। शेष दक्षिणी भाग में खेती होती है।

यहाँ लाल मृदभाण्ड और ईंटों के टुकड़े प्राप्त होत्र हैं। लाल मृदभाण्ड में मुख्य आकार कटोरे, बेसिन, कलश, ढक्कन, जार और संग्रह जार हैं। मृदभांडों के आधार पर यह कहा जा

सकता है कि यह पुरास्थल पूर्व मध्यकाल से मध्यकाल तक अधिवासित था।

भरथना (27º07′30″ N; 82º59′ E)

यह स्थल 33 किमी की दूरी पर सिद्धार्थनगर के जनपद मुख्यालय के दक्षिण में स्थित है। सिद्धार्थनगर-बस्ती मार्ग पर पहले 22 किमी बांसी तक, उसके बाद बांसी-गोरखपुर मार्ग पर 05 किमी और आगे सड़क के पूर्व में 06 किमी और फिर चरथरी मंदिर स्थल से 01 किमी पूर्व तक पहुंचा जा सकता है। राप्ती नदी 5 किमी की दूरी पर पुरास्थल के उत्तर-पूर्व में प्रवाहित होती है।

टीले का क्षेत्रफल 150x100 मीटर है जिसमें आसपास की जमीन की सतह से अनुमानित ऊंचाई 1.5 मीटर है। टीले पर एक सरकारी नलकूप है। वर्तमान में टीले पर खेती की जा रही है।

1.28 मीटर (आंतरिक) और 1.70 मीटर (बाहरी) के व्यास के आकार की ईंटों से बना एक कुआं है। प्रयुक्त ईंटों की लंबाई अधिकतम 32 सेमी/न्यूनतम 28 सेमी, चौड़ाई 18 सेमी और मोटाई 10.5 सेमी है। पुरास्थल से एक अज्ञात पत्थर का टुकड़ा मिला है। (प्लेट- I.4)

यहाँ से लाल मृदभाण्ड और ईंटों के टुकड़े प्राप्त हुए हैं। लाल मृदभाण्ड में मुख्य आकार कटोरे, कलश, हांडी और जार हैं।

निष्कर्षों के आधार पर, यह पुरास्थल पूर्व मध्यकाल से मध्यकाल तक अधिवासित था।

बर्डपुर (27^{0}23' N 83^{0}07 'ई)

यह स्थल सिद्धार्थनगर के जनपद मुख्यालय के उत्तर में 11 किमी दूर है। साइट के पश्चिम में एक तालाब है। इस स्थल का उत्खनन भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के के एम श्रीवास्तव ने 1976-77 के सत्र के दौरान की थी। उत्खनन में लाल मृदभाण्ड के कुछ अवशेष, दो छोटे झुके हुए तांबे के पात्र, एक ईंट का मंच, शायद एक *स्तूप* जिसके ऊपर ढाला हुआ और सजाए गए ईंटों से बना एक वर्गाकार मंदिर था, प्राप्त हुआ थे। ये संरचनाएं कुषाण और गुप्त काल से संबंधित हो सकती हैं।

बुधी खास-1 (27º23′05″ N; 82º36′05″ E)

यह स्थल सिद्धार्थनगर के जनपद मुख्यालय से 66 किमी पश्चिम में है। पहले बांसी होते हुए इटवा तक 50 किमी, फिर इटवा-बिस्कोहर रोड पर 11 किमी, उसके बाद कठौतिया रोड पर 5 किमी उत्तर में पहुंचा जा सकता है। यह पुरास्थल

800x800 मीटर के क्षेत्र में फ़ैला हुआ है, जिसकी अनुमानित ऊंचाई 8 मीटर है। टीले के कुछ पश्चिमी हिस्से को छोड़कर, जहां खेती की जा रही है, टीला पूरी तरह से वर्तमान निवास से बसा हुआ है, । बूढ़ी राप्ती नदी 2 किमी की दूरी पर पुरास्थल के उत्तर में प्रवाहित होती है।

यहाँ लाल मृदभाण्ड, धूसर मृदभाण्ड और ईंटों क टुकड़े मिलते हैं। लाल मृदभाण्ड में मुख्य आकार घुमावदार रिम वाले कटोरे, नाखून की तरह रिम वाले कटोरे, कलश, जार, *हांडी* और संग्रह जार हैं। यहाँ से धूसर मृदभाण्ड के आकारविहीन टुकड़े भी प्राप्त किए गए हैं।

पुरातात्विक अवशेषों के विश्लेषण से पता चलता है कि यह स्थल कुषाण, गुप्त और प्रारंभिक मध्ययुगीन काल के दौरान बसा हुआ था।

बुधी खास-2 (27º23′18″ N; 82º36′05″ E)

यह स्थल सिद्धार्थनगर के जनपद मुख्यालय से 66.5 किमी पश्चिम में है। पहले बांसी होते हुए इटवा तक 50 किमी, फिर इटवा-बिस्कोहर रोड पर 11 किमी, उसके बाद कठौतिया रोड पर 5.5 किमी उत्तर में पहुंचा जा सकता है। यह पुरास्थल 40x40 मीटर के क्षेत्र में फ़ैला हुआ है जिसकी अनुमानित ऊंचाई 4 मीटर है। वर्तमान में कुछ पेड़ों से घिरे टीले पर एक

आधुनिक मंदिर और एक कुआं है। बूढ़ी राप्ती नदी 2 किमी की दूरी पर पुरास्थल के उत्तर में प्रवाहित होती है।

मंदिर में बैल की आकृति जैसी कुछ पशु मृणमूर्तियां हैं, जिनकी पूजा वर्तमान निवासियों द्वारा की जा रही है। शेष टीला ईंटों के टुकड़ों से ढका हुआ है। बहुतायत ईंटों के टुकड़ों से पता चलता है कि यह पुरास्थल एक धार्मिक परिसर हो सकता है। उत्खनन के बिना, उस धार्मिक संप्रदाय के बारे में अनुमान लगाना संभव नहीं है जिससे यह संबंधित था। लेकिन टीले के आकार से पता चलता है कि यह एक *स्तूप* हो सकता है। (प्लेट- V)

पुरातात्विक अवशेषों के आधार पर स्पष्ट होता है कि यह पुरास्थल कुषाण और मध्ययुगीन काल से सम्बन्धित हो सकता है।

चंद्र-गद्दी (महादेव) (27º09′ N; 82º56′ E)

चंद्र-गद्दी का पुरातात्विक स्थल सिद्धार्थनगर के जनपद मुख्यालय के दक्षिण में 26 किमी की दूरी पर स्थित है। यह सिद्धार्थनगर-बस्ती मार्ग पर बांसी तक पहले 22 किमी और फिर बांसी -गोरखपुर मार्ग पर बांसी के दक्षिण पूर्व में 04 किमी तक पहुंचा जा सकता है। राप्ती नदी 3 किमी की दूरी पर पुरास्थल के उत्तर में प्रवाहित होती है।

यह स्थल एक ईंट भट्टे के बगल में स्थित है। पुरास्थल आसपास की जमीन की सतह से 01 मीटर की अनुमानित ऊंचाई के साथ 100x100 मीटर के क्षेत्र में विस्तृत है। चंद्र गद्दी का यह टीला ईंट-भट्ठे के कारण नष्ट हो गया है। प्राचीन बस्ती के अवशेष केवल कृषि क्षेत्र से प्राप्त किए गए हैं।

यहाँ से केवल लाल मृदभाण्ड और ईंटों के टुकड़े ही प्राप्त किए गए हैं। लाल मृदभाण्ड में मुख्य आकार कटोरे, *हांडी*, कलश और जार हैं। मृदभांडों के आधार पर यह पुरास्थल मध्ययुगीन काल से संबंधित हो सकता है। यहाँ से काले रंग में बेलनाकार का कांच का मनका भी मिला है। (प्लेट- I.3)

चरथरी -(मंदिर -1) (27°07′45″ N; 82°58′45″ E)

यह स्थल सिद्धार्थनगर के जनपद मुख्यालय के दक्षिण में 32 किमी की दूरी पर स्थित है। सिद्धार्थनगर-बस्ती मार्ग पर पहले 22 किमी बांसी तक, उसके बाद बांसी-गोरखपुर मार्ग पर 05 किमी और आगे सड़क के पूर्व में 05 किमी तक पहुंचा जा सकता है। राप्ती नदी 4 किमी की दूरी पर इस स्थल के उत्तर-पूर्व में बहती है।

यहाँ ईंटों से बना एक मंदिर की संरचना है और जिस पर चूने के मसाले से प्लास्टर किया गया है। यह मंदिर भगवान शिव को समर्पित है। यह 50 मीटर की अनुमानित ऊंचाई के साथ 02 मीटर ऊंचे ईंट के मंच पर बनाया गया है। इस मंदिर की प्रत्येक भुजा 14x14 मीटर वर्गाकार है। मंदिर का गर्भगृह 10 फीट व्यास के साथ अष्टकोणीय है। वहाँ एक *शिवलिंग* के साथ *अरघा* गर्भगृह के केंद्र में बलुए पत्थर से बना है। *शिवलिंग* के साथ *अरघा* की ऊंचाई लगभग 1.5 मीटर है और इसका शीर्ष आकार में चौकोर है।

मंदिर की वास्तुशिल्प विशेषताएं स्पष्ट रूप से दर्शाती हैं कि यह लगभग 200 साल प्राचीन है (उत्तर मध्यकाल)।

चरथरी -(मंदिर -2) (27º07′30″ N; 82º58′50″ E)

यह स्थल सिद्धार्थनगर के जनपद मुख्यालय के दक्षिण में 32 किमी की दूरी पर स्थित है। सिद्धार्थनगर-बस्ती मार्ग पर पहले 22 किमी बांसी तक, उसके बाद बांसी-गोरखपुर मार्ग पर 05 किमी और आगे सड़क के पूर्व में 05 किमी तक पहुंचा जा सकता है। राप्ती नदी 4 किमी की दूरी पर इस स्थल के उत्तर-पूर्व में बहती है।

यह एक मंदिर स्थल भी है, जो चरथरी के मंदिर -1 से 200 मीटर दक्षिण-पश्चिम में स्थित है और पूर्व-पश्चिम की ओर उन्मुख है। यह मंदिर भगवान शिव को समर्पित है। यह मंदिर *लखौरी* ईंटों से निर्मित है। इसमे कुछ बाद की अवधि में निर्माण कार्य किया गया। यह 14.5x14.5 मीटर के क्षेत्र के साथ 1.5 मीटर ऊंचे मंच पर बनाया गया है। मंदिर का गर्भगृह 08 फीट व्यास के साथ अष्टकोणीय है। मंदिर 50x50 मीटर के क्षेत्र के साथ एक बड़े परिसर से आवृत्त है। परिसर की दीवार *लखौरी* ईंटों से निर्मित है।

मंदिर के सामने एक और आधुनिक निर्माण है, जिसमें मंदिर की एक विशाल घंटी है। वहाँ मंदिर के पूर्व में बलुए पत्थर से बना एक *ध्वज स्तम्भ* है। मंदिर के पश्चिम में एक तालाब है।

यह मंदिर उत्तर मध्यकाल का है।

चंवर डीह (27º13′07″ N; 82º57′54″ E)

चंवर डीह का पुरास्थल सिद्धार्थनगर के जनपद मुख्यालय के दक्षिण में 21 किमी की दूरी पर स्थित है। सिद्धार्थनगर-बांसी मार्ग पर रानीगंज बाजार तक पहले 18 किमी, उसके बाद इटवा रोड पर 02 किमी और सड़क के उत्तर में 01 किमी तक

पहुंचा जा सकता है। टीले का क्षेत्रफल 200x200 मीटर है जिसमें आसपास की जमीन की सतह से अनुमानित ऊंचाई 1.5 मीटर है। टीले के पूर्वी भाग पर आधुनिक कॉलेज है और *लखौरी* ईंटों से बना हुआ एक कब्रिस्तान है । टीले के बाकी हिस्से में खेती होती है। राप्ती नदी पुरास्थल के पूर्व में बहती है। पुरास्थल के उत्तर में एक तालाब भी है।

यहाँ से लाल मृदभाण्ड और ईंटों के टुकड़े प्राप्त हुए हैं। लाल मृदभाण्ड में मुख्य आकार कटोरे, कलश, *हांडी* और जार हैं।

पुरातात्विक अवशेषों के आधार पर, यह पुरास्थल मध्ययुगीन काल के उत्तरार्ध से संबंधित हो सकता है।

दनियापार/दनियावार (27°03′14″ N; 82°55′53″ E)

यह स्थल सिद्धार्थनगर के जनपद मुख्यालय के दक्षिण में 40 किमी की दूरी पर स्थित है। यह सिद्धार्थनगर-बस्ती मार्ग पर पहले 30 किमी तिलौली/करही तक, फिर बेलौहा (खेसरहाँ) मार्ग पर तिलौली के पूर्व में 09 किमी तक पहुंचने योग्य है। करही-बेलौहा सड़क टीले से होकर गुजरती है। दनियापार में पुरातात्विक टीला ईंट-भट्ठे द्वारा नष्ट कर दिया गया है, जो टीले के पश्चिम में स्थित है। पुरास्थल के शेष क्षेत्र का

उपयोग खेती के लिए किया जा रहा है। बूढ़ी नदी टीले के दक्षिण में 01 किमी की दूरी पर बहती है।

पुरास्थल 01 मीटर की अनुमानित ऊंचाई के साथ 400x400 मीटर के क्षेत्र में विस्तृत है।

यहाँ से कॉर्ड-निशान वाले लाल मृदभाण्ड, कृष्ण लोहित मृदभाण्ड, कृष्ण लेपित मृदभाण्ड, नारंगी-लाल लेपित मृदभाण्ड, धूसर मृदभाण्ड और लाल मृदभाण्ड के अवशेष मिले हैं। कॉर्ड-निशान वाले लाल मृदभाण्ड में आकारविहीन टुकड़े (प्लेट I.5 और 7) शामिल हैं, जो हस्तनिर्मित और चक दोनों द्वारा निर्मित हैं; कृष्ण लोहित मृदभांड में एक बेसिन और कुछ आकारविहीन टुकड़े; कृष्ण लेपित मृदभाण्ड में आकारविहीन टुकड़े; नारंगी-लाल रंग लेपित मृदभाण्ड में चैनलयुक्त टोंटीदार पात्र, और धूसर मृदभाण्ड में तश्तरियाँ और कटोरे मिले हैं। कलश, जार, *हांडी* और संग्रह जार लाल मृदभाण्ड में मिलते हैं। केंद्र में छिद्र के साथ मृदभाण्ड से बना सिकड़ी का टुकड़ा पुरास्थल की अन्य खोज हैं। (प्लेट- I.6)

इन पुरातात्विक सामग्रियों के आधार पर यह पुरास्थल प्राक उत्तर कृष्ण मार्जित मृदभांड काल की प्रतीत होता है।

पुरास्थल से मृदभाण्ड के टुकड़ों के कुछ नमूने हैं जिनका विवरण निम्नानुसार दिया गया है:

चित्र-6

4. धूसर मृदभाण्ड के एक तश्तरी का टुकड़ा, थोड़ा घुमावदार पतला रिम, उत्तल आकार, अच्छी सतह , पतला, धूसर कोर ।
5. नारंगी-लाल रंग लेपित मृदभांड के एक तश्तरी का टुकड़ा, बाहरी हिस्से पर काला धब्बा, थोड़ा घुमावदार पतला रिम, उत्तल आकार, अच्छी सतह , पतला, धूसर कोर।
6. धूसर मृदभाण्ड के एक तश्तरी का टुकड़ा, थोड़ा घुमावदार पतला रिम, उत्तल आकार, अच्छी सतह , पतला, धूसर कोर।
7. कृष्ण लोहित मृदभाण्ड के कटोरे का टुकड़ा, अंडाकार कॉलर वाला रिम, अच्छी सतह, पतला, काला कोर।
8. धूसर मृदभाण्ड के कटोरे का टुकड़ा, अकारविहीन पतला रिम, गोलाकार आकार, अच्छी सतह, पतला, धूसर कोर।
9. 8 नंबर जैसा।

10. धूसर मृदभाण्ड के कटोरे का टुकड़ा, बाहर एक कॉर्ड के साथ ऊर्ध्वाधर रिम, गोलाकार आकार, अछि सतह, पतले, धूसर कोर।

चित्र-7

1. लाल मृदभाण्ड के संग्रह जार का टुकड़ा, मिट्टी में छोटे ग्रिट और धान की भूसी, थोड़ा सा घुमावदार रिम, अवतल गर्दन, मोती सतह, मोटे, लाल रंग की रेखाओं के साथ काला कोर।
2. लाल मृदभाण्ड के एक चैनलयुक्त बेसिन का टुकड़ा, बाहरी हिस्से पर लाल लेप के निशान, कली के आकार का रिम, अच्छी सतह, पतला, लाल कोर।
3. लाल मृदभाण्ड के एक जार का टुकड़ा, मिट्टी में छोटे ग्रिट्स और धान की भूसी, हल्का फ़ैला हुआ रिम, तिरछी गर्दन जिसमें दो हल्के खांचे, मध्यम सतह, मध्यम, काला कोर।
4. लाल रंग के मृदभाण्ड के एक जार का टुकड़ा, आकारविहीन रिम, तिरछी गर्दन, मध्यम सतह, मध्यम, लाल रंग की बाहरी रेखाओं के साथ काला कोर।

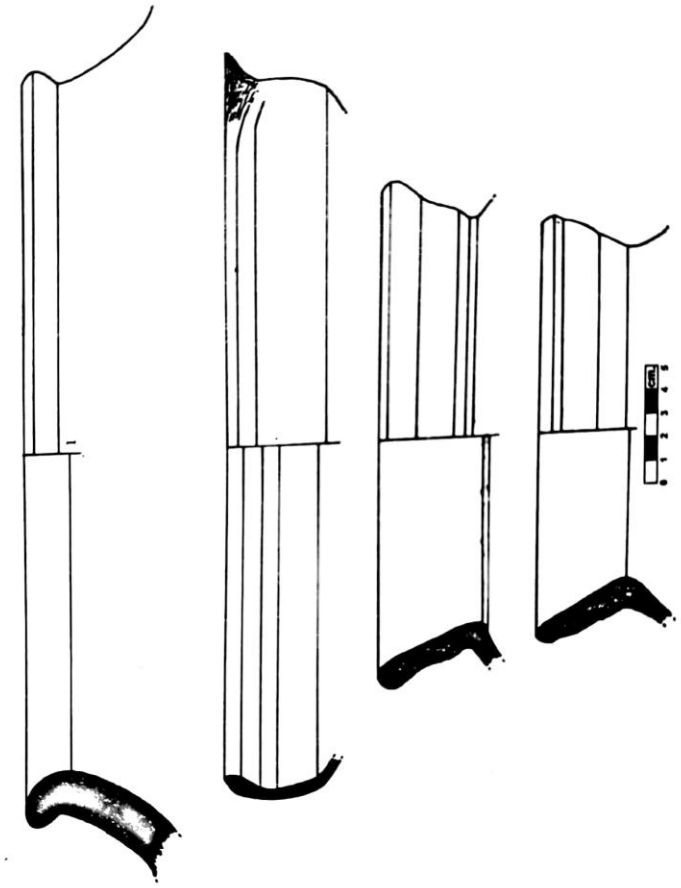

Figure-7

दुर्जनपुर (27º17′44″ N; 83º07′43″ E)

यह स्थल सिद्धार्थनगर के जनपद मुख्यालय से 09 किमी उत्तर-पूर्व में स्थित है। यह सिद्धार्थनगर-लोटन मार्ग पर पटनी जंगल तक पहले 08 किमी के लिए पहुँचा जा सकता है, फिर पुरास्थल के लिए सड़क से 01 किमी पश्चिम में। वहाँ टीले के दक्षिण-पश्चिम में एक *नाला* है । दुर्जनपुर का वर्तमान गाँव टीले शीर्ष पर बसा है और शेष भाग पर खेती की जाती है। पटनी जंगल-मोहाने सड़क इस टीले से होकर गुजरती है।

टीले का क्षेत्रफल लगभग 200x200 मीटर है, जो आसपास की जमीन की सतह से लगभग 2 मीटर की ऊंचाई पर है।

इस पुरास्थल पर लाल मृदभाण्ड और ईंटों के टुकड़े मिलते हैं। लाल मृदभाण्ड में मुख्य आकार आंतरिक रूप से मोटे रिम वाले कटोरे, बेसिन, कलश और जार हैं।

मृदभांडों के विश्लेषण से पता चलता है कि यह पुरास्थल मध्यकाल में अधिवासित था।

गनवरिया (27º26′30″ N; 83º07′16″ E)

यह स्थल सिद्धार्थनगर के जनपद मुख्यालय से 21 किमी दूर है। यह पहले 20 किमी के लिए अलीगढ़वा रोड पर सिद्धार्थनगर के उत्तर में बर्डपुर के माध्यम से और फिर सड़क से 01 किमी पश्चिम में पहुंचने योग्य है। पुरास्थल के पूर्व में 2

किमी की दूरी पर मझौली झील और 2 किमी की दूरी पर पश्चिम में बजहा ताल (झील) है।

इस स्थल का उत्खनन भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के के एम श्रीवास्तव ने किया था। यह एक आवासीय स्थल था। इस पुरास्थल से चार सांस्कृतिक कालों यानी प्राक-उत्तर कृष्ण मार्जित मृदभांड काल, उत्तर कृष्ण मार्जित मृदभांड काल, शुंग और कुषाण काल के बारे में जानकारी मिली। उत्खनन के बाद इस स्थल और पिपरहवा को छठी शताब्दी ईसा पूर्व के समय शाक्य गणराज्य की राजधानी प्राचीन कपिलवस्तु घोषित किया गया।

प्रथम काल के मुख्य मृदभांडों में अच्छी सतह वाले धूसर मृदभाण्ड, कृष्ण लेपित मृदभाण्ड, लाल लेपित मृदभाण्ड, चॉकलेट लेपित मृदभाण्ड और लाल मृदभाण्ड थे। लाल मृदभाण्ड के लाल रिम और भूरे रंग के तल वाले कुछ कलश और तश्तरियाँ, उत्तरी भारत के पश्चिमी भाग में चित्रित धूसर मृदभाण्ड से जुड़े हैं। सादे लाल मृदभाण्ड में कटोरे और तश्तरियों थे। कुछ मृदभांडों के बाहरी हिस्से पर कभी-कभी काले बिंदुओं और वृत्तों में चित्रित दर्पण जैसे पॉलिश पाए जाते हैं। धूसर मृदभाण्ड में मुख्य प्रकार कटोरे, तश्तरियाँ और कलश थे; कटोरे, तश्तरियाँ, कलश और चैनलयुक्त टोंटीदार पात्र लाल-लेपित मृदभाण्ड में मिलते हैं। कृष्ण लेपित या

कृष्ण मार्जित मृदभाण्ड में कटोरे, तश्तरियाँ और पानी के पात्र थे।

द्वितीय काल को उत्तरी कृष्ण मार्जित मृदभाण्ड (एनबीपीडब्ल्यू), कृष्ण लेपित मृदभाण्ड, धूसर मृदभाण्ड और लाल मृदभाण्ड द्वारा दर्शाया गया था। लाल मृदभाण्ड पर काले रंग से क्षैतिज रेखाओं का चित्रण किया गया था। एनबीपीडब्ल्यू में मुख्य आकार कटोरा था। लाल मृदभाण्ड में कटोरे, कलश और चैनलयुक्त टोंटीदार पात्र थे। इस अवधि में विशाल संरचनाओं के अवशेष हैं। (प्लेट- VI और VII)

तृतीय काल में विशिष्ट शुंग कालीन मृदभांड मिले हैं। मृदभांडों के मुख्य प्रकार लाल मृदभाण्ड, धूसर मृदभाण्ड और कृष्ण लेपित मृदभाण्ड थे। कटोरे, कलश, तश्तरियाँ, ढक्कन और बेसिन लाल मृदभाण्ड में प्रमुख आकार थे। धूसर मृदभाण्ड में तश्तरियाँ और कटोरे थे; और कृष्ण लेपित मृदभांड में लघु कलश थे।

चतुर्थ काल में मुख्य रूप से लाल मृदभाण्ड मिले थे। लाल मृदभाण्ड में प्रमुख आकार कटोरे, कलश, बेसिन, नाद, जार, टोंटी और ढक्कन थे। लाल लेपित मृदभाण्ड में कटोरे और छिड़कने वाले पात्र थे। छिड़कने वाले पात्र ने पहली बार अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। धूसर मृदभाण्ड और कृष्ण

लेपित मृदभाण्ड को कटोरे और तश्तरियों द्वारा दर्शाया गया था। इस अवधि में मृदभांडों की सजावट बहुत लोकप्रिय हो गई। कलश के हत्थे को नालीदार और ऊर्ध्वाधर चीरों से सजाया गया था। वृत्त, तिर्यक रेखाएँ, पुष्प अलंकरण, संकेंद्रित वृत्तों के समूह, मछली के कांटे जैसा अलंकरण आदि अन्य महत्वपूर्ण चित्रण थे।

इमलीडीह (दसिया) (27º14′40″ N; 82º54′53″ E)

यह सिद्धार्थनगर के जनपद मुख्यालय के उत्तर-पश्चिम में 21 किमी की दूरी पर स्थित है। सिद्धार्थनगर-बांसी मार्ग पर सूपा तक पहले 13 किमी तक पहुँचा जा सकता है, फिर चेतिया रोड पर सूपा से 8 किमी पश्चिम में। सूपा-चेतिया सड़क टीले के दक्षिण-पश्चिम से होकर गुजरती है। टीले का क्षेत्रफल 250x350 मीटर है और आसपास की जमीन की सतह से अनुमानित ऊंचाई 03 मीटर है। वर्तमान में टीले का उपयोग खेती के उद्देश्य से किया जा रहा है। स्थल पर एक *मदरसा* टीले के पश्चिम में हैं और एक *नाला* टीले के उत्तर-पूर्व में है।

पुरास्थल पर कृष्ण लेपित मृदभाण्ड, धूसर मृदभाण्ड, लाल मृदभाण्ड (लेपित और सादे दोनों) और ईंटों के टुकड़े मिले हैं। लाल मृदभाण्ड में मुख्य आकार कटोरे, कलश, जार और

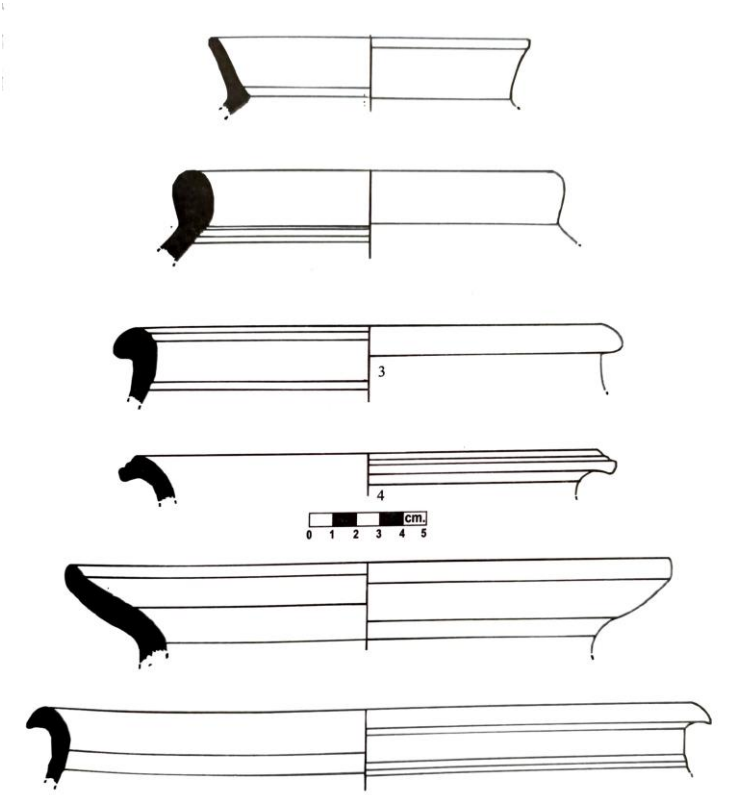

Figure-8

हांडी हैं। कृष्ण लेपित मृदभांड और धूसर मृदभाण्ड में आकारविहीन टुकड़े पाए जाते हैं।

पुरातात्विक निष्कर्षों के आधार पर यह पुरास्थल कुषाण और मध्ययुगीन काल से संबंधित हो सकता है।

चित्र-8

1. लाल मृदभाण्ड के कलश का टुकड़ा, जिसमें रिम, संकुचित गर्दन, मध्यम सतह, पतले, लाल कोर।
2. लाल मृदभाण्ड के एक जार का टुकड़ा, उल्टा रिम, संकुचित गर्दन, मध्यम सतह, मध्यम, लाल कोर।
3. लाल मृदभाण्ड के एक जार का टुकड़ा, जिसमें घुमावदार रिम, दोनों तरफ लाल लेप के निशान, मध्यम सतह, मध्यम, लाल कोर ।
4. लाल मृदभाण्ड के एक जार का टुकड़ा, घुमावदार रिम के शीर्ष पर दो खांचे, अंदर लाल लेप के निशान, मध्यम सतह, पतले, लाल कोर।
5. हल्के लाल मृदभाण्ड के एक जार का टुकड़ा, मिट्टी में अभ्रक के कण, घुमावदार रिम, संकुचित गर्दन, मध्यम सतह, मध्यम, लाल रेखाओं के साथ काला कोर।
6. लाल रंग के मृदभाण्ड हांडी का एक टुकड़ा, घुमावदार रिम, दोनों तरफ लाल लेप के निशान, मध्यम सतह, पतले, लाल रंग की रेखाओं के साथ धूसर कोर।

जोगिया -1 (27º14′59″ N; 83º00′15″ E)

जोगिया का प्राचीन स्थल बूढ़ी राप्ती नदी के उत्तर में 01 किमी की दूरी पर स्थित है। यह सिद्धार्थनगर-बांसी-बस्ती मार्ग के बाईं ओर सिद्धार्थनगर के जनपद मुख्यालय से 11 किमी दक्षिण में है। यहाँ एक जूनियर हाई स्कूल (आदर्श जूनियर हाई स्कूल, जोगिया) और मंदिर हैं। *ब्रह्मा बाबा* (एक स्थानीय देवता), दुर्गा और हनुमान, बाल विकास परियोजना का एक कार्यालय और जोगिया ब्लॉक ब्लॉक का ब्लॉक संसाधन केंद्र, इस प्राचीन टीले पर हैं। बूढ़ी राप्ती नदी टीले के दक्षिण में 1 किमी की दूरी पर बहती है।

टीले का क्षेत्रफल 400x400 मीटर है जिसमें आसपास की जमीन की सतह से लगभग 4 मीटर की ऊंचाई है। टीले के परिधीय क्षेत्र में खेती की जाती है।

इस पुरास्थल पर कॉर्ड-निशान वाले लाल मृदभाण्ड, कृष्ण लोहित मृदभाण्ड, कृष्ण लेपित मृदभाण्ड, धूसर मृदभाण्ड, नारंगी-लाल लेपित मृदभाण्ड, लाल मृदभाण्ड और ईंटों के टुकड़े मिलते हैं। टेराकोटा *नैग्मेश* का सिर (प्लेट- II.1), एक बेलनाकार मनका (प्लेट- II.2) और मृदभांडों के सिकड़ी (प्लेट- II.3) अन्य महत्वपूर्ण पुरावशेष हैं।

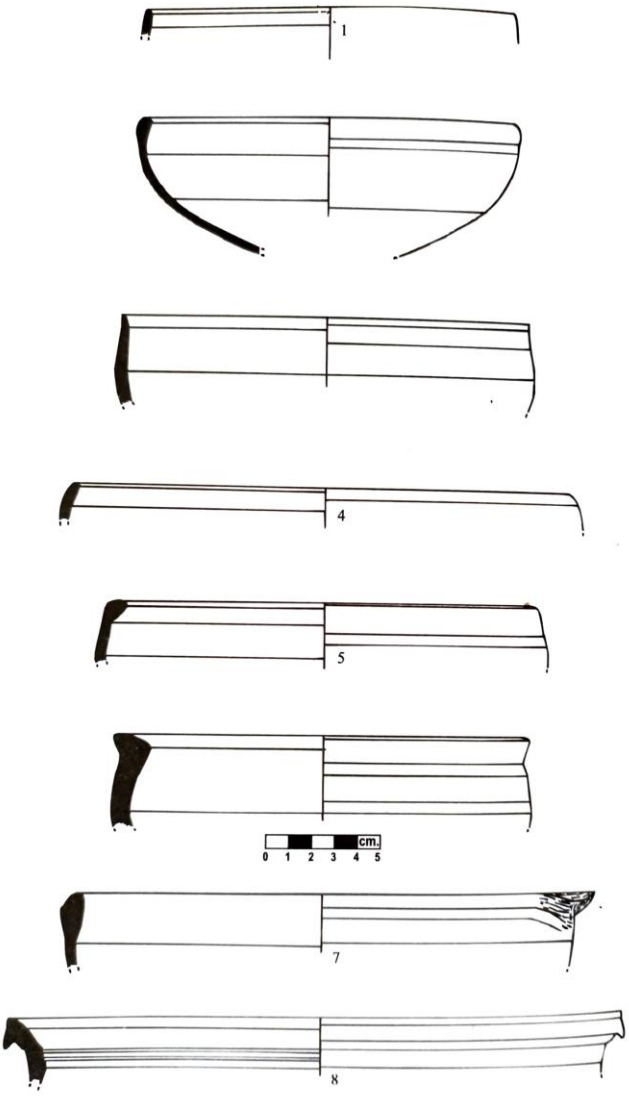

Figure-9

कॉर्ड-निशान वाले लाल मृदभाण्ड और काले और लाल मृदभाण्ड में आकारविहीन टुकड़े मिलते हैं। कृष्ण लेपित मृदभाण्ड में कटोरे; नारंगी-लाल लेपित मृदभाण्ड में चैनलयुक्त टोंटीदर कटोरे और तश्तरियाँ; और धूसर मृदभाण्ड में कटोरे मिलते हैं। लाल मृदभाण्ड में कटोरे, कलश, *हांडी,* जार और संग्रह जार हैं।

सतह से प्राप्त सामग्री के आधार पर, जोगिया -1 का पुरातात्विक स्थल एनबीपीडब्ल्यू के समकालीन, कुषाण और गुप्त काल अधिवासित हो सकता है।

चित्र-9

1. कृष्ण लेपित मृदभांड के कटोरे का टुकड़ा, आकारविहीन रिम, अच्छी सतह , पतला, धूसर कोर।
2. लाल लेपित मृदभांड के छिछले कटोरे का टुकड़ा, गदे के आकार की रिम, अच्छी सतह, पतले, लाल-धूसर रंग का कोर।
3. लाल मृदभाण्ड के कटोरे का टुकड़ा, उल्टा रिम, गोलाकार आकार, अच्छी सतह , पतला, लाल-धूसर कोर।

4. कृष्ण लेपित मृदभांड के एक तश्तरी का टुकड़ा, घुमावदार रिम, उत्तल आकार, अच्छी सतह , पतले, धूसर रंग का कोर।
5. लाल लेपित मृदभांड के एक कटोरे का टुकड़ा, बाहरी हिस्से पर लाल लेप के निशान, तिरछा रिम, अंदर एक नाली, अच्छी सतह, पतले, लाल कोर रिम।
6. हल्के लाल मृदभाण्ड के कटोरे का टुकड़ा, चोंचदार रिम, गोलाकार आकार, दोनों तरफ लाल लेप के निशान, मध्यम सतह, मध्यम, लाल कोर।
7. लाल रंग के लेपित मृदभांड के एक चैनल के टुकड़े में अंडाकार कॉलर वाला रिम, मध्यम सतह, पतला, लाल रंग की रेखा युक्त काला कोर।
8. लाल मृदभाण्ड के हांडी का टुकड़ा, फ़ाइल हुआ रिम, रिम के नीचे दो हल्के खांचे के निशान, मध्यम सतह, मध्यम, लाल कोर।

जोगिया -2 (27º15′24″ N; 83º00′49″E)

जोगिया -2 का प्राचीन स्थल बूढ़ी राप्ती नदी के उत्तर में 500 मीटर की दूरी पर स्थित है। यह सिद्धार्थनगर-बांसी-बस्ती मार्ग के बाईं ओर सिद्धार्थनगर के जनपद मुख्यालय से 11 किमी दक्षिण में है। इसके बाद मुख्य सड़क से 2 किमी दक्षिण-पूर्व में।

पुरास्थल पर *जोगमाया/योगमाया* (दुर्गा) का एक मन्दिर है। *गर्भगृह* में दुर्गा की मूर्ति पिंडी के रूप मैं है। इसी के साथ शिव, हनुमान और गणेश की मूर्तियाँ भी हैं।
स्थानीय परंपरा के अनुसार, मंदिर बहुत प्राचीन है और *शक्तिपीठ से* संबंधित है। इस मंदिर की संरचना से पता चलता है कि यह मध्यकाल के उत्तरार्ध के दौरान बनाया गया था।

काशेहारा (काशीहारा) (27º06′N; 83º00′ E)

यह स्थल सिद्धार्थनगर के जनपद मुख्यालय के दक्षिण में 37 किमी की दूरी पर स्थित है। सिद्धार्थनगर-बस्ती मार्ग पर पहले 22 किमी बांसी तक, उसके बाद बांसी-गोरखपुर मार्ग पर 13 किमी और आगे बेलौहा-मरवटिया बाजार मार्ग पर उत्तर में 01 किमी तक पहुंचने योग्य है, फिर सड़क के बाईं ओर 800 मीटर पर यह स्थल है।

टीले का क्षेत्रफल 100x100 मीटर है और आसपास की सतह से अनुमानित ऊंचाई 1.5 मीटर है। टीले के पूर्व में एक नहर /*नाला* है। वर्तमान में, मिट्टी के उत्खनन के कारण टीला लगभग नष्ट हो गया है।

यहाँ लाल मृदभाण्ड और ईंटों के टुकड़े प्राप्त होते हैं। लाल मृदभाण्ड में मुख्य आकार कटोरे, कलश और हांडी हैं। पुरास्थल के पुरातात्विक निष्कर्ष बताते हैं कि यह स्थान मध्यकाल से संबंधित हो सकता है।

केरमुआ (27º06′57″ N; 82º50′55″ E)

यह पुरास्थल सिद्धार्थनगर के जनपद मुख्यालय के दक्षिण में 35 किमी की दूरी पर स्थित है। यह सिद्धार्थनगर-बस्ती मार्ग पर तिलौली तक पहले 30 किमी के लिए पहुँचा जा सकता है, उसके बाद तिलौली के पश्चिम में 05 किमी है।

टीले का क्षेत्रफल 50x70 मीटर है और आसपास की सतह से अनुमानित ऊंचाई 01 मीटर है। वर्तमान में, पुरास्थल पर खेती की जा रही है। पुरास्थल के दक्षिण-पूर्व में एक तालाब है।

पुरास्थल पर केवल लाल मृदभाण्ड के अवशेष मिलते हैं। इस मृदभाण्ड में मुख्य आकार कटोरे, बेसिन, कलश और जार हैं।

इन पुरातात्विक निष्कर्षों के आधार पर पुरास्थल मध्यकाल से संबंधित हो सकता है।

केशवरे (27º03′03″ N; 82º57′41″ E)

केशवरे का पुरातात्विक स्थल सिद्धार्थनगर के जनपद मुख्यालय के दक्षिण में 39 किमी की दूरी पर स्थित है। यह सिद्धार्थनगर-बस्ती मार्ग पर बांसी तक पहले 22 किमी और फिर 12 किमी बांसी से बेलौहा तक, उसके बाद बेलौहा के पश्चिम में 5 किमी तक पहुंचने योग्य है।

टीले के उत्तर, पश्चिम और दक्षिणी हिस्सों का उपयोग कृषि उद्देश्य के लिए किया जा रहा है और टीले के बाकी हिस्से में एक कब्रिस्तान शामिल है, जो पेड़ों से ढका हुआ है। गांव केशवरे की वर्तमान बस्ती इस प्राचीन स्थल के पूर्व में बसी हुई है। वहाँ पुरास्थल के पूर्वी हिस्से में एक *मदरसा* है। यह पुरास्थल के पूर्वी हिस्से में आसपास की जमीन की सतह से 02 मीटर की अनुमानित ऊंचाई के साथ 100x100 मीटर के क्षेत्र में फ़ैला हुआ है। वहाँ एक *नाला* टीले के दक्षिण में है, जो 01 किमी की दूरी पर बूधी नदी में मिलता है।

पुरास्थल पर कृष्ण लेपित मृदभाण्ड, धूसर मृदभाण्ड और लाल मृदभाण्ड मिलते हैं। कृष्ण लेपित मृदभाण्ड और धूसर मृदभाण्ड में आकारहीन टुकड़े मिलते हैं। लाल मृदभाण्ड में मुख्य आकार कटोरे, तश्तरियाँ, कलश, बेसिन और जार हैं। सतह पर बिखरे हुए ईंटों से पता चलता है कि पुरास्थल पर

संरचनात्मक अवशेष भी थे। पुरास्थल के अन्य पुरावशेष टैम्बोर के आकार के मनका (प्लेट-I.4) और एक पशु की मूर्ति का टुकड़ा (प्लेट- II.6) हैं।

पुरास्थल के पुरातात्विक निष्कर्षों से पता चलता है कि उआह पुरास्थल कुषाण और मध्यकाल से संबंधित हो सकता है।

केवतलिया (27º22′26″ N; 83º13′06″ E)

यह स्थल सिद्धार्थनगर के जनपद मुख्यालय से 18 किमी उत्तर-पूर्व में स्थित है। यह शिवपति नगर के माध्यम से पहले 11 किमी मोहना तक पहुँचा जा सकता है, फिर दफालीपुर के माध्यम से साइट तक 7 किमी है। तिघारा-दूल्हा सड़क टीले के दक्षिण में गुजरती है। दानो नदी टीले के दक्षिण में 01 किमी की दूरी पर बहती है। एक प्राथमिक विद्यालय है और *समय माई का थान* (स्थानीय देवता) टीले पर। टीले के परिधीय क्षेत्र में खेती की जाती है।

टीले का क्षेत्रफल आसपास की जमीन की सतह से लगभग 4 मीटर की ऊंचाई के साथ लगभग 400x400 मीटर है।
पुरास्थल पर लाल मृदभाण्ड और ईंटों के टुकड़े मिलते हैं। इस मृदभाण्ड में मुख्य आकार छिछले कटोरे आंतरिक रूप से मोटा रिम, कलश, *हांडी* और संग्रह जार हैं ।

पुरातात्विक अवशेषों के आधार पर यह पुरास्थल पूर्व मध्यकाल से मध्यकाल तक से संबंधित हो सकता है।

खजुरिया शर्की (27°26′41″ N; 82°47′31″ E)

यह स्थल सिद्धार्थनगर के जनपद मुख्यालय के पश्चिम में 45.5 किमी की दूरी पर स्थित है। यह शोहरतगढ़ होते हुए नौगढ़-बढ़नी सड़क पर ढेबरुआ तक पहले 44 किमी तक पहुंच योग्य है, फिर बढ़नी-इटवा रोड पर 01 किमी, उसके बाद सड़क के पश्चिम में 1/2 किमी है।

प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, अकरहरा और पावर हाउस, खजुरिया शर्की, टीले पर स्थित है। टीले के पश्चिम में एक तालाब, टीले के उत्तरी भाग पर एक आधुनिक मस्जिद और टीले के दक्षिणी भाग पर एक आम का बाग है।

पुरातात्विक अवशेष केवल बाग के मेड़ से पाए गए थे, इसलिए टीले के वास्तविक क्षेत्र को निर्धारित करना बहुत मुश्किल है। संभवतः, यह आसपास की जमीन की सतह से 01 मीटर की अनुमानित ऊंचाई के साथ 400x400 मीटर के क्षेत्र में बिखरा हुआ है।

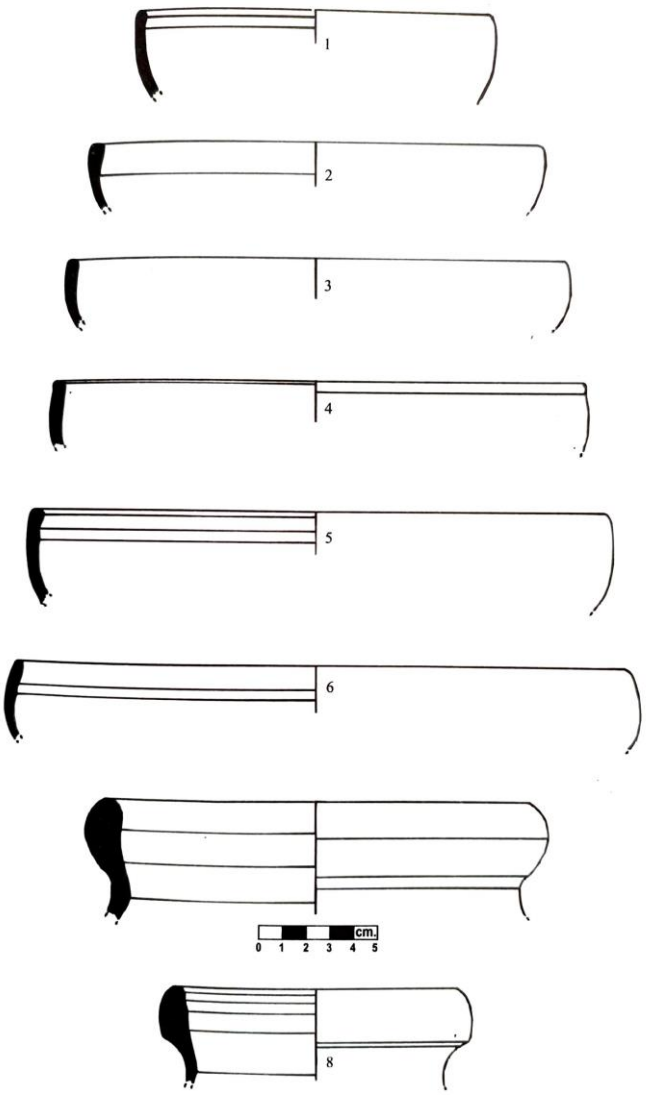

Figure-10

इस पुरास्थल पर कृष्ण लोहित मृदभाण्ड, कृष्ण लेपित मृदभांड, धूसर मृदभाण्ड और लाल मृदभाण्ड प्राप्त हुआ है। कृष्ण लोहित मृदभाण्ड में आकारविहीन टुकड़े हैं, जबकि कृष्ण लेपित मृदभांड में ऊर्ध्वाधर रिम वाले कटोरे, उत्तल प्रोफ़ाइल वाले तश्तरियाँ शामिल हैं। धूसर मृदभाण्ड में उत्तल प्रोफ़ाइल वाले कटोरे और तश्तरियाँ हैं। लाल मृदभाण्ड में कलश, *हांडी,* जार और संग्रह जार हैं।

उपर्युक्त निष्कर्षों के आधार पर, पुरास्थल एनबीपीडब्ल्यू अवधि के समकालीन हो सकती है।
पुरास्थल से मृदभाण्ड के टुकड़ों के कुछ नमूने हैं जिनका विवरण निम्नानुसार दिया गया है:

चित्र-10

1. लाल मृदभाण्ड के कटोरे का टुकड़ा, थोड़ा घुमावदार रिम, गोलाकार आकार, अच्छी सतह , पतले, धूसर रंग का कोर।
2. लाल मृदभाण्ड के एक तश्तरी का टुकड़ा, थोड़ा घुमावदार और मोटा रिम, उत्तल आकार, अच्छी सतह, पतला, धूसर रंग का कोर।

3. लाल मृदभाण्ड के एक तश्तरी का टुकड़ा, थोड़ा घुमावदार और मोटा रिम, उत्तल आकार, अच्छी सतह , पतला, धूसर कोर।
4. कृष्ण लेपित मृदभांड के एक तश्तरी का टुकड़ा, थोड़ा घुमावदार रिम, नीचे एक खांचा, उत्तल आकार, अच्छी सतह, पतले, धूसर कोर।
5. कृष्ण लेपित मृदभांड के एक तश्तरी का टुकड़ा, रिम के नीचे दो हल्के खांचे के साथ थोड़ा घुमावदार रिम, उत्तल आकार, अच्छी सतह , पतले, धूसर कोर।
6. धूसर मृदभाण्ड के एक तश्तरी का टुकड़ा, अंदर की तरफ झुका रिम, उत्तल आकार, अच्छी सतह, पतले, धूसर कोर ।
7. हल्के लाल मृदभाण्ड के एक जार का टुकड़ा, हल्का पाक हुआ, मिट्टी में छोटे ग्रिट्स हैं, संकुचित गर्दन, मध्यम सतह, मध्यम, लाल-काला कोर ।
8. लाल मृदभाण्ड के कलश का टुकड़ा, अंडाकार कॉलर रिम, अवतल गर्दन, मध्यम सतह, मध्यम, लाल कोर।

कोपा (27^0 23′57″ N; 82°42′22″ E)

यह स्थल सिद्धार्थनगर के जनपद मुख्यालय से 52 किमी पश्चिम में स्थित है। यह पहले ढेबरुआ तक 40 किमी के लिए पहुंच योग्य है, फिर ढेबरूआ-इटवा रोड पर सड़क पर 10 किमी

दूर सेमारी तक है। इसके बाद सेमारी-बिस्कोहर रोड पर 2 किमी की दूरी तय की गई। पुरास्थल आसपास की जमीन की सतह से 8 मीटर की अनुमानित ऊंचाई के साथ 1000x1000 मीटर के क्षेत्र में विस्तृत है। टीले के उत्तर-पश्चिम में एक *नाला* है।

यहाँ लाल मृदभाण्ड और ईंटों के टुकड़े मिलते हैं। लाल मृदभाण्ड में मुख्य आकार घुमावदार रिम के साथ छिछले कटोरे, कलश, जार और बेसिन हैं।

पुरातात्विक निष्कर्षों के आधार पर, पुरास्थल कुषाण और मध्यकाल से संबंधित हो सकती है।

लटेरा (27°14′07″ N; 82°41′17″ E)

लटेरा का स्थल जनपद मुख्यालय से 65 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। पहले बांसी होते हुए इटवा तक 53 किलोमीटर और इटवा-डुमारीगंज मार्ग पर 10 किलोमीटर से सिसवा तक पहुंचा जा सकता है। इसके बाद सिसवा *चौराहा* से 2 किलोमीटर पूर्व की ओर यह स्थित है। यह पुरास्थल आसपास की जमीन की सतह से 6 मीटर की अनुमानित ऊंचाई के साथ 500X500 मीटर के क्षेत्र में फैली हुई है। टीला वर्तमान बसने वालों द्वारा अधिवासित है। टीले पर एक

स्थानीय देवता स्थान भी है (*समाई माई का स्थान*) । बाकी टीले पर खेती की जा रही है। राप्ती नदी 3.5 किमी की दूरी पर पुरास्थल के दक्षिण-पूर्व में बहती है।

पुरास्थल पर लाल मृदभाण्ड, कुछ पुरावशेष और ईंट के टुकड़े मिलते हैं। लाल मृदभाण्ड में घुमावदार रिम वाले कटोरे, थोड़े घुमावदार रिम वाले कटोरे, टोंटीदार पात्र, लघु कलश, हांडी, जार कलश और बेसिन हैं। पुरावशेषों में मिट्टी के खिलौने (प्लेट- II.5), पशु मूर्तियाँ (प्लेट- II.7), त्वचा रबड़ (प्लेट- II.8 और 9) और मानव मूर्ति का एक खंडित हाथ (प्लेट- II.10) हैं।

पुरातात्विक अवशेषों के आधार पर यह स्थल कुषाण और मध्यकाल का प्रतीत होता है।

महादेव कुर्मी (27º25′53″ N; 83º06′29″ E)

यह स्थल सिद्धार्थनगर के जनपद मुख्यालय के उत्तर में 20 किमी दूर है। यह स्थल नौगढ़-अलीगढ़वा रोड पर पहले 18.5 किमी और फिर सड़क के बाईं ओर 1.5 किमी के लिए पहुंच योग्य है। यह साइट आसपास की जमीन की सतह से 2 मीटर की अनुमानित ऊंचाई के साथ 200x200 मीटर के क्षेत्र में फैली हुई है। टीले पर वर्तमान में खेती की जा रही है। टीले के दक्षिण

में एक तालाब है। बजाहा ताल (झील) इस स्थल से 2.5 किमी दूर है।

पुरास्थल पर लाल मृदभाण्ड और ईंट के टुकड़े मिलते हैं। लाल मृदभाण्ड में मुख्य आकार छिछले कटोरे, बेसिन और कलश हैं।

पुरातात्विक निष्कर्षों के आधार पर यह पुरास्थल मध्यकाल की प्रतीत होती है।

मलंग बाबा का थान (भारत भारी) (27°08′51″ N; 82°41′42″ E)

यह सिद्धार्थनगर के जनपद मुख्यालय के दक्षिण-पश्चिम में 53 किमी की दूरी पर स्थित है। पहले 22 किमी तक सिद्धार्थनगर-बस्ती मार्ग पर बांसी तक, फिर बांसी-डुमरियागंज मार्ग पर बांसी से सोनहटी तक 25 किमी और सोनहटी से भारत भारी तक 05 किमी दक्षिण-पूर्व में पहुंचने योग्य है।

यह स्थल तकियावा के आसपास के क्षेत्र में भारत भारी के मुख्य टीले से 01 किमी पश्चिम में स्थित है। यहाँ मध्यकाल के उत्तरार्ध की एक ईंटों की संरचना है। इसकी उपलब्ध लंबाई

6.75 मीटर, चौड़ाई 0.80 मीटर और अनुमानित ऊंचाई 3.5 मीटर है।

मंझरिया कलां/घोस्यारी (27º02′07″ N; 82º54′40″ E)

मंझरिया कलां का पुरातात्विक टीला सिद्धार्थनगर के जनपद मुख्यालय के दक्षिण में 45 किमी की दूरी पर स्थित है। यह सिद्धार्थनगर-बस्ती रोड पर डिंडई तक पहले 37 किमी तक पहुंच योग्य है, इसके बाद डिंडई के पूर्व में 08 किमी से मंझरिया कलां तक पहुंच योग्य है। मंझरिया कलां/घोस्यारी *बाजार* टीले के पश्चिमी भाग पर स्थित है और शेष भाग का उपयोग कृषि के लिए किया जा रहा है। घोस्यारी-भूपतिजोत सड़क टीले से होकर गुजरती है। टीले के उत्तर-पूर्व में देवी दुर्गा का एक मंदिर है। बूधी नदी 3 किमी की दूरी पर पुरास्थल के पूर्व में बहती है।

टीला आसपास की जमीन की सतह से 02 मीटर की अनुमानित ऊंचाई के साथ 250x250 मीटर के क्षेत्र में विस्तृत है।

टीले की सतह से लाल मृदभाण्ड, ग्लेज़्ड मृदभाण्ड और ईंटों के टुकड़ों के अवशेष पाए जाते हैं। लाल मृदभाण्ड में मुख्य

आकार कटोरे, कलश, *हांडी* और संग्रह जार हैं। ग्लेज़्ड मृदभाण्ड के आकारहीन टुकड़े मिले हैं।

यहाँ से प्राप्त सामग्री के आधार पर मंझरिया कलां पुरास्थल पूर्व मध्यकाल से उत्तर मध्यकाल से संबंधित हो सकती है।

मीरपुर (मीरवापुर) (27º6′56″ N; 82º45′37″ E)

मीरपुर का पुरातात्विक स्थल सिद्धार्थनगर के जनपद मुख्यालय के दक्षिण-पश्चिम में 43 किमी की दूरी पर स्थित है। सिद्धार्थनगर-बस्ती मार्ग पर पहले 22 किमी बांसी, फिर बांसी-डुमरियागंज मार्ग पर खोरिया चौराहा तक 16 किमी तक पहुंचा जा सकता है। इसके बाद अजगरा/मोतीगंज रोड पर पुरास्थल के लिए 5 किमी जाना होगा। पुरास्थल आसपास की जमीन की सतह से 1 मीटर की अनुमानित ऊंचाई के साथ 100x100 मीटर के क्षेत्र में विस्तृत है। वर्तमान में इस स्थल पर खेती की जा रही है। पुरास्थल के दक्षिण में 400 मीटर की दूरी पर एक *नाला* है।

पुरास्थल पर लाल मृदभाण्ड और ईंटों के टुकड़े मिलते हैं। मुख्य आकार आंतरिक रूप से मोटे रिम वाले कटोरे, बेसिन, *हांडी*, कलश और जार हैं।

मृदभांडों के बनावट के आधार पर यह पुरास्थल मध्यकाल की प्रतीत होती है।

निहथा (27º06′N; 83º01′ E)

यह स्थल 34 किमी की दूरी पर सिद्धार्थनगर के जनपद मुख्यालय के दक्षिण में स्थित है। पहले सिद्धार्थनगर-बस्ती मार्ग पर बांसी तक 22 किमी, फिर बांसी-गोरखपुर मार्ग पर 10 किमी, उसके बाद मरवटिया तक सड़क के पूर्व में 02 किमी तक पहुंचा जा सकता है। फिर मारवटिया *बाजार* से 02 किमी दक्षिण-पूर्व में पुरास्थल है।

टीले का क्षेत्रफल 400x400 मीटर है जो आसपास की जमीन की सतह से अनुमानित 03 मीटर की ऊंचाई पर है। वर्तमान में टीले का उपयोग कृषि उद्देश्य के लिए किया जा रहा है। टीले के पश्चिम में एक नहर / *नाला* है।

यहाँ से लाल मृदभाण्ड और ईंटों के टुकड़े प्राप्त होते हैं। लाल मृदभाण्ड में मुख्य आकार कटोरे, कलश, ढक्कन, जार,

संग्रह जार, बेसिन और *हांडी* हैं। पशु मृणमूर्ति का एक टुकड़ा पुरास्थल से प्राप्त अन्य महत्वपूर्ण सामग्री है। (प्लेट-III.1)

इन पुरातात्विक सामग्रियों के आधार पर कहा जा सकता है कि यह स्थल कुषाण काल से उत्तर मध्यकाल के समय बसा हुआ था।

पलटा देवी (27º24′06″ N; 83º01′35″ E)

यह मंदिर स्थल सिद्धार्थनगर के जनपद मुख्यालय से 21 किमी पश्चिम में स्थित है। यह चिल्हिया तक पहले 16 किमी शोहरतगढ़ *बाजार* रोड पर, उसके बाद चिल्हिया के उत्तर में 05 किमी बर्डपुर *बाजार* रोड पर जाना पड़ता है। जमुआर नदी पुरास्थल के उत्तर-पश्चिम में बहती है। यहां देवी दुर्गा (देवी शताक्षी) का एक मंदिर है, जिसके बारे में यह भी माना जाता है कि यह एक शक्तिपीठ है। स्थानीय परंपरा ने मंदिर को *महाभारत* काल का बताया है। यहां मान्यता है कि पांडवों ने वनवास का अपना समय इसी क्षेत्र में व्यतीत किया था।

इस मंदिर की संरचना से पता चलता है कि यह निर्माण लगभग एक सौ पचास साल पुराना है।

पेड़ारी (27º21′38″ N; 82º36′50″ E)

यह स्थल सिद्धार्थनगर के जनपद मुख्यालय के पश्चिम में 60 किमी की दूरी पर स्थित है। सिद्धार्थनगर-बस्ती रोड पर बांसी होते हुए इटवा तक पहले 50 किमी तक पहुंचा जा सकता है, इसके बाद बिस्कोहर रोड पर इटवा के पश्चिम में 10 किमी है। पुरास्थल के दक्षिण में 4 किमी की दूरी पर एक *नाला* है।

टीले का क्षेत्रफल 250x250 मीटर है और आसपास की जमीन की सतह से अनुमानित ऊंचाई 04 मीटर है। टीले के उत्तरी भाग पर एक प्राथमिक विद्यालय और एक सरकारी गोदाम है। टीले के उत्तर-पश्चिमी भाग पर यहां एक *समाई माई* (स्थानीय देवता) का मंदिर भी है। टीले के शेष क्षेत्र का उपयोग कृषि उद्देश्य के लिए किया जा रहा है।

यहाँ कृष्ण लेपित मृदभाण्ड, धूसर मृदभाण्ड, लाल मृदभाण्ड और ईंटों के टुकड़े मिले हैं। कृष्ण लेपित मृदभाण्ड में आकारविहीन टुकड़े हैं, धूसर मृदभाण्ड में मुख्य आकार ऊर्ध्वाधर रिम वाले कटोरे हैं। लाल मृदभाण्ड में थोड़े घुमावदार रिम वाले गहरे कटोरे, कलश, बेसिन, हांडी और संग्रह जार हैं।

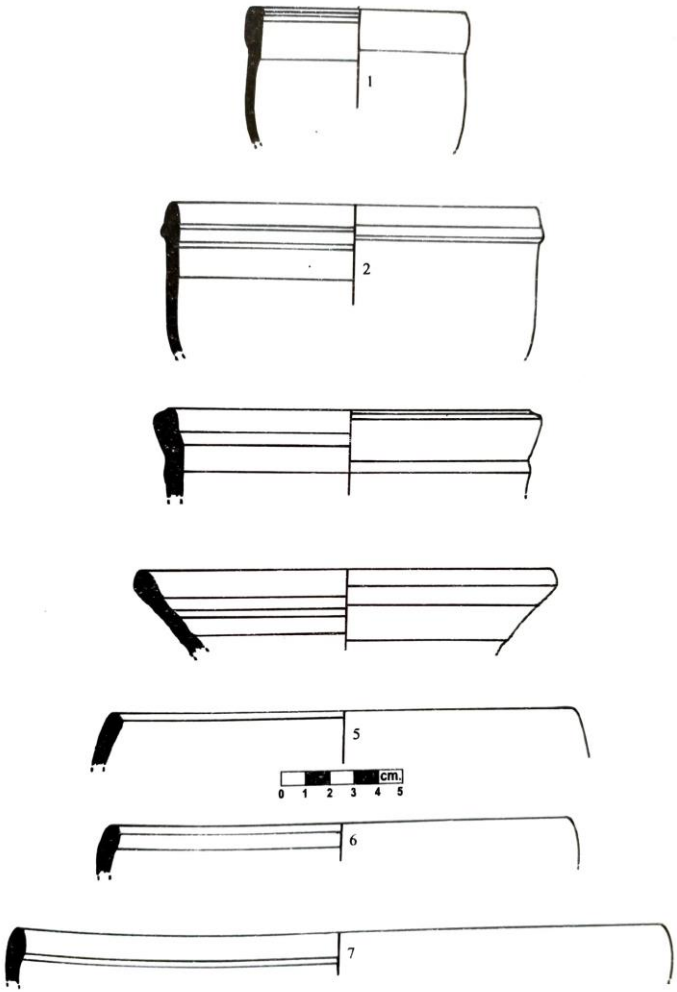

Figure-11

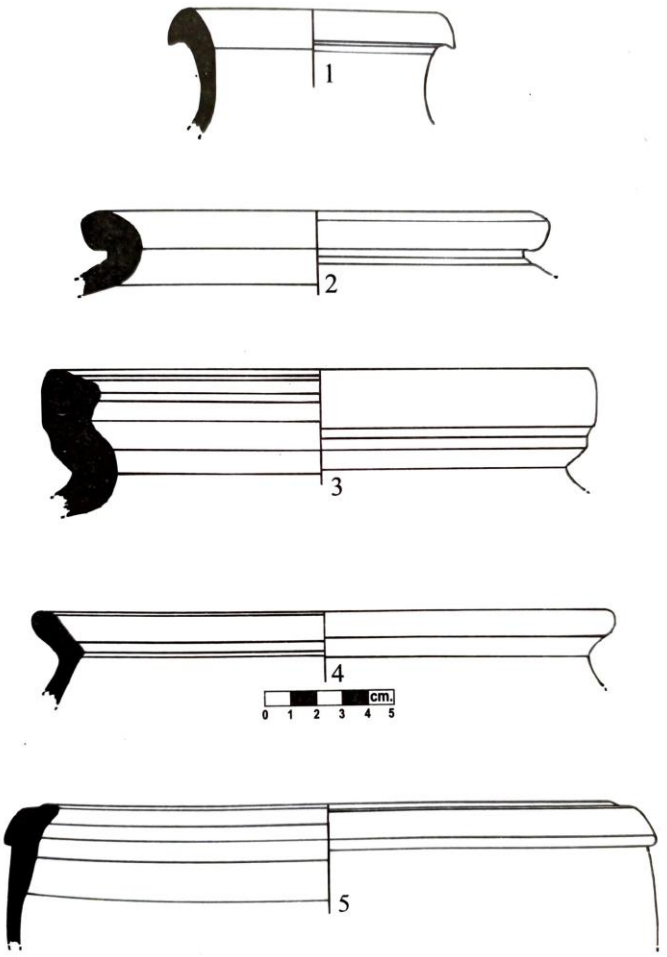

Figure-12

उपरोक्त पुरातात्विक अवशेषों के आधार पर, ऐसा लगता है कि यह स्थल एनबीपीडब्ल्यू के समकालीन और कुषाण काल के दौरान बसा हुआ था।

इस पुरास्थल से मृदभाण्ड के टुकड़ों के कुछ नमूने हैं जिनका विवरण निम्नानुसार दिया गया है:

चित्र-11

1. लाल रंग के लेपित मृदभाण्ड के एक कटोरे का टुकड़ा, बाहरी की तरफ मोटा रिम जिसमें रिम के अंदर हलके खांचे, गोलाकार आकार, अच्छी सतह, पतले, लाल रंग की बाहरी रेखाओं के साथ धूसर कोर।
2. लाल रंग के लेपित मृदभाण्ड के एक कटोरे का टुकड़ा, बाहरी रूप से मोटा रिम, जिसमें रिम के नीचे एक हल्का गहराई, रिम के नीचे दो हल्के खांचे, ऊर्ध्वाधर आकार, अच्छी सतह, पतले, लाल कोर।
3. लाल रंग के मृदभाण्ड के कलश का टुकड़ा, रिम के शीर्ष पर और रिम के नीचे एक हल्का गहराई के साथ थोड़ा घुमावदार रिम, दोनों तरफ लाल लेप के निशान, मध्यम सतह, मध्यम, लाल रेखाओं के साथ धूसर कोर।

4. लाल मृदभाण्ड के छिछले कटोरे का टुकड़ा, फैला हुआ रिम, मध्यम सतह, पतला, लाल कोर।
5. गहरे भूरे रंग के मृदभाण्ड के कटोरे का टुकड़ा, घुमावदार रिम, गोलाकार आकार, मध्यम सतह, पतला, धूसर रंग का कोर।
6. गहरे धूसर रंग के मृदभाण्ड के कटोरे का टुकड़ा, घुमावदार रिम, गोलाकार आकार, मध्यम सतह, पतला, काला कोर।
7. धूसर मृदभाण्ड के एक तश्तरी का टुकड़ा, आंतरिक रूप से मोटा रिम, उत्तल आकार, अच्छी सतह, पतला, धूसर कोर।

चित्र-12

1. लाल मृदभाण्ड के कलश का टुकड़ा, घुमावदार रिम, अवतल गर्दन, दोनों सतहों पर लाल लेप के निशान, मध्यम सतह, मध्यम, लाल कोर।
2. हल्के लाल मृदभाण्ड के जार का टुकड़ा, मिट्टी में छोटे ग्रिट्स हैं, घुमावदार और संकुचित गर्दन, मध्यम सतह, मध्यम, लाल कोर ।
3. हल्के लाल मृदभाण्ड के संग्रह जार का टुकड़ा, घुमावदार रिम और संकुचित गर्दन, मोटी सतह, मोटा, लाल रंग की रेखाओं के साथ काल कोर।

4. लाल रंग के मृदभाण्ड का हांडी का टुकड़ा, दोनों तरफ लाल लेप, मध्यम सतह, मध्यम, लाल कोर।
5. हलके लाल मृदभाण्ड के बेसिन का टुकड़ा, अंडाकार कॉलर थोड़ा घुमावदार रिम, गोलाकार आकार, मध्यम सतह, मध्यम, लाल रेखाओं के साथ काला कोर।

पिपरी (27^{0}19'49"N; 83^{0}06'19 "E)

यह स्थल सिद्धार्थनगर के जनपद मुख्यालय से 8 किमी दूर है। यह नौगढ़ से बर्डपुर रोड पर पहले 6 किमी के लिए पहुंच योग्य है, फिर सड़क के पूर्व में 2 किमी है। पुरास्थल के उत्तर में एक तालाब है।

यह एक ईंटों से निर्मित मंदिर स्थल है। यह भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, लखनऊ मण्डल द्वारा संरक्षित है।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, लखनऊ मण्डल के पीके मिश्रा की देखरेख में और विमल तिवारी की सहायता से इस पुरास्थल पर वैज्ञानिक ढंग से साफ सफाई का कार्य किया गया था।

इस ईंटों के मंदिर का मुंह उत्तर की ओर है और आकार में यह चौकोर है, जिसकी प्रत्येक भुजा 6.35 मीटर है। इस संरचना में 30x20x5 सेमी माप वाली ईंटों का उपयोग किया गया था। टेपरिंग में ईंटों के सोलह रद्दे प्लिंथ से ऊपर तक

रखे गए हैं। इसलिए प्लिंथ पर दीवार की मोटाई शीर्ष की तुलना में व्यापक हो गई। शीर्ष पर दीवार की अधिकतम मोटाई 2.75 मीटर है।

यह एक *पंच-रथ* शैली का मंदिर है जिसके प्रत्येक पार्श्व तीन प्रक्षेपण हैं। केंद्रीय प्रक्षेपण की चौड़ाई 1.57 मीटर है और अन्य दो की चौड़ाई 0.69 मीटर है। वहाँ एक *मुख मंडप* 2.10x1.21 मीटर का है। गर्भगृह 2.66x2.62 मीटर के साथ एक *कपिली* है। यहाँ की एक महत्वपूर्ण व्यवस्था *त्रिरथ पीठ* पर देव मूर्ति को स्थापित करने के लिए की गई थी। *पीठ* के पिछले छोर पर केंद्र में एक समलम्ब चतुर्भुज की स्पष्ट छाप अभी भी शेष है, जिस पर *विग्रह* स्थापित किया जा सकता था। *प्रणाली* (पानी के आउटलेट) के अवशेष पूर्व की तरफ निकास के रूप में पाए जाते हैं।

इस मंदिर की बाहरी दीवार पर प्लास्टर नहीं किया गया है जबकि अंदर की दीवार को महीन चूने से प्लास्टर किया गया है। गर्भगृह में फर्श और *मंडप* मिट्टी और ईंटों से बना है, जिसके ऊपर चूने के गारे की एक महीन परत है।

इसी तरह की एक अन्य संरचना के अवशेष उसी परिमाप की ईंटों के साथ मंदिर के पूर्वोत्तर कोने में हैं। संभवतः ये अवशेष *पंचायतन* शैली के मंदिर से संबंधित थे।

इस तरह के अन्य मंदिरों के बनावट के आधार पर यह आठवीं - नवीं शताब्दी ईस्वी से संबंधित प्रतीत होता है।

पिपरहवा (27º26)′52″ N; 83º07′42″ E)

यह स्थल सिद्धार्थनगर के जनपद मुख्यालय से 21 किमी दूर है। यह बर्डपुर से अलीगढ़वा रोड पर सिद्धार्थनगर के उत्तर तक पहुंचने योग्य है। 500 मीटर की दूरी पर पुरास्थल के पूर्व में मझौली झील और 3 किमी की दूरी पर पुरास्थल के पश्चिम में बजहा ताल (झील) हैं।

इस स्थल का उत्खनन भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के के एम श्रीवास्तव ने किया था। इस उत्खनन से *स्तूप* (प्लेट- VIII और IX), पूर्वी विहार (प्लेट- X), पूर्वी विहार का प्रवेश द्वार, उत्तरी विहार (प्लेट-XI), ईंटों का पक्का हॉल (प्लेट-XI), विशाल पोर्टिको, मंच, एक बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हॉल, एक मंच पर मंदिर, एक संलग्न दीवार के साथ कमरा, दक्षिणी विहार (प्लेट-XII) और पश्चिमी विहार (प्लेट- XII) के बारे में जानकारी प्राप्त हुई। यह पुरास्थल प्राक उत्तरी कृष्ण मार्जित मृदभाण्ड काल से कुषाण काल तक अधिवासित था। इस स्थल पर निर्माण कार्य उत्तरी कृष्ण

मार्जित मृदभाण्ड काल से कुषाण काल के दौरान पूरा किया गया था।

सालारगढ़ (27^{0}26'53"N; 83^{0}08'14 "E)

यह स्थल सिद्धार्थनगर के जनपद मुख्यालय से 22 किमी उत्तर में स्थित है। यह पहले 21.5 किमी के लिए अलीगढ़वा तक, फिर अलीगढ़वा के पूर्व में 500 मीटर तक पहुंच योग्य है। 200 मीटर की दूरी पर पुरास्थल के पूर्व में मझौली झील और 3 किमी की दूरी पर पुरास्थल के पश्चिम में बजहा ताल (झील) हैं।

इस स्थल का उत्खनन भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के के एम श्रीवास्तव ने किया था। उत्खनन के दौरान *स्तूप* और एक निकटवर्ती विहार का पता चला था (प्लेट-XIV)। विहार तक पहुंचने का रास्ता सीढ़ियों की मदद से उत्तरी तरफ से था। इस विहार में कुल ग्यारह कमरे थे। विहार का निर्माण तीन चरणों के दौरान किया गया था। इसका निर्माण द्वितीय शताब्दी ईसा पूर्व से प्रथम शताब्दी ईस्वी के मध्य किया गया था।

इस विहार से 30 मीटर की दूरी पर उत्तरी किनारे पर एक *स्तूप* के अवशेष के थे। यह पिपरहवा के *स्तूप* के समान था। यह *स्तूप* अपने प्रारंभिक चरणों में योजना में गोलाकार था।

कुषाण काल में इसका आकार वर्गाकार कर दिया गया था। इस *स्तूप* के अवशेष विध्वंसात्मक स्थिति में थे।

सेखुई (27º05′43″ N; 82º55′32″ E)

पुरास्थल सेखुई सिद्धार्थनगर के जनपद मुख्यालय से 32 किमी दक्षिण में स्थित है। सिद्धार्थनगर-बस्ती मार्ग पर बांसी तक पहले 22 किमी के लिए यह पहुंच योग्य है। इसके बाद बांसी से जीवां होते हुए सेखुई तक 10 किमी दक्षिण-पूर्व में।

यह स्थल सेखुई गांव के पश्चिम में स्थित है। टीले पर एक हैंडपंप और पेड़ हैं। टीले के पश्चिम में एक तालाब भी है। एक *नाला* 2 किमी की दूरी पर पुरास्थल के पश्चिम में बहती है। पुरास्थल आसपास की जमीन की सतह से 01 मीटर की अनुमानित ऊंचाई के साथ 50x30 मीटर के क्षेत्र में विस्तृत है। इस टीले से तिलौली-सेखुई सड़क भी गुजरती है।

यहाँ लाल मृदभाण्ड, और मिट्टी का त्वचा रबर (प्लेट-III.4) और एक चूड़ी का टुकड़ा मिला है। लाल मृदभाण्ड में मुख्य आकार घुमावदार रिम वाले कटोरे, बेसिन, कलश, जार हांडी, और संग्रह जारहैं। इन पुरातात्विक सामग्री के आधार पर कहा जा सकता है कि यह स्थल कुषाण काल अधिवासित था।

सेमरियांव (27º1′53″ N; 83º01′03″ E)

यह सिद्धार्थनगर के जनपद मुख्यालय से 12 किमी पश्चिम में स्थित है। सिद्धार्थनगर-शोहरतगढ़ मार्ग पर पहले 11 किमी के लिए कोपिया *चौराहा* तक पहुंचा जा सकता है, फिर सड़क से 01 किमी उत्तर में। कोपिया-कोडरा सड़क टीले के पश्चिम में गुजरती है। टीला आसपास की जमीन की सतह से 4 मीटर की अनुमानित ऊंचाई के साथ 300x300 मीटर के क्षेत्र में फैला हुआ है। टीले पर *ब्रह्मा बाबा* का मंदिर (स्थानीय देवता) के साथ, आम और अमरूद के बाग हैं, जबकि शेष टीले पर खेती होती है। 200 मीटर की दूरी पर पुरास्थल के उत्तर में एक तालाब है।

यहाँ लाल मृदभाण्ड और ईंटों के टुकड़े मिलते हैं। लाल मृदभाण्ड में मुख्य आकार आंतरिक रूप से मोटे रिम वाले कटोरे, जार, कलश और नाद हैं।

पुरातात्विक साक्ष्यों के आधार पर यह पुरास्थल मध्यकाल से संबंधित हो सकता है।

श्रीबेनवा (27°25′04″ N; 83°07′00″ E)

यह स्थल सिद्धार्थनगर के जनपद मुख्यालय से 14 किमी उत्तर में स्थित है। यह बर्डपुर-अलीगढ़वा रोड पर 14 किमी के लिए पहुंच योग्य है। यह सड़क टीले के पश्चिम से होकर गुजरती है। टीला वर्तमान बसने वालों द्वारा घनी आबादी वाला क्षेत्र है। टीला आसपास की जमीन की सतह से लगभग

2 मीटर की ऊंचाई के साथ 200x200 मीटर के क्षेत्र में फैला हुआ है। टीले के उत्तर-पश्चिम में 4 किमी की दूरी पर बजहा ताल (झील) है।

यहाँ से केवल लाल मृदभाण्ड मिले हैं। मृदभाण्ड में मुख्य आकार कटोरे, जार, कलश और हांडी हैं।

मृदभांडों के आधार पर यह पुरास्थल मध्यकाल का प्रतीत होता है।

तरहर (27°15′02″ N; 82°32′37″ E)

यह स्थल सिद्धार्थनगर के जनपद मुख्यालय से 71 किमी दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। पहले बांसी होते हुए डुमरियागंज तक, फिर इटवा रोड पर सहियापुर तक 03 किमी, उसके बाद भरिया *तिराहा* तक 13 किमी तक पहुंचा जा सकता है और आगे भरिया *तिराहा* से 02 किमी दक्षिण में पुरास्थल पर पहुँचनेजा सकता है। टीले पर प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, विद्युत स्टेशन और एक जूनियर हाई स्कूल है। भरिया-भरवटिया सड़क टीले से होकर गुजरती है।

टीला आसपास की जमीन की सतह से 06 मीटर की अनुमानित ऊंचाई के साथ 1000x1000 मीटर के क्षेत्र में फैला हुआ है। टीले के ऊपर एक विशाल गड्ढा है, जिसे सड़क निर्माण के लिए खोदा गया था। राप्ती नदी इस टीले के पश्चिम में 2.5 किमी की दूरी पर बहती है।

पुरास्थल से लाल मृदभाण्ड और ईंटों के टुकड़े प्राप्त होते हैं। लाल मृदभाण्ड में मुख्य आकार घुमावदार रिम वाले कटोरे, कलश *हांडी* और संग्रह जार हैं।

पुरातात्विक सामग्री के आधार पर यह पुरास्थल कुषाण काल से संबंधित हो सकता है।

टीरी (27°23′40″ N; 83°05′10″ E)

यह स्थल सिद्धार्थनगर के जनपद मुख्यालय से 14 किमी दूर है। यह स्थल पहले 11 किमी बर्डपुर तक और फिर बर्डपुर-शोहरतगढ़ रोड पर 3 किमी के लिए पहुंच योग्य है। इसके बाद पुरास्थल सड़क के लगभग 200 मीटर दाईं ओर है। यह पुरास्थल आसपास की जमीन की सतह से 6 मीटर की अनुमानित ऊंचाई के साथ 600x600 मीटर के क्षेत्र में फैली हुई है। टीला वर्तमान बसने वालों द्वारा बसा हुआ है। टीले पर पब्लिक स्कूल और स्थानीय देवता के लिए (*समय माई का थान* कोटेशरी देवी) एक मंच है । पुरास्थल का परिधीय क्षेत्र खेती के अधीन है। पुरास्थल के उत्तर में 4 किमी की दूरी पर बजहा ताल (झील) है।

यहाँ कृष्ण लेपित मृदभाण्ड, धूसर मृदभाण्ड, लाल मृदभाण्ड और ईंटों के टुकड़े मिलते हैं। कृष्ण लेपित मृदभाण्ड में आकारहीन टुकड़े पाए जाते हैं। धूसर मृदभाण्ड में मुख्य आकार कटोरे और तश्तरियाँ हैं। लाल मृदभाण्ड में

घुमावदार रिम वाले कटोरे, आंतरिक रूप से मोटे रिम वाले कटोरे, छिछले कटोरे, कलश, बेसिन, चैनलयुक्त टोंटीदार बेसिन, लघु कलश, जार और संग्रह जार हैं।

इसके अलावा, पुरावशेषों में पशु मृणमूर्ति (प्लेट-III.2) और कुम्हार के ठप्पे का टुकड़ा (प्लेट- III.3) शामिल हैं।

पुरातात्विक सामग्री के आधार पर यह पुरास्थल कुषाण काल से संबंधित हो सकता है।

उसका (27º07′ N; 82º5′ E)

यह स्थल सिद्धार्थनगर के जनपद मुख्यालय के दक्षिण में 30.5 किमी की दूरी पर स्थित है। यह सिद्धार्थनगर-बस्ती मार्ग पर बांसी तक पहले 22 किमी, उसके बाद बांसी-गोरखपुर मार्ग पर 08 किमी और फिर सड़क के दाईं /पश्चिम में 0.5 किमी तक पहुंच योग्य है।

टीले का क्षेत्रफल 300x200 मीटर है और आसपास की जमीन की सतह से टीले की अनुमानित 2.5 मीटर की ऊंचाई है। पुरास्थल के पश्चिम में एक *नाला* है।

इस पुरास्थल पर लाल मृदभाण्ड, टेराकोटा डिस्क जिसके दोनों सतहों पर अलंकरण हैं (प्लेट-III.5) और ईंटों के टुकड़े पाए जाते हैं। लाल मृदभाण्ड में मुख्य आकार घुमावदार रिम

वाले कटोरे हैं, चाकू धारी रिम वाले कटोरे, कलश, जार और *हांडी* हैं।

पुरातात्विक सामग्री के आधार पर यह पुरास्थल कुषाण काल एवं पूर्व मध्यकाल से उत्तर मध्यकाल तक अधिवासित था।

अध्याय-6
उपसंहार

जनपद सिद्धार्थनगर का वर्तमान क्षेत्र प्राचीन काल में कोसल क्षेत्र का एक हिस्सा था। राजा राम के पुत्र लव ने श्रावस्ती में अपने राज्य उत्तर कोशल की राजधानी की स्थापना की, जिसने छठी शताब्दी ईसा पूर्व, महाजनपद काल और बाद में एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया। छठी शताब्दी ईसा पूर्व कोसल एक महत्वपूर्ण महाजनपद था। लेकिन एक समय में जनपद सिद्धार्थनगर के इस क्षेत्र पर कपिलवस्तु के शाक्यों का नियंत्रण था।

राप्ती बेसिन का जलोढ़ मैदान लगभग 113.4 सेमी से 126.4 सेमी की औसत वार्षिक वर्षा के साथ उप-आर्द्र हैं। क्षेत्र की मिट्टी खेती के लिए अनुकूल है। इस क्षेत्र में अतीत में घने वन वनस्पति और विभिन्न प्रकार के जीव-जन्तु शामिल थे और इन सबने प्राचीन कोसल के आर्थिक इतिहास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

बौद्ध पुरावशेषों और पुरातात्विक अवशेषों के संदर्भ में इस क्षेत्र में बहुत संभावनाएं हैं, लेकिन पुरानी बस्तियों का पता

लगाने के लिए पूरे क्षेत्र में अन्वेषण करने का पूर्व में कोई प्रयास नहीं किया गया था। आसपास के क्षेत्र में कुछ ज्ञात स्थल बहुत महत्वपूर्ण हैं, उदाहरण के लिए पूर्व में नरहन, और दक्षिण में सोहगौरा। लहुरादेवा, जिसे वर्तमान से 7000 से 5000 वर्ष पूर्व के होने का दावा किया जाता है, वह भी इस क्षेत्र के बहुत करीब है। अध्ययन का यह क्षेत्र हिमालय के फोरलैंड बेसिन में फैला हुआ है और उत्तर में शिवालिक पहाड़ियों से घिरा हुआ है, जहां से प्राइमेट्स और प्रागैतिहासिक कारखाने स्थलों के जीवाश्मों की सूचना मिली है। जिन स्थलों से प्राइमेट्स और प्रागैतिहासिक कलाकृतियों के जीवाश्मों की सूचना मिली है, वे नेपाल में बाबई नदी के किनारे डांग और देउखुरी जिले में स्थित हैं। इस अन्वेषण कार्य की मुख्य समस्या आद्य-ऐतिहासिक अवधि से प्राक उत्तर कृष्ण मार्जित मृदभाण्ड काल के दौरान सांस्कृतिक निरंतरता के रिक्तता का पता लगाना था।

उपर्युक्त समस्याओं का समाधान खोजने के लिए, फील्ड सीजन 2013-14 और 2014-15 के दौरान अन्वेषण कार्य आयोजित किया गया था। अन्वेषण के दौरान पुरातात्विक महत्व के कुल 45 स्थल प्राप्त किए गए थे।

इन 45 पुरातात्विक स्थलों में से 04 स्थल उत्तर कृष्ण मार्जित मृदभाण्ड काल से पूर्व के हैं। ये पुरास्थल कॉर्डेड वेयर (कॉर्ड निशान वाले लाल मृदभाण्ड) का प्रतिनिधित्व करती हैं, जो छठी सहस्राब्दी ईसा पूर्व से तीसरे सहस्राब्दी ईसा पूर्व के मध्य में रखी जा सकती हैं। लेकिन पाषाण उपकरणों की अनुपस्थिति में और किसी भी उत्खनन के बिना, इन स्थलों को नवपाषाण या ताम्रपाषाण काल के साथ सहसंबंधित करना उचित नहीं है। 07 स्थल ऐसे हैं जो उत्तरी कृष्ण मार्जित काल के, 21 कुषाण काल के, 05 गुप्त काल के और 28 पूर्व मध्यकाल से मध्यकाल के हैं। केवल धरातलीय संग्रहण के आधार पर गुप्त काल की पहचान करना बहुत कठिन है। शायद यह, इस कार्य में गुप्त काल से संबंधित पुरास्थलों की कम संख्या के लिए उत्तरदायी होगा।

इन 45 पुरास्थलों में से 20 नदी के किनारे स्थित हैं, 10 स्थल नदी के पास में स्थित हैं। *नाला* / झील के किनारे 08 पुरास्थल और तालाबों के पास 07 पुरास्थल हैं। पारिस्थितिक रूप से जिले के पश्चिमी, उत्तरी और दक्षिणी भाग मध्य और पूर्व भाग की तुलना में मानव बस्ती के लिए अत्यधिक अनुकूल हैं। जिले का मध्य और पूर्वी भाग बारिश के मौसम में बाढ़ से प्रभावित होता है। राप्ती, बूढ़ी राप्ती और कुन्हरा जैसी

कई नदियाँ हैं, जो बांसी और नौगढ़ के पूर्व में मिलती हैं। इन नदियों के अलावा, कई पहाड़ी धारें हैं, जो हिमालय से निकलती हैं और उपरोक्त नदियों में विलीन हो जाती हैं। इसलिए जिले का पूर्वी और मध्य क्षेत्र बारिश के मौसम में जलमग्न हो जाता है। क्षेत्र में वर्तमान मानव अधिवास से स्पष्ट रूप से दिखायी पड़ता है कि पारिस्थितिक रूप से कम अनुकूल क्षेत्र न केवल बाद में बसते हैं, बल्कि बहुत कम बसे हुए हैं या बहुत दूर दूर में बसे हैं, जिसके परिणामस्वरूप जनसंख्या घनत्व कम है।

इस क्षेत्र में प्रारंभिक अवधि के लिए, प्राक-उत्तर कृष्ण मार्जित मृदभांड काल से मध्यकाल तक बस्तियों की संख्या और आकार में लगातार वृद्धि हुई है। बस्तियों के स्थान को निर्धारित करने में पानी, मिट्टी, वर्षा और अन्य पारिस्थितिक विचार मुख्य कारक थे।

उत्तर प्रदेश के अयोध्या, अगियाबीर, चर्दा, झूसी, पीरवितनी शरीफ-त्रिलोकपुर, गोतिहवा (नेपाल) और बिहार के जुआफरडीह और वैशाली में उत्तर कृष्ण मार्जित मृदभांड काल के स्तरों से नई तिथियों ने पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार में प्रारंभिक ऐतिहासिक पुरातत्व की शुरुआत और विस्तार की

हमारी समझ में एक नया अध्याय जोड़ा है। तदनुसार, प्रहलादपुर, सिसवानिया, खैराडीह, दादूपुर, चर्दा, पिरवितनी शरीफ-त्रिलोकपुर और मथुरा की शुरुआती तिथियां जो स्पष्ट रूप से गनवरिया के समान हैं, को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है।

जनपद सिद्धार्थनगर में उत्खनन कार्य के निष्कर्षों से एक महत्वपूर्ण स्थिति को प्राप्त किया जा सकता है, जिसे अन्य पुरास्थलों पर आयोजित किया जाना चाहिए क्योंकि यह जनपद महात्मा बुद्ध का मूल स्थान था। इसलिए, यह बहुत संभव है कि पिपरहवा और गनवरिया के अलावा कुछ अन्य स्थल हो सकते हैं जो बुद्ध से जुड़े हों। इसकी पुष्टि तब की जा सकती है जब कुछ पुरास्थलों पर उत्खनन का कार्य किया जाए, जहां कॉर्डेड वेयर मिले हैं। इन उत्खननों से और अधिक बौद्ध स्थलों का पता चल सकता है जो भारत में बौद्ध धर्म के अध्ययन के संबंध में, ज्ञान के क्षेत्र में नई जानकारी जोड़ेंगे।

जिले में किए गए अन्वेषण और पिपरहवा और गनवरिया में उत्खनन के आधार पर, जिले की प्राचीनता द्वितीय सहस्राब्दी ईसा पूर्व से प्रथम सहस्राब्दी ईसा पूर्व तक जाती है। यदि उन पुरास्थलों पर उत्खनन का कार्य किया जाता है,

जहां कॉर्डेड वेयर होते हैं, तो जिले की प्राचीनता और भी पीछे जा सकती है।

ग्रंथ-सूची

मूल स्रोत

Anguttaranikaya: P T S, London, 1885-1900.

Bhagavata purana: Geeta Press, Gorakhpur, 1952.

Mahabharata: Chitrashala Press, Poona, 1929; Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona, 1927 onwards.

Mahabhashya: Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona.

Malavikagnimitra: Panduranga Parv, Bombay, 1918.

Raghuvamsa: Nirnaysagar Press, Bombay, 1932.

Valmiki *Ramayana*: Ed. by Raghu Vira. Lahore, 1938.

द्वितीयक स्रोत

www.siddharthnagar.nic.in

Cooke, W: *The Tribes and Castes of the North Western Provinces and Oudh*, Vol. II, (Calcutta, 1896).

Cunningham, A: *Archaeological Survey of India*, Vol. XXI, (Calcutta, 1885).

Cunningham, A: *Annual Reports*, Vol. XII, Archaeological Survey of India, 1879.

Cunningham, A: *The Ancient Geography of India*, Bhartiya Publishing House, Varanasi, 1975, (First Edition 1871).

Elliot, H M and Dowson, J: *History of India as told by its own Historians*, Vol. I, Allahabad, 1961.

Fleet, J F: Inscription of the Piprava Vase, *Journal of the Royal Asiatic Society of Great Britain and Ireland*, 1906.

Führer, A: *Kapilavastu, the Capital of the Sakyas, Antiquties of the Buddha's Birth-Place in the Nepalese Tarai*, Indological Book House, Varanasi, 1972.

Jaiswal, Kashi Prasad: *Andhkara Yugina Bharata*, Nagari Pracharini, Varanasi.

Lassen, C: *Indische Altertumskunde*, Vol. III, Leipzig, 1859.

Mani, B R and Praveen Kumar Mishra: Further Excavations (2012-13) at Piprahwa, Ganwaria and Tola Salargarh, District Siddharthnagar, Uttar Pradesh, *Puratattava*, Number 43, New Delhi, 2013.

Mitra, Debala: *Buddhist Monuments*, Calcutta, 1972.

Motichanda: *Sarthavaha – Prachina Bharata Ki Patha Paddhati*, Bihar Rastrabhasa Parishad, Patna.

Mukherji, P C: *Antiquities of Kapilavastu, Terai of Nepal*, 1899, Archaeological Survey of India, (reprinted, Varanasi 1969).

Nevill, H R: *Basti: A Gazetteer*, Allahabad, 1907.

Oldenberg, Harmann: *Buddha: His Life, His Doctrine, His Order*, translated by William Hoey, Edinburgh, 1882.

Pande, G C: *Studies in the Origins of Buddhism*, Ancient History Research Series I, Allahabad University, 1957.

Pathak, V N*: History of Kosala up-to the Rise of the Mauryas*, Varanasi, 1963.

Peppe, W C: Piprahwa, Stupa Containing Relics of Buddha, *Journal of the Royal Asiatic Society of Great Britain and Ireland*, 1898.

Raychaudhuri, H C: *Political History of Ancient India*, Calcutta, 1953.

Rhys Davids, T W: *Buddhist India*, London, 1903.

Singh, D S, A Awasthi and V Bhardwaj: *Control of Tectonics and Climate on Chhoti Gandak River Basin, East Ganga Plain, India*. *Himalayan Geology*, Vol. 30 (2) 2009, pp. 147-154.

Singh, D S: *Rivers of Ganga Plain*, Book/Bane. E-Journal, Earth Science, India, October 2009, pp. 1-10.

Singh, I B: *Geological Evolution of Ganga Plain – An Overview*. *Journal of Palaeontological Society of India*, 41, 1996, pp. 99-137.

Sircar, D C: *Select Inscriptions Bearing on Indian History and Civilization*, Vol 1, Calcutta, 1965.

Smith, V A: *Journal of the Royal Asiatic Society of Great Britain and Ireland*, 1898.

Srivastava, A L: *Delhi Sultanate*, Agra, 1953.

Srivastava, K M: *Excavations at Piprahwa and Ganwaria*, Archaeological Survey of India, Janpath, New Delhi, 1996.

Tewari, R and R K Srivastava: Explorations Along the Ami river and its nearby areas in District Siddharthnagar, Basti and Gorakhpur, *Pragdhara*-No. 4, Journal of U. P. State Archaeology Department, Lucknow, pp. 13-39, 1994.

Tripathi, R S: *History of Kanauj*, Motilala Banarsidas, Banaras, 1951.

Uttar Pradesh District Gazetteers of Basti, Government of Uttar Pradesh, Lucnkow, 1988.

Watters, T.: Kapilavastu in the Buddhist Book, *Journal of the Royal Asiatic Society of Great Britain and Ireland*, 1898.

शोध पत्रिकाएं

Indian Archaeology: A Review, Journal of Archaeological Survey of India, New Delhi.

Journal of the Royal Asiatic Society of Great Britain and Ireland.

Pragdhara: Journal of U P State Archaeology Department, Lucknow.

Puratattava: Journal of Indian Archaeological Society, New Delhi.

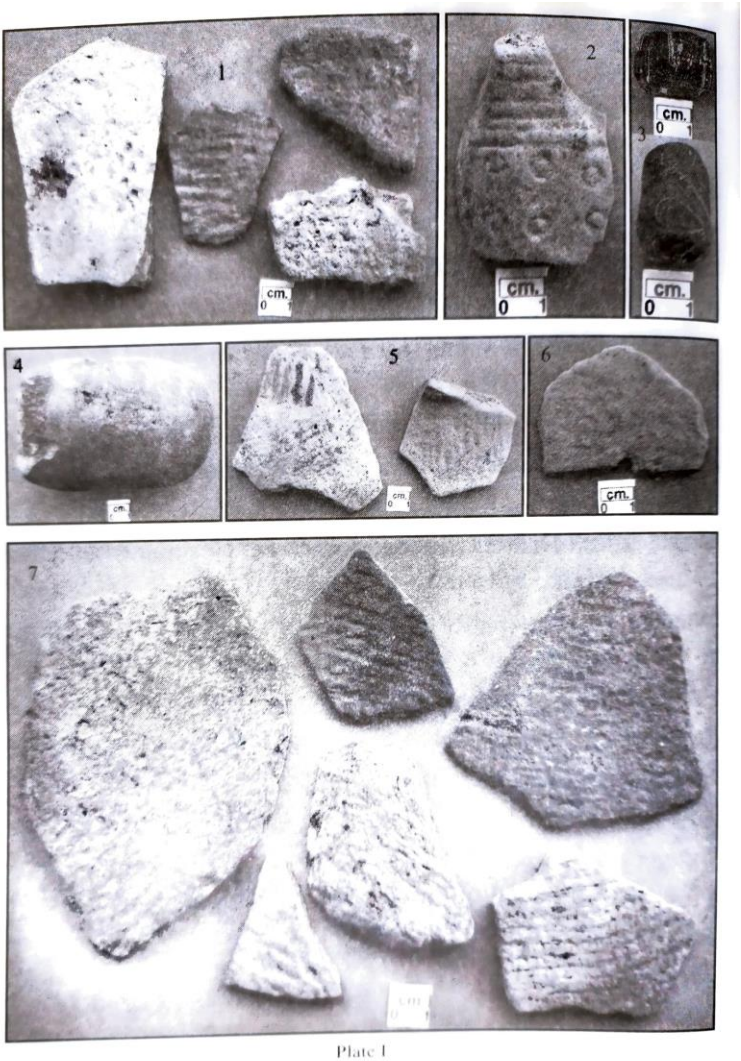

Plate I

1 & 2 Baundihar, 3 Chandra– Gaddi, 4 Bharthana, 5, 6 & 7 Daniawar

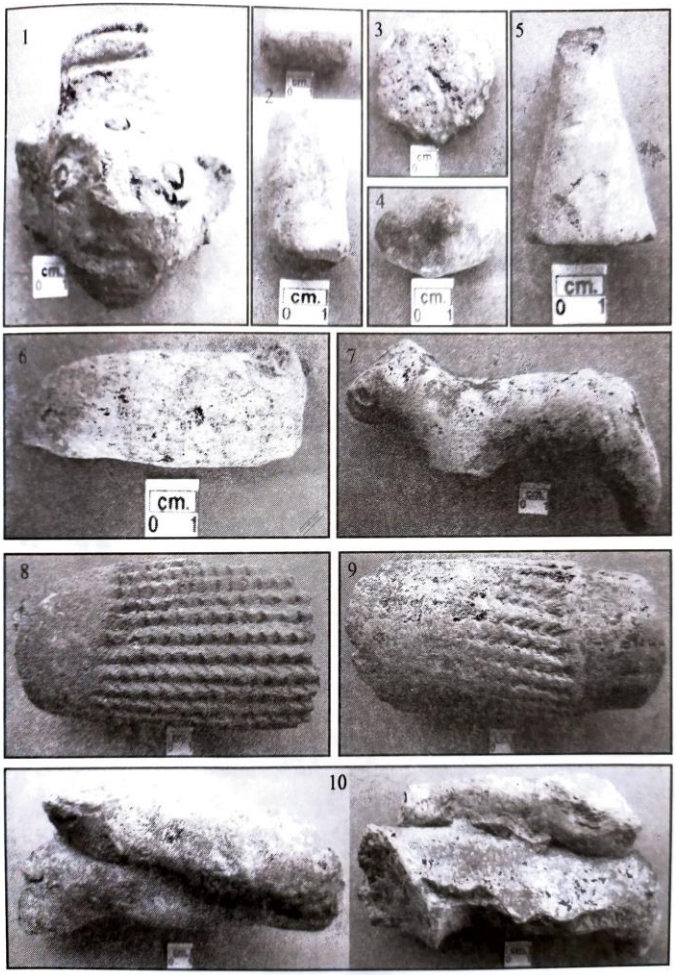

Plate II

1, 2 & 3 Jogiya, 4 & 6 Keshware, 5, 7– 10 Latera

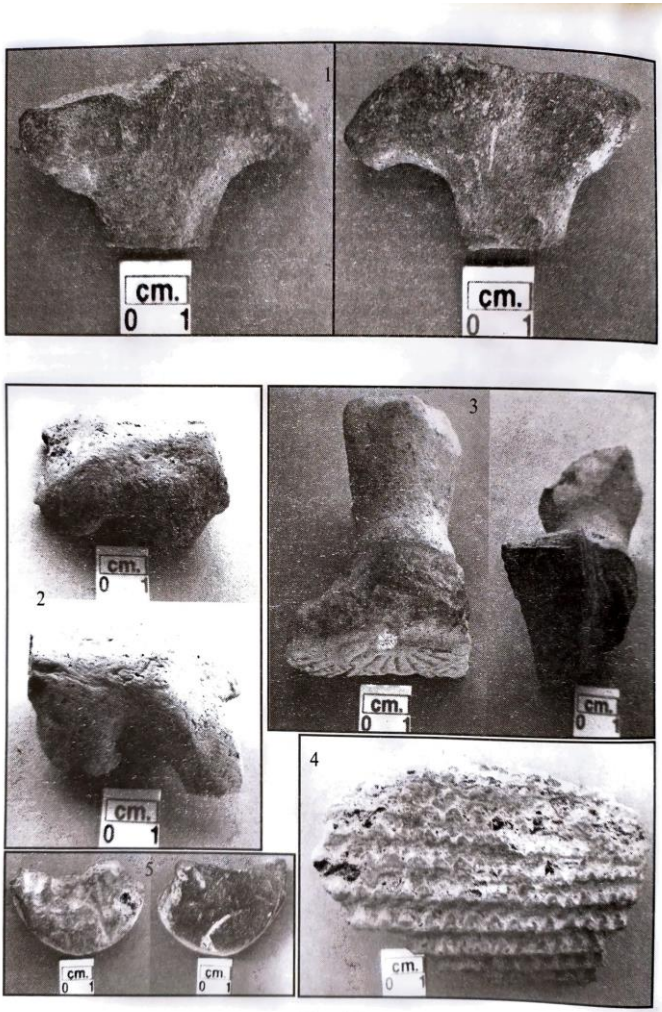

Plate III

1 Nihtha, 2 & 3 Teeri, 4 Sekhui, & 5 Uska

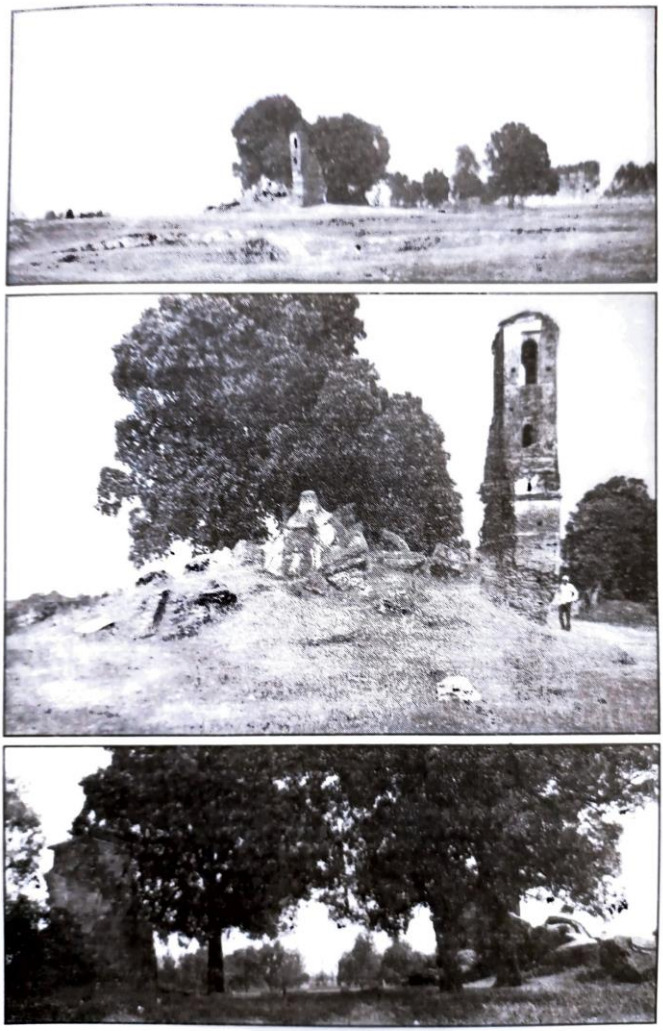

Plate IV

Bahadurpur Pracheen

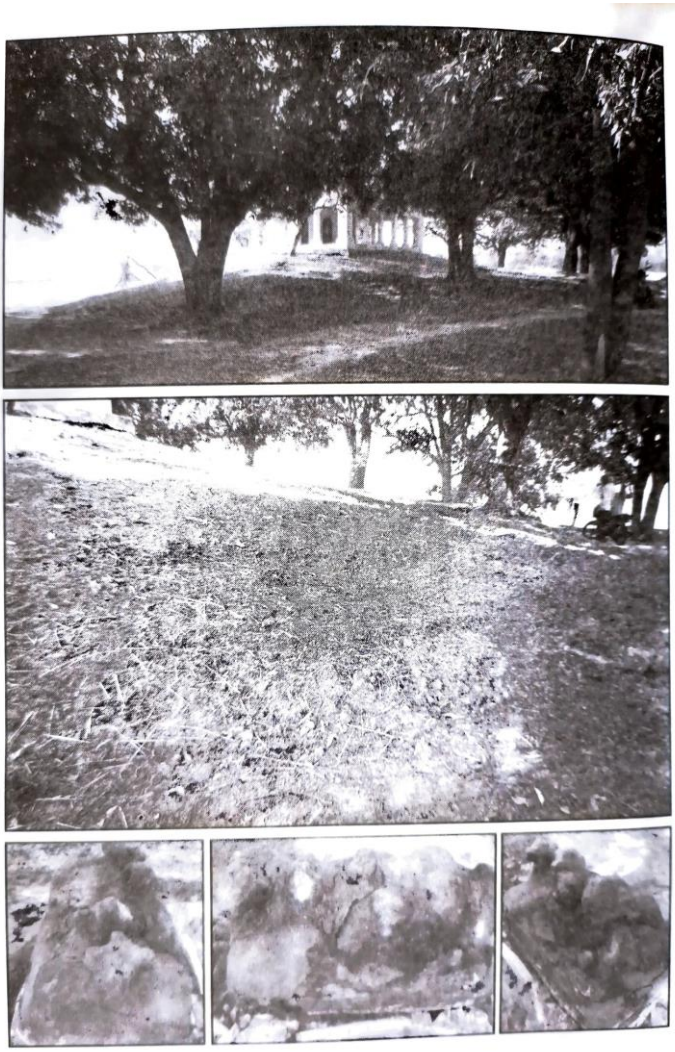

Plate V

Budhi Khas-2

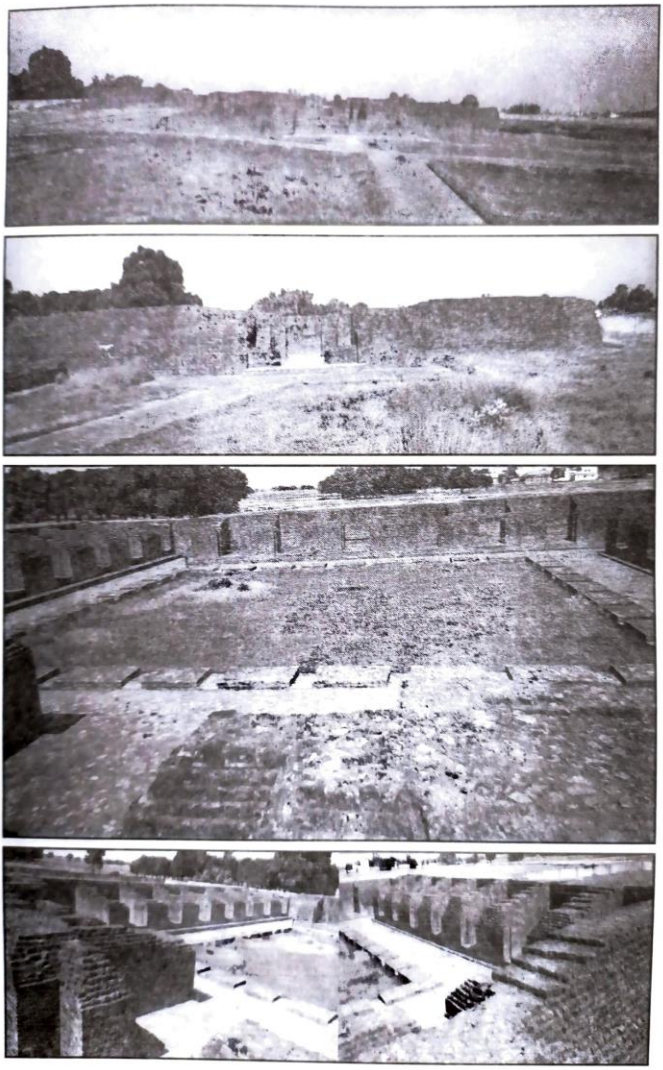

Plate VI: Ganawaria

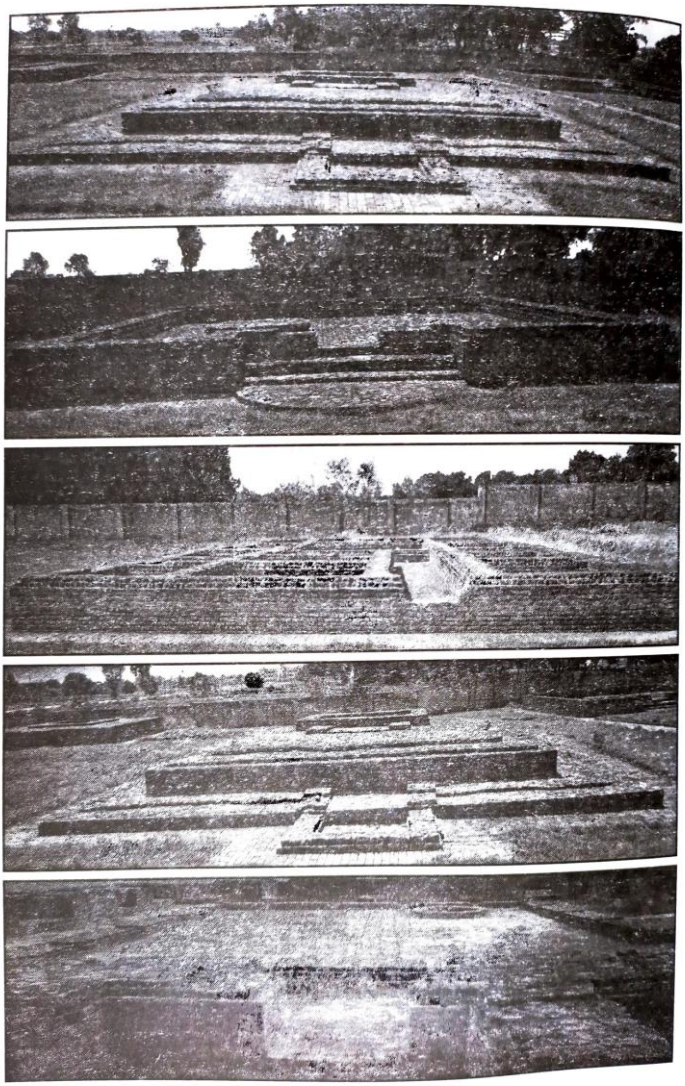

Plate VII: Ganawaria

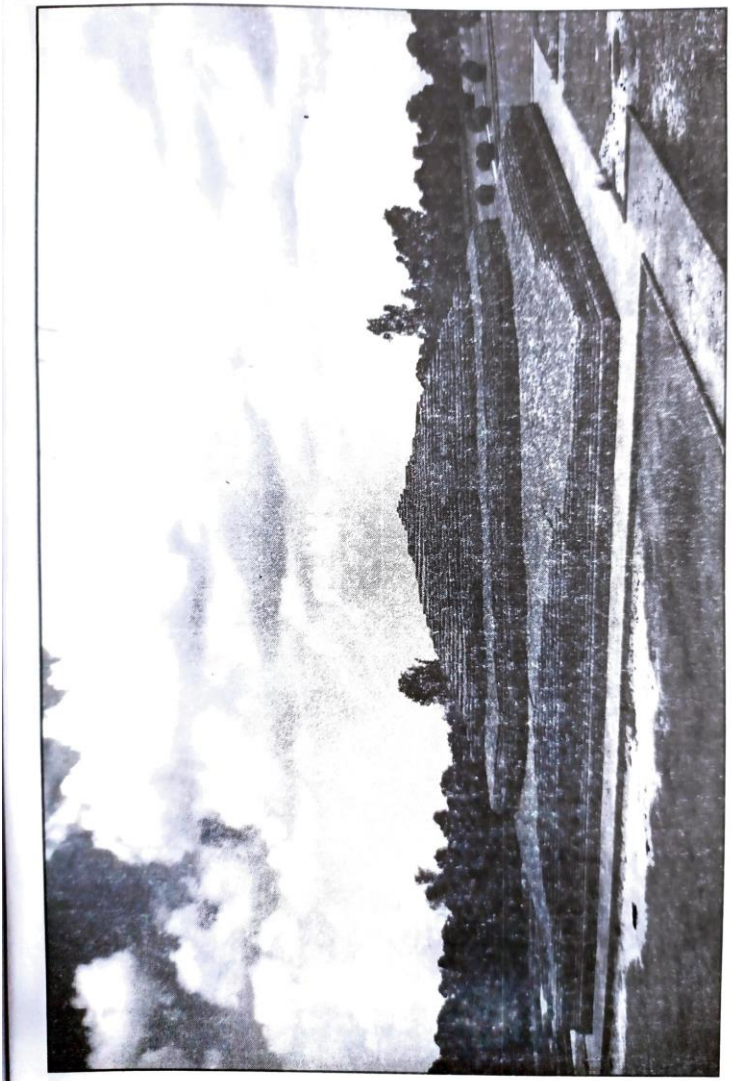

Plate VIII : Piprahwa Stupa

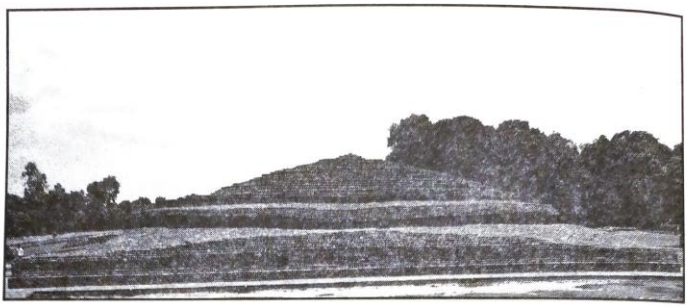

View from East

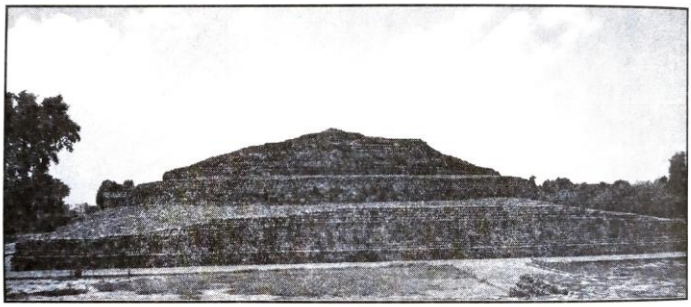

View from North

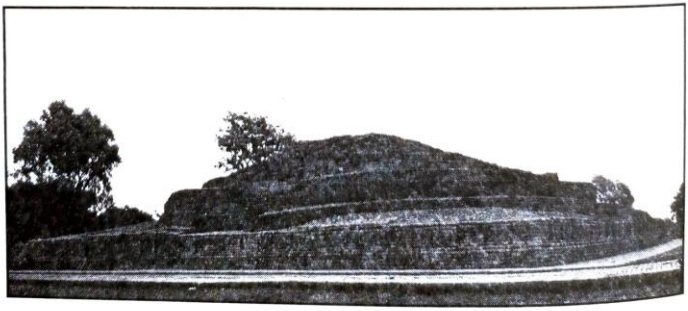

View from West

Plate IX: Piprahwa Stupa

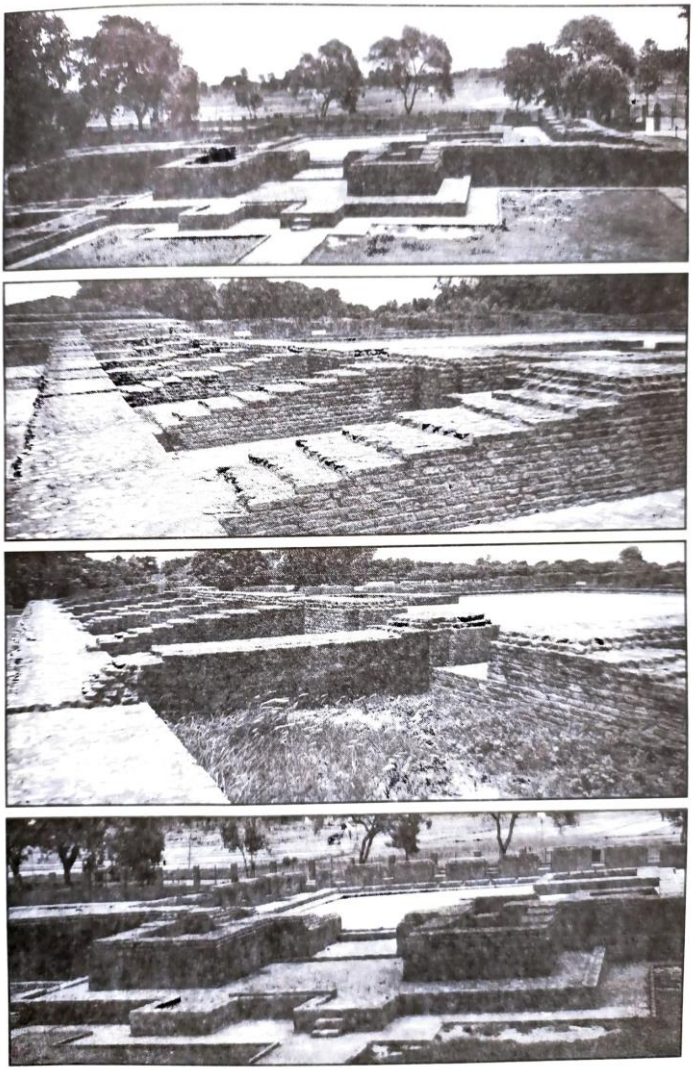

Plate X: Piprahwa Eastern Monastery

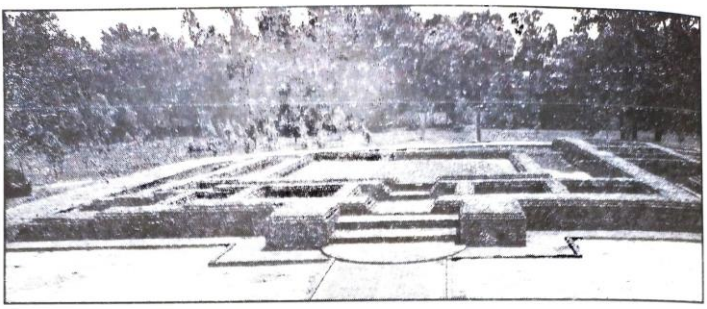

Brick Paved Hall

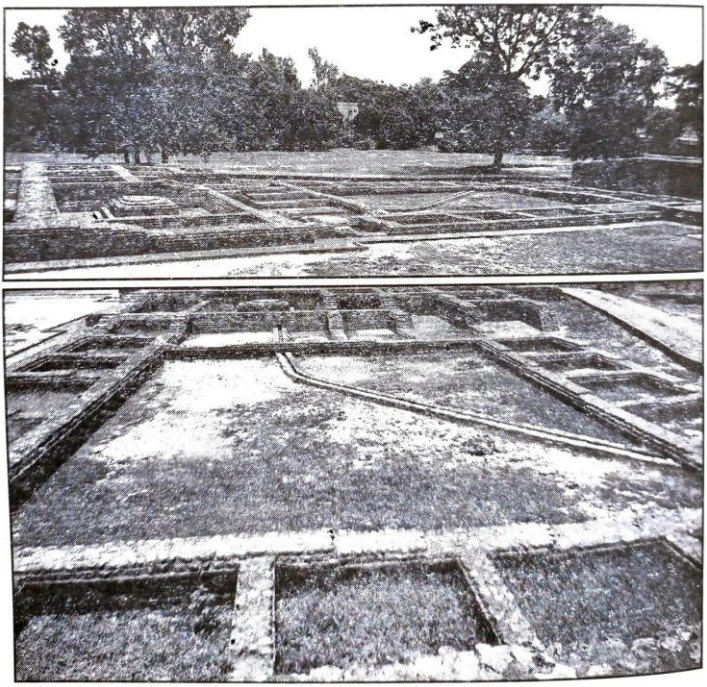

Northern monastery

Plate XI: Piprahwa

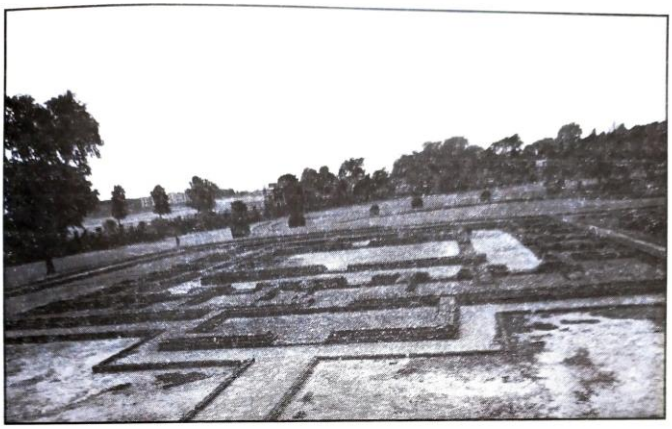

Southern Monastery

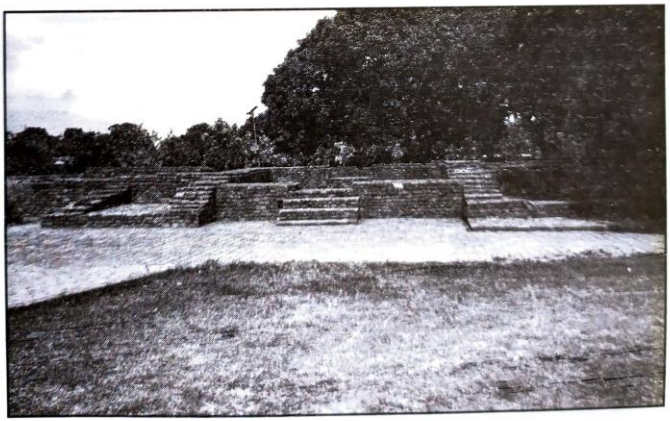

Western Monastery

Plate XII: Piprahwa

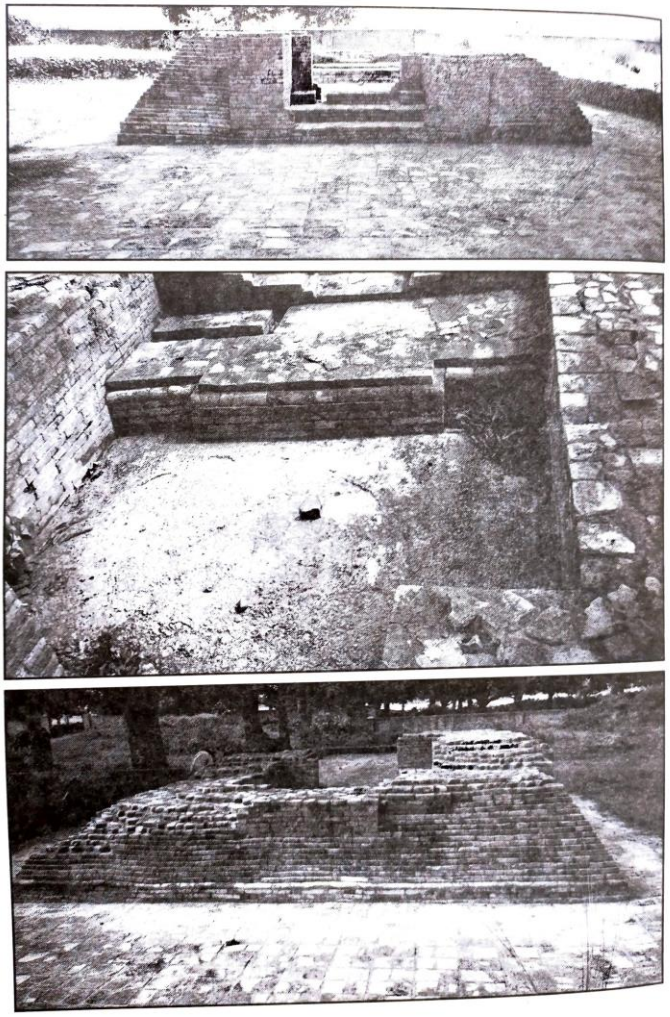

Plate XIII: Pipari

Plate XIV: Salargarh

No Objection Certificate

(i) I, *Dr Durgesh Kumar Srivastava* represent and warrant that I am the sole owner of all copyright, trademark, and other intellectual property and proprietary rights in relation to the book/material.

(ii) I, *Dr Durgesh Kumar Srivastava* undertake that the Book/Material is not subject to any contract or arrangement which would conflict with my permission herein.

(iii) This is to certify that the undersigned hereby gives permission to UGC and also authorizes UGC to get it translated or published and uploaded on e-kumbh portal "सिद्धार्थनगर जनपद का पुरातात्विक अन्वेषण". The book authored by the undersigned and translated using anuvadini tool has been properly vetted by me and it can be sent for publishing on e-kumbh portal.

(iv) UGC will have the full right to publish the book/text and is authorized to do any modifications, republication, or any other assistance related to the text if required.

(v) No legal action will be taken by the author in this regard.

18/7/2023

(Dr Durgesh Kumar Srivastava)
Author
Associate Professor
Department of AIH and Archaeology
University of Lucknow, Lucknow

Date: 18.07.2023
Place: Lucknow